

NOT FOR SALE

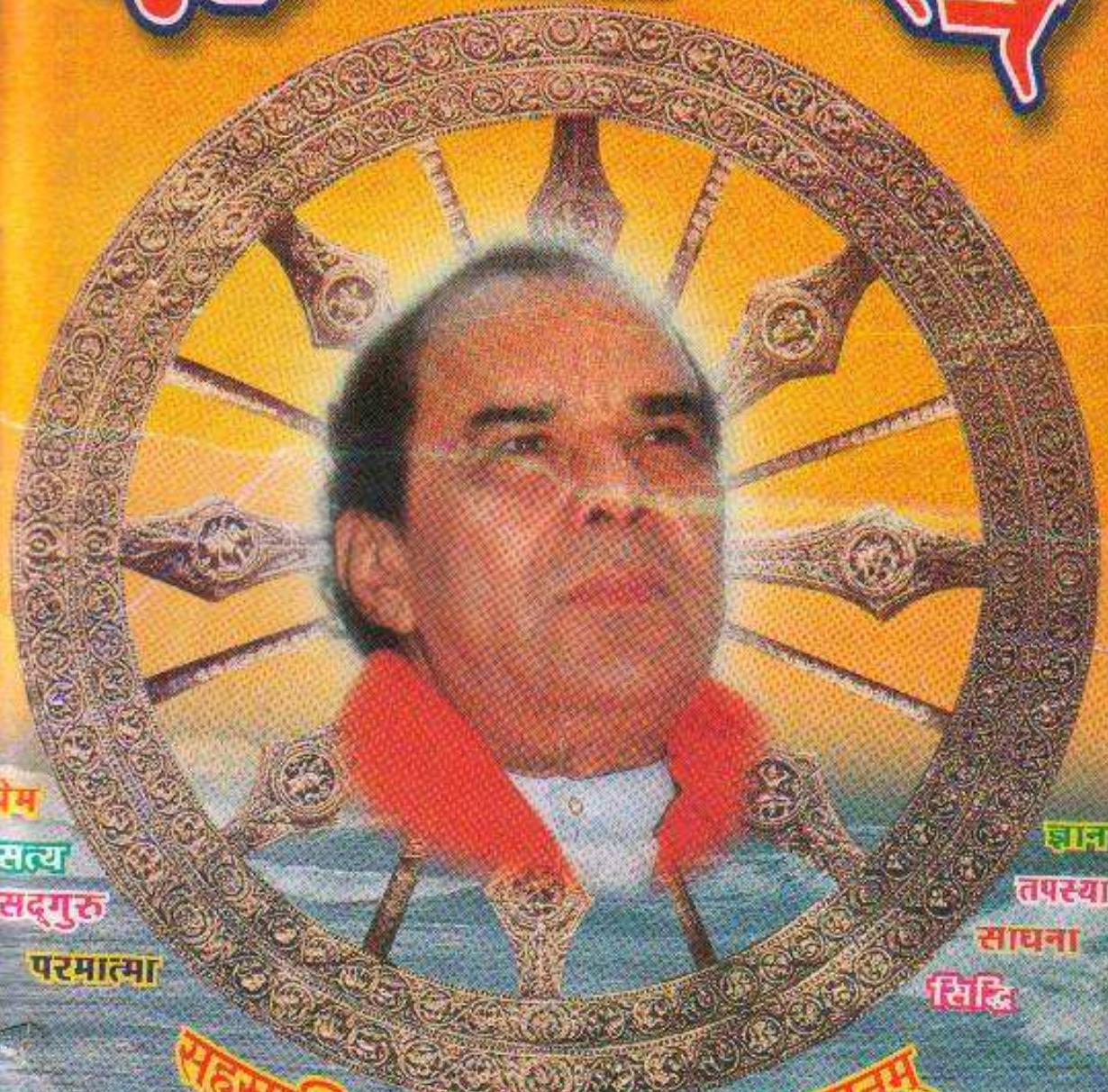
# सर्वभवानि युगे युगे

जनवरी 2000

मूल्य : 18/-

# सत्र-तंत्र-योग

विज्ञान



प्रेम  
सत्य  
सदगुरु  
परमात्मा

धारा  
तपस्या  
साधना  
सिद्धि

सहस्राब्दि परम्परा ग्रन्थ संस्करण





## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

# श्रीद्वय-ध्यकाश्च

॥ ॐ पद्मन तत्त्वाद्य नादाद्यपाद्य वृक्षक्रेयो गमः ॥



## साधना

गौरीश्वर शिव साधना	29
कुन्देश्वर शिव साधना	30
भूतेश्वर शिव साधना	32
पिण्डेश्वर शिव साधना	33



## सदगुणदेव

शिवत्व एव भवतां ...	5
गुरु वाणी - १ : मन्त्र	21
गुरु वाणी - २ : तत्र	27
मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान	31
गु. ग. : साधना शिविर	34
गुरु वाणी - ३ : साधक	44
गुरु वाणी - ४ : शिव्य	45
गुरु वाणी - ५ : जीवन	52
गुरु वाणी - ६ : निर्भयता	55
गुरु वाणी - ७ : अनुभूति	61
गुरु वाणी - ८ : प्रेम	71
गुरु वाणी - ९ : परमात्मा	77
प्रसंग: स्पर्शगामी निष्ठिल	79

वर्ष २० ३५  
जैनवरी २००० पृष्ठ ८४



## विशेष

जगाना हम से है	16
मांडिया का प्रभाव	23
नई सर्वी में शिष्य घर्ष	25
नई सर्वी का प्रारंभ करें? ५८	

## पूजन

महाशिवरात्रि साधना विवरण १६

## दीक्षा

श्री विद्या दीक्षा	56
ज्योतिष्ठ	

## स्तम्भ

आशुर्वेद सुधा	40
साधक साक्षी हैं	50
स्तोत्र शक्ति:	
दिव्य दत्तात्रेय स्तोत्र	59
मैं शमश हूँ	62
वराहभिंहीर	63
नक्षत्रों की वाणी	72
इस सास लिल्ली में	82
एक दृष्टि में	86



## प्रेरक संस्थापक

द्वृ. नारायणदत्त श्रीमाली  
(परमहंस स्वामी  
निष्ठिलोऽवरांद जी)

प्रधान सम्पादक  
श्री गृहविश्वास श्रीमाली

कार्यदाता सम्पादक  
एव सचिवाल  
श्री ऐसाशचन्द्र श्रीमाली

व्यवस्थापक  
श्री अरविन्द श्रीमाली

संपादन सलाहकार गंडल  
दृष्टि राम वैकाम गालांगी,  
श्री शुक्ल सेवक श्रीवास्तव,  
श्री रघु वातिल, श्री पर्वते विश्वा,  
श्री आर. शी. लिल, श्री गंगाधर  
प्रसादान, श्री वरसत गाविल, श्री  
सर्वीष विश्वा (कम्बर), श्री एम.  
आर. विश्व, श्री शुशीर देवोक्तर,  
श्री कृष्ण गोडा (बेगलर),  
दृष्टि एस. जे. भीतल (नेशल),  
श्री राजेश परमाण (लक्न ग्रांटिलोध)

प्रकाशक पर्याप्तिव  
श्री ऐसाशचन्द्र श्रीमाली  
द्वारा  
पौरुष आर्ट प्रेस्स  
१३/३, DLF, इंडियन  
परिषद, मोतोनगर, नई दिल्ली  
ने मुद्रित करा  
मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान  
हाईकोर्ट बोलीनी, जोधपुर से  
प्रकाशित।

## मूल्य (भारत में)

एक प्रति	18/-
दाविद	195/-

सिद्धाश्रम, ३८६ लकड़ाद इम्बेल, लीलनगर, दिल्ली - ११००३४, फोन ०११-२१८२२४८, टेली फ़ोन ०११-२१९६७०३  
मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान, डी. एस.ए. फॉर्म एवं टाइपर कार्यालय, जगद्गु-३०२७१ (१५३), फोन ०२९-४३२२०५, टेलीफ़ोन ०२९-४३२२०९  
WWW address - <http://www.maitreyaayanavividhgyan.in/dvayash/>, E-mail address - [iclav21@hotmail.com](mailto:iclav21@hotmail.com)

॥ त्वदीयं वस्तु निर्विला तु भ्यमेव समर्पये ॥

\* ३ \*

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विद्वान्' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क कुर्तर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को जल्द समझें। किसी नाम, रखाने या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, वहाँ भी उपर्युक्त नाम या तथा फिल जाय, तो उसे संबोधी समझें। पत्रिका के लेखक पुष्टकर्तु साथृ-सत्र होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अध्ययनकारी देना सम्भव नहीं होता। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, गुरुद्वारा सम्पादक जिम्मेदार होगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का परिवर्तनिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के आद-विवाद में जोधपुर न्यायालय भी मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं तो भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हज अपनी तरफ से प्राप्तिकारी और सही सामग्री अध्ययन यंत्र भेजते हैं, पर किर भी उड़के बाद में, असली या नकली के बारे में अध्ययन प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक ऊपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के गूल्य पर तर्क या वाद विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक बुल्क वर्षभान में १९५५/- है, पर यदि किसी विशेष प्रबंधिता से पत्रिका को त्रिपाठिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको आनंद हो देंगे हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अध्ययन दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण साझें, इसमें किसी भी प्रकार भी अधिकारी या वालोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सम्बन्धीत अध्ययनता, इतने-तात्पर्य की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र व्रतों या न करे, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योनी या संन्यासी लेखकों के विचार नाम होते हैं, उन पर माला या आवरण पत्रिका के वर्गचारियों की उत्तर देते हैं। पाठकों की माला वर उस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्ञान का तथों समावेश किया गया है, जिससे कि नक्कीन पाठक लात उठा सके। साधक या लेखक ऊपने आगामिक अनुभवों के आधार पर जो नंत्र, तत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आत्मोपासना करना व्यर्थ है। आवरण गृष्ण पर मालावर जो भी कोटी प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में पारी जिम्मेदारी कोटी लेजेन वाले कोटीप्राप्त अध्ययन आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का साहसर्य अब नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लात तुरन्त प्राप्त कर सके, यह तो धीरी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण व्रत और विश्वास के साथ ही धीरा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार जी कोई भी जापति या वालोचना स्वीकार नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी वहन नहीं करें।

## प्रार्थना

उघदमानु सहस्र ब्रह्म कमते जंशजमानो मुद्वा,  
पूर्णांनन्दमनन्त शीर्ष विलसत् सर्वार्थ भावोदितः।  
मार्त्तण्ड द्युति मादिवेव विशिलो नाशवणोऽहं स्वयं,  
शिष्यत्वं समुद्दीर्षितु च सततं सर्वापते लद्वुजे ॥

उद्दीयमान सूर्य के समान तेजोमय, सहस्र दल ब्रह्मकमल पर विराजमान, पूर्णनिन्द स्वरूप, अनन्त शीर्ष सम्पन्न, सर्व उदात्त भ्रावमय, द्वादश सूर्य के समान प्रदीप, मै सक्षात् नाशयण ही शिष्य धर्म के संरक्षण और परिवर्धन के लिये प्रत्येक युग में गुरु के रूप में जन्म लेता है। इस सहस्राब्दी के प्रारम्भ में पुनः पुनः अपने समस्त शिष्यों को पूर्णता प्राप्ति के लिये हृदय से आशीर्वाद देता हुआ गौरव अनुभव कर रहा है।

## इसमें इतना क्या सोचना!

विवेकानन्द ब्रह्म उद्भव विद्वान् वे और सभी चीजों की विचारणे चे ही तोलते ये... ये उह अपने तकों पर गुमान भी था... क्योंकि वे सीधा किसी भी गुरु से प्रश्न पूछने ये 'परमात्मा है?' और यहाँ पूछने वाला प्रकटम से उत्तर जाता था, या फिर विवेकानन्द के नक्की के आगे भराशाली हो जाता था...

और ऐसे ही एक बार बेपीनी की अवस्था में विवेकानन्द लवासी देवेन्द्रनाथ (रविन्द्रनाथ के दादा) की कुटी, जो कि नक्की के बांचों-बीच थी, की ओर चल पड़े। नक्की पूरे पेंग और तुकान में थी, पर विवेकानन्द उपरे कृष्ण पड़ी और तेसे हुए उम्र कुटी के पास पहुंचे, जहाँ देवेन्द्रनाथ ध्यान कर रहे थे।

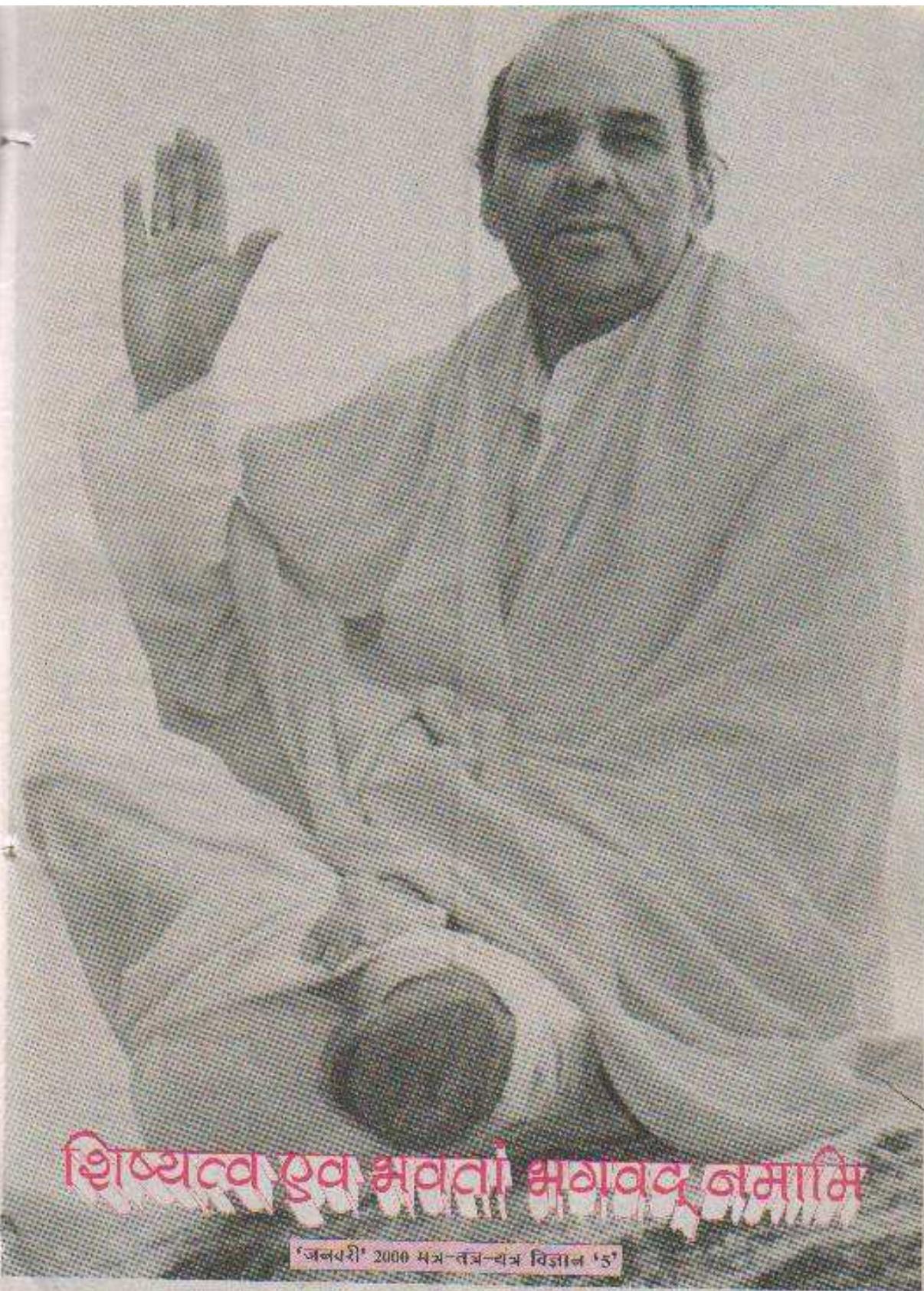
स्वासी देवेन्द्र ने अपना आंखें खोलीं और तो विवेकानन्द ने नक्की में से ही पूछा - 'परमात्मा है? क्या आपने उसे देखा है?'

देवेन्द्रनाथ तो एक लेकाह के लिए सकपाता गए, कि यह गुरुक कहीं पाश्चल तो नहीं हो गया है, इनकी बाढ़, इतना तूफान और यह सुबह तक स्कूल में नहीं सकता था...

और विवेकानन्द तुरन्त बाप्त जाने लगे। देवेन्द्र ने उन्हे बुलाना चाहा, 'अरे स्वामी! उम्र तो आओ, कि इस पर बात करें...'

पर विवेकानन्द ने कहा - 'नहीं अब बात नहीं हो सकती, क्योंकि यह एक लेकाह की सकाकाहट, यह विचारना, बात समाप्त हो गई... क्योंकि या तो परमात्मा है या नहीं है, इसमें इतना क्या सोचना, इननो क्या हिचकिचाहट...' और वे बाप्त बने गए।

यदि उत्तर मिलने में विचार करना पड़े, सोचना पड़ जाये, विलम्ब लगे, तो ल्याकि एक विचारक हो सकता है, विन्तक ही सकता है, वाशनिक हो सकता है, विद्वान् ही सकता है, परन्तु गुरु नहीं हो सकता। शिष्य के मन में प्रश्न उठने के पूर्व ही उत्तर स्पष्ट हो जाये, वही गुरु है। बाद में विवेकानन्द को ऐसे ही गुरु श्रीरामकृष्ण प्रब्लेस मिले



શિદ્ધાત્મક રૂપ ભવતાં અગાવદું નમામિ

‘જલદી’ 2000 મત્ર-તત્ત્વ-ચત્ર વિડોન ‘૫’

लीपत्र का वापन हो  
लिये रहने में ही है जीवन का लाभ तो शिष्यता  
में ही लाभ है। प्रथम इसके प्रति गम एवं न्योदयता  
भी जीवन की कितनी उच्च अवधि का नहीं शिखता है।  
जो जीवन की अत्यन्त अनुभवशील पूजा सहनुपर्यन्त है। नामग्रहण  
की अवसरों पर के रहा परन्तु उच्च उत्तरों पर्याप्त है।

स्व विविदा भवता वदेव,  
वैवाभवावात्मा भवते वदेव।  
ज्ञानार्थी भूतं प्रपरं प्रहितो विहिति,  
शिक्षास्त्र एव भवता भगवद् नमामि।

इस इनोल में बताया गया है कि जीवन  
का क्षेत्र तत्त्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में  
पदि जीवों जीव कोटि का कोई शब्द है तो वह शब्द  
शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरु से  
दाक्षा लिया हुआ व्यक्ति है। शिष्य का मतलब है कि जो  
प्रत्येक विषय जीवन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन  
न उत्तराता हो। वह शिष्य है। जो मां के गुणों को अपने जीवन  
में उत्तराता है। देख बरके उसके अनुरूप बनता है। उसने इनी समझ नहीं हीती, बलकं केवल नकल करता है। यदि बालक  
देखता है कि मेरे पिता शान को आकर सा से लड़ते-झगड़ते हैं, मालिया नहीं है, तो वह बाहे पात्र शान का हो, आठ-दस  
विन बाद उसके भी मुह से गालिया निकलने लग जायेगी। उसको मातृम नहीं कि मैं गाली दे रहा हूँ या नहीं दे रहा हूँ, नर  
वाप के गुणों का धीरे-धीरे उसके चिल पर ब्रह्माव पड़ता रहेगा। मा यहि लड़ते हैं तो उसके व्यालेव जो प्रगाढ़ भी बालक  
के विच पर पड़ता है। इसलिये बचपन से लगाकर जीवन के अंतिम क्षण तक जो भी क्षण व्यतीत होते हैं, वे स्व शिष्य रूप  
में ही व्यतीत होते हैं। और जब हाता शिष्य रूप तब जाता है तब राहारा नृति हम पर दायी हो जाती है। व्योकि वारों तरफ  
का बालाकरण ही राष्ट्रस तुरि का है।

आज ही वहीं स्तरपृष्ठ स-लगामर छाल तक जीवन रावभन्व ज्यादा रहा है। पापमय ज्यादा रहा है। वासनार्थ  
व्याद रहा है। असदगुणों के विकास में सहायक रूपादा रहा है। रोकड़ी हजारों काटी बखली में से एक-दो गुलाब के भूल  
खिलते हैं। हजारों फूल नहीं खिल पाते। इकराचारों लहरते हैं कि हजारों लोगों में से एक-दो व्यक्ति ही कुछ वह पहुँच पाते  
हैं। उच्च व्यक्तिव बन पाए हैं। हजारों के हजारों नहीं यहुच जाते, हजारों तो केवल गृहपाल पर चलने वाले होते हैं, बनियां होते  
हैं — व्यापारे होते हैं या जड़ाई-झाझा करने वाले होते हैं। या आपने आप में हिस्सा बाल होते हैं  
वे लक्ष्य रह भी नहीं सकते।

जीवन में कुछ उठना है। और यदि नहीं उठते हैं तो वह जीवन व्यर्थ है, क्योंकि उच्ची सीढ़ी पर चढ़ने बहुत कठिन  
है, जीवे किसलना बहुत आसान है। उस सीढ़ीयों से जीये जीवन में एक सोकेव लगता है। परन्तु उस सीढ़ी बढ़ने में आपको  
एक-दो सीढ़ी बढ़नी पड़ती, जारी होने वाले चारों ओर बढ़ने पड़ता है। जीव जीवन रहा हूँ या नहीं

इस एक ही ल्या में अन्दर लकड़ी छाँटी पुनर्जै द्वे तथा लद्दपुली का विकास  
हो रहा है ये लोगों को बोला कौसा व्यापारी भी नहीं है। उधर साथमें विशेषज्ञ कर्म्मा  
विवरण का अध्ययन हो, यहाँना कौसा व्यापारी विशेषज्ञ कर्म्मा का जीवन विवरण आप  
में विवरण है जिसका बनने के लिए इस ल्या में अन्दर लकड़ी छाँटी द्वे तथा लद्दपुली का विकास  
हो रहा है ये लोगों को बोला कौसा व्यापारी भी नहीं है।

अल्पतः तु जगते म तंत्रसेवनं श्रहु। अयं यायत्वं चरन्। अथवा गुरु द्वारा इति के जैर्ह त्रिपुरिष्ठाने तो यामान्त्रालक्षणे द्वितीये भवन्ति तात्त्वम् एव। एक चार तदृश तात्त्वानां अकल्पन के दरवार तो याग्रक था, अकल्पन न याक्षा कि तृतीय इति से अतिरिक्त दरगोलक्षणे द्वे तो युक्तारे गुरु के क्षेत्र होंगे?

उसने कहा - यैसे ही है जैसा मेरा शरीर है, जोसी मेरी आकृति है, यैसे ही है। मगर मेरे में और उनमें अंतर यह है कि उनके इब्द उनकी ध्वनि मुझसे करेंगे नुगा कही है, ध्वनिकि उनमें सदृश्यों का विकास है, मैं एक नीकर हूँ मैं आपकी दी हुई रोटेया खाता हूँ इसलिये आपके पास हूँ परन्तु वे लो उन गुणों के अवरण पूजे जाते हैं, वे श्रेष्ठ हैं, कूप हैं, भगवान् उनसे अभी नहीं भिन नयें।

अब अकबर तो राजा था और ऐसे व्यक्ति कोई होते ही हैं। उसने कहा मैं देखता हूँ कौस नहीं भिल पाते और दे गये बाहर शिथ धूम रहे थे। उसने कहा – मैं हरिदास से भिलना चाहता हूँ मैं अकबर आया हूँ।

शिष्यों ने कहा — हाँगे कोई अकबर, हमारा अकबर सो कोई लेना — देना नहीं है, हम तो एक नाम जानते हैं — हरिदास। इच्छके अलावा न हमें नाम जानने की आवश्यकता है, न हम फिरी नाम को जानते हैं, आप अकबर होंगे तो होंगे, राजा होंगे तो होंगे, हम अपनी चक्रवीर थाते हैं हम दृश्यों के अधीन नहीं हैं, अपनी खेती करते हैं, उसकी रोटी खाते हैं और हम शिष्य हैं, एक नाम की अलावा हमारे होठों पर कोइ दृश्य नाम आ नहीं सकता।

अकबर ने तलागार निकाली और उस शिथ की तरहन काट दी। ज्योहि काटी उस उगड़ पर दूसरा शिथ आकर खड़ा हो गया। उससे कहा - 'आप मिल नहीं पायेंगे, मुरझी ने कहा' है मैं इस समय किसी से भी भिन्ना नहीं बाहता हूँ तो आप नहीं मिल पायेंगे। और इरिहास साझी है कि उसने पालीस शिथों की नदेन काट दी। ५४ शिथ गिरा तो दूसरा शिथ खड़ा हो गया, दूसरा गिरा तो तीसरा अकबर खड़ा हो गया। एक धरण भी वह यिन्हा नहीं की कि, ऐसा जीवन है मैं वह कर सकता हूँ। उनके म- में एक ही बात-धीरों के ने शिथ हूँ और मुझे के लिये तो जीवन चाहेहूँ आज नहीं करस्गा तो करता मुझे बीच कर ले जायेंगे, मैं सर जाऊँगा। कभी न कही तो मौर गुड़ ले ही जायेंगे, अज नहीं तो बीस साल बढ़, मैंडू से प्रशाङ्क कर खत्त कर देंगी। मैं एक अम्भे गुणवान व्यक्तित्व के लिये आगनी जान को बीछावर कर दूँ॥ इस ताप्स जन्म जे लंग लगाए स्वप्न जान अविदास में दो लाल लंगे॥

जो योगी हैं कर द्या हूँ, तो विषय जाना ले लूँगा, नगर में नाम फैलाहाल में तो अब रह ही क्योंकि आज तक जिन सीढ़ियों पर चढ़ा हूँ वे सदगुणों की सीढ़ियाँ हैं। गुरु विराटनाथ ने इसे जान दिया है, वह यह कि ऐसे श्रेष्ठ बनना है और अपने आपके भास्तीलसर्ग करने में ही श्रेष्ठता बनती है। जहाँ पर मैं छल प्राप्त होता है, जहाँ पर मैं वज्रजड़ होता है जहाँ पर मैं 'मु' के विरुद्ध विजय-वर्ण होता है, वहाँ पर शिख सुन नहीं सकता!

जगवर ने कहा — 'मैं मिलना चाहता हूँ जबरदस्ती मिलनुमा।' शिष्यों ने कहा — 'हम बीच में खड़े हैं, आप नहीं निल सकते, तब तक जब तक उनकी आज्ञा नहीं होगी और उनकी आज्ञा मिली नहीं है।' इन्हा सुनना था कि जगवर ने उसकी गद्दन काट दी।

और केवल एक यत्कि की आज्ञा। वह पालन करने के लिये इतने शिष्यों ने अपना सदैस्य नीचायर कर दिया। हारिदास ने कहा— ‘मैं तो राम जा चाकर हूँ मुझे जाई और यह कर्म करने की जरूरत। नहीं है इसनिये उनसे कह दीयिये कि मैं उनसे मिलन वाली हूँ क्या रखता नहीं हूँ। मैं मुग्रणन करता हूँ तो ईश्वर का एपगन करता हूँ आप। वह मुग्रणन करता हूँ।

और जकबर ने एक—एक करके केवल पांच मिनट से 40 शिल्ड

का बद्ध कर डाला। अकबर को बड़ा अधरज हुआ कि ये कैसे शिष्य हैं? ये तो गुणों की जान है, जीरों की एक पॉटली है, पूरी जीरी भरी हीरों की। एक—एक व्यक्ति अपने आप में हीरों से भरा व्यक्तिहै, केवल एक आजा के लिये अपनी जान को न्यौतावर कर दिया, मेरा बड़वंत्र, मेरा छल, मेरा प्रयंच, मेरा दृढ़ कुछ भी काम न आया, मैं कुछ कर गी नहीं सका। 'अकबर महान' में अपने आप में जूँह ही कहलाता हूँ भग्नान तो ये हैं क्योंकि इन सबगे अपनी महानता का परिचय दिया है, अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। उन शिष्यों ने समझ लिया कि यह जीवन तो एक बहुत घोटी सी खोज है, यह जीवन आज जाये या आज से बीस साल बाद जाये, उससे क्या फर्क पड़ता है। यदि हमने गुरु की रक्षा ही नहीं की, यदि हम उनके काम ही नहीं आ सके, यदि हम उनको प्रसान ही नहीं कर सके, यदि उनको ही बड़वंत्र का शिकार होते दिया तो फिर हमारे जीवन का कोई अर्थ नहीं है।

प्रकाश अंदर लिप्त होकर जाना चाहे पर तेज़ कर पाने लिनी को भलिला अपने तखार में आ गया और नाकर फूट-रुठ कर योने लगा कि आज मैं सबसे अधम व्यक्तित्व बन गया हूँ। अगर यों कहानी तो जीर है कि जानसंग के मात्राय फूट-रुठ कर योने लगा कि आज मैं सबसे अधम व्यक्तित्व बन गया हूँ। अगर यों कहानी तो यह है कि एक आजा के पालन से यिस प्रकार झूँठ का साधारण प्रकार उन लोगों लगा जाएगा युना। वाराविल कहानी तो यह है कि एक आजा के पालन के लिये उन शिष्यों ने अपने जीवन का भी बहुत घोटा सा समझा। और आज भी उन शिष्यों के नाम आइने—अकबरी में स्पष्टता के साथ अंकित हैं। आज भी भारत के इतिहास में उन 40 लोगों के नाम अंकित हैं। हरिहर को यह जान ही नहीं हुआ कि ने चारी शिष्य कर चुके हैं, वे अपनी जोपड़ी में सारी है विलयल मान दें।

शंकरचार्य कहते हैं जीवन का व्यष्टितम शब्द 'शिष्य' है और शिष्य यह होता है जो अपनी जान को लूटेली पर लेकर छलता है। दो तरह के व्यक्ति होते हैं— एक व्यक्ति सद्गुणों का आगार होता है, भण्डार होता है, एक व्यक्ति बड़वंत्र का भण्डार होता है जो कि चौबीसों घण्टे यही सोचेगा कि मैं कैसे उस करूँ? कैसे इह बोलूँ? कैसे प्रयंच रखूँ कैसे इनको फुसलाऊँ? कैसे इनमें फूट लालूँ? कैसे उन दोनों को लड़ाऊँ? कैसे अपने आप का श्रेष्ठ रिद्द करूँ?

प्रत्यु शिष्यों के पितृ पर इन सदकों काहे नम्रव नहीं पड़ता, गे समझत है कि मैं क्या हूँ। जो भी अप्यों में शिष्य है और जिनके अन्दर सद्गुण हैं, वे असद्गुणों की तुरना भाँग लेते हैं। जो गुलाम के घूँटों के बीच स्टैंप है, जब धोड़ी लों भी हैं और जिनके अन्दर सद्गुण हैं, वे कैसा तोत हैं कि वहाँ पुरान्य है, कड़ा से नाली बढ़ रही है यह मालूम नहीं पर दुर्गम है तत्त्वज्ञ नाली की दुर्गम जाती है तो कैसा तोत है कि वहाँ पुरान्य है, कड़ा से नाली बढ़ रही है यह किनारा करके खड़ा से जाता है या किस दौर उन्हें पहुँचा स होता है कि उन दुर्गम से दूर हट जाना है। ऐसा शिष्य या तो किनारा करके खड़ा से जाता है या किस उत्त सुगम में स्वयं को ज्यात करने के लिये उत्तर हो जाता है। मारव वह नाली का कीड़ा नहीं बनता, और नाली का लीड़ा उत्त सुगम के ज्यात करने के लिये उत्तर हो जाता है। वह अपने गुरु की ज्यात करने के लिये, द्वारावर हजार जाल भी जीपिया रखने की जाता है। वह जीवन गुरु की ज्यात करने के लिये, वह तेयार रहता है— यही जीतने का अंदूलन है।

यदि हमने गुरु के लिये अपने आप को न्यौतावर ही नहीं किया, तो जीवन अर्थ है। जीवन में एक तरफ ऐसे व्यक्ति हैं जो गुरु हैं और जीवन में गुलाम के फूल तो घार-पाद ही खिलाएं और यदि घार-पाद फूल भी ढूट गये तो फिर काटे भी जीवन में रह जायेंगे। जाहाँ भी जाओगे, तुम्हें काटे ही खिलाएं। उन काटों के बीच जीवित नहीं रहना है, क्योंकि अन्दर उन कूलों को जीवित रखना है तो उन काटों को तोड़ना ही पड़ेगा, उन काटों के तोड़े तो फूल विकसित होंगे, आसपास की धास खोयेंगे तो फूल का विकास होगा।

और हमने जीवन में काटों का विकास किया। या फूल का विकास किया, काटों की खाता के लिये अपने धांगों को व्यापीत किया। या फूलों की रक्षा के लिये अपने धांगों को जीरी किया, या वित्तन का विकास है। हमने अपने जीवन की शिल्पनेत्रण उस गुरु को लिये कितना रुम्य उनके लिये दिया? किस प्रकार से उनके वचापार किस प्रकार से उनकी सेवा की यह जीवन का एक उत्त सर्वाय सोकान है यह जीवन का एक उत्त सर्वाय मनवाड़ है, आगे आपने नहीं एक जिता है, दौर ही लियाते प्रत्यक्षता कहलाती है, शिष्य-शन्देर से ही सब शब

बना है, जहाँ है उन गुलाम द्वारा जीती तरफ जाती जाएगा, किसी और कह सकते हैं और उस पर चढ़वारा है। बनवार रह है, एक दैर्य

शिष्यों के है, जिनको

ऐता याद लेवार का गांद दबा

और जब बह भी

तेकर गुलाम नहीं हो सका यह द

गे भी दूहे, ज

महा द्वा प्रति है, वा

ज्ञा है जहां सेवा है वहां शिष्यता है। जहां जीवना है और सेवा का नितनब्र है उग्र गुलाब के फूलों को पिछसित करने में सहयोग देना और सहयोग देने के लिये तृप्ति-आपी के बीच में नन कर के खड़े ही जीवा, ज्योकि उग्र वे ही गिर गये हो यारे नक्क नाली के कोइ बहने लग जायेगे। फिर हमारा जीवन अपने आप में व्यथे हो जायेगा, किस इमरे जीवन का कोई जरूर नहीं रह पायेगा।

और यादे कितने समय तक भी रहे, उतने समय तक हम अपनी छाती ढाक कर कह सकते हैं कि हमने कुछ क्षण उनके साथ बिताये हैं और तुफान की तरह उस उद्धकार और उस प्रकाश के बीच तनकर खड़े रहे। ऐसा व्यक्ति ही जीवन में उच्च शिखर पर पहुँचता है। और जो ऐसा व्यक्तित्व नहीं होता है वह एक सामान्य बहूल है, काटे हैं, वैसा बनकर रह जाता है। जीवित दोनों ही रहते हैं, नगर वह सामान्य जीवन नहीं होता है, एक वैर्य तो होता है, एक वित्तन तो होता है परन्तु अपने आप में पूर्ण सन्तोष नहीं होता है।

**मैंने भी बैकड़ी प्रकार की जीवन जिया है, नुस्खा जीवों के बीच में भी रहा हूँ सन्यासी**  
शिष्यों के बीच भी रहा हूँ। सन्यासियों में भी कई हल्के स्तर के भी होंगे, कुछ बहुत ज़ख्मी लार के भी हैं, जिनके नाम आज भी मेरे चित्त पर बहुत गहरी रखाही रहे लिखे हैं और आज भी मैं उनके स्मरण में हूँ।

भैरवानन्द जी ऐसा ही शिष्य था, जो 24 वर्ष साथ रहता था, सात साल में राश रहा, सात साल में उब्र भी ऐसा याद नहीं रखता कि पीछे पलट कर देखा और यह नुझे नहीं दिखाई दे। बिलकुल तर्पर, बीकरा हर दृष्टि और अंख के इशारे को रामङ्गान यालों कि नुस्खेव इस समय क्या याहते हैं? मानी पीना याहते हैं, यित्राम करना चाहते हैं, लेटना याहते हैं, पांव दबयना चाहते हैं, ज्या याहते हैं — वह अंख के इशारे के समझता था।

और जब तक मैं जागता था, तब तक बिलकुल जागता रहता था, जब मैं सोता था उसके बावजूद ही वह सोता था। और जब मैं सुबह उठता तो उससे पहले पानी की बाल्टी भरी हुई, लगोट रखी हुई साफ-सुधरी, आगन लीपा हुआ होता था। यह भी रनान किया हुआ, तैयार रहता था, ना भालूम सोता था मी या नहीं।

ऐसे एक नहीं कई शिष्य हैं, यदि कभी भी किला तो मैं उन शिष्यों के जीवन को जो उन्होंने मेरे साथ बिताये हैं, लेकर के एक पुस्तक लिखूँगा जो आने वाले जीवों के लिये एक प्रकाश होगा, रोशनी होगी, पश—प्रदर्शन का काम करेगी, गुलाब के फूलों को विकसित करने में सहयोग देगी। मगर वह कब लिखना होगा, ज्योकि लिखना उपने आप में घास काटना नहीं है, कि खुरपी ली और चास काट दी। लिखने के लिये तो पूर्ण मानसिक शान्ति शाहिये और पूर्ण नानसिक शान्ति तब ही सकती है जब काटीं और गुलाब के बीच में एक व्यक्ति तन करके खड़ा हो, एक नहीं चालीगा ज्यकि तनकर खड़े हों, कि यह अधेरा, यह तृप्ति मैं यहां नहीं आने दूँगा, जिससे गुलाब का फूल मुरझाकर गिर जाये।

कृष्ण के भी तीर ज्ञान तो उनके भी खून निकला ही निकला, रान को भी अगर रावण के तीर लग तो उनके शरीर में भी कम से कम 108 छेद हो ही गये थे। वह तो एक शरीर है, उस शरीर के अन्दर हँश्वरत्व है, उस शरीर के अन्दर गुरुत्व है, उस शरीर के अन्दर शिष्यत्व है।

अपने छपना जीवन किस तरीके से बदौल किया है और गुरु न अपना जीवन किस तरीके से बदौल किया यह नहत्वपूर्ण है। वया गुरु हुँहरे बराबर सहयोगी रहे? वया गुरु गुरु हो बार-बार प्रेम से बोलता रहे? क्या गुरु ने तुम्हें कभी गालियाँ दी? क्या गुरु ने तृप्ति करने की बात नहीं किया? तो तुम्हें भी काइ उपिकर यहां है कि उनके प्रति बहयंत्र करे, उनके ग्राही द्वृत बोले, या उनके प्रति धन करे, उनके प्रति तृप्ति को आन दें। गुरु के मानसिक शान्ति भी यही हमारा भी है, जिससे कि यह उस ज्ञान के बारे में। लेक शाकों जो कि उगाने आप में एक जीवत, जागृत, ईतन्य ज्ञान न गता हो। इसलिये शंकशंकार्य कहते हैं कि जन्म से लेकर मृत्यु तक याह आप व्यापारी है, घाह नीकरी पेशा है, लह जाम किसा भी क्षेत्र है, आप

की बनाये  
गुलाब नी

और प्रेम  
लोगों के  
एक व्या-  
न्धीचाल  
पर यह  
असाध्य  
है, इस

के पड़  
अन्दर  
देखा  
प्रिय  
गाने  
से है,  
मी र

झूठ  
नीचे  
में च

रह  
पढ़े

हो  
के  
ह  
क

र

त्रिष्णु के श्रण तक भी शिष्य हैं, शिष्य का अर्थ है कि आप कभी जीवन में रोख उड़े हैं? लाप कथा कर रहे हैं और आप लिखके लिए कर। कर रहे हैं? नथा अपने लिए! अपने लिए! तो अगर उक्त शिष्यों का दुष्कर्म प्रदान होता तो वह कुतुंभगट कर के एक कु। उनका छोटा सा भाग लोक-भग चाहता है। वह अपने लिए करता है। इमने दुशरी के लिए व्या विषय बह लखपूर है।

यह जीवन का एक सद्गुण है कि हमने समय कोसे बिताया? अगर गुरु सेवा में बिताया तो उच्छता है और गुरु की अपेक्षा शिष्य में भावने की शक्ति तेज होती है। हरिदास को तो मालूम ही नहीं था कि बाहर मेरे शिष्य कट रहे हैं, अगर उसे मालूम होता तो वह दौड़ कर खड़ा हो जाता बीच में कि मुझे पहले काट लाल। परन्तु उनको तो शिष्यों ने हवा ही नहीं लगने दी। और हरिदास की बजह से सी जो संगीत आज सुनाई देता है, वह शास्त्रीय संगीत जीवित रह राता। तानसेन की बजह से जीवित नहीं रहा, तानसेन तो रोटियों के लिये अकबर के दरबार में चाकरी करने वाला एक नौकर था। वह वह अद्यता संगीतज्ञ था, मगर संगीत बेच करके रोटिया बाई। हरिदास ने रोटी के लिये रागीत बेचा नहीं। यह दोनों न शेव था। इसलिये संगीतज्ञ था, मगर संगीत बेच करके रोटिया बाई। हरिदास ने रोटी के लिये रागीत बेचा नहीं। यह दोनों न शेव था। इसलिये तानसेन के लिये कोई कटा नहीं, तानसेन तो अफगानिस्तान के मुद में मारा गया, उसको भी षडयन करके अकबर ने मरदा तानसेन के लिये कोई कटा नहीं, तानसेन तो अफगानिस्तान में युद्ध ही रहा था, ही दिया। जब देखा कि अब यह तानसेन कोई काम का नहीं है तो षडयन कराया और अपने ही सैनिकों द्वारा कटवा दिया। अकबर का तो पूरा जीवन वरिज ही षडयन से भरा हुआ है, और जो भी सजा होते थे, वे या तो सद्गुणों का विकास करते थे या षडयन करते थे।

यह ही जीर्ण होती है ल्याक में। यही जंतर होता है इसलिये तानसेन को आज भी इतिहास क्षमा नहीं कर रहा है। और हरिदास को आज भी अपने शिर-भाष्यों पर बिलाये रखता है। और आप घेउँगे कि यो उक्त लोटि के रागीटकार हैं ये स्पष्ट हहसे संगीत आस्ता करते समय हरिदास को प्रणाम करते हैं, उनको जान नहीं करते हैं, एनका आशीर्वाद लेते हैं, यहींकि उनकी यांगी जान भी हवा में गूँज रही होगी। जान भी उनको गूँज मानकर ही पूँज लकड़े हैं और यह अपने अपने अपने उक्तकाटी में यांगों का दिक्षादा है। हमें इस बात का ध्यान नहीं चाहिये कि क्या हम शिष्य हैं और क्या हम तूफान का डैलने की शक्ति रखते हैं? और नहीं रखते हैं तो किर शिष्य कैसे हुए?

उपने आपका बलिदान नहीं कर दिया तो शिष्य कैसे हुए? आगे भी चाहे गुरु उमार पास नहीं होगा परन्तु यह सुमन्त्र तृतीये पास आया होगी। यह हमने कुछ धृण ऐसे योगिके समय बिताए हैं जिनमें जान था, बेतना थी, जो सही अर्थी न व्यक्तिय तृतीये पास आया होगी। और तूफान के दीच घोलन दिया हमने। और तूफान के दीच तो याँच से अच्छ गुलाब भी गुरदाकर के दूटकर गिर जाता है। आज्ञे से अच्छ गुलाब मी दाढ़ों का जिकार होकर गिर जाता है, अपने से अच्छ कृष्ण भी एक तीर लगते से नृपु का प्राप्त हो जाता है लेकिन - **ब्रेक टिडबिल्ट शस्क्रापि** . . . .

शरीर तो दूटकर गिरेगा ही, आज्ञे भरते ही नहीं गिरे, कृष्ण की आत्मा हमारे पास है, राम की आत्मा हमारे पास है, पर शरीर तो चला ही गया और शरीर चला गया तो कृष्ण की बाजी भी चली गई। यह गीता अपने आप में अद्भुती है, शीघ्रदभगदत ने लिखा है कि गीता के छ. सौ श्लोक हैं, हमें जो गीता प्राप्त हो रही है, उसमें 248 श्लोक हैं, जाकी के श्लोक गीता चले गये? जाकी के श्लोक कृष्ण के साथ ही चले गये, जाकी के उसमय में हमने उनको भार दिया, एक भील ने तीर मारकर कृष्ण को समाप्त कर दिया, जोटे से षडयनकारी ने कृष्ण को समाप्त कर दिया, जाकी के लगाके बीच में कोइ दृट्यान की तरह तन कर खड़ा होने वाल व्यक्ति नहीं था।

यह जीवन का उक्त रतीभ सूपन है कि अगर एक गुलाब का पुष्ट भी खिला हुआ है, फूँस जगल में तो उस गुलाब

को बनाये रखना मेरा धर्म है, क्योंकि गुलाब और दस गुलाबों को पैदा कर देगा, सौ गुलाबों को विकसित कर देगा। एक वह गुलाब भी ढूट गया तो फिर काटे ही काटे बिखरे होंगे।

शक्तिशार्थ ने इस शत्रुके मैं दूसरा शब्द लिया है प्रेम कि जिसके हृदय में प्रेम है वह गलती कर ही नहीं सकता। और प्रेम के बेल एक के साथ ही ही सकता है, दस लोगों के साथ नहीं ही सकता। दस के साथ सहानुभूति ही सकती है, दस लोगों के साथ अटैचमेंट ही सकता है, घालीस लोगों के साथ परिवर्य आपका ही सकता है, प्रेम नहीं ही सकता। प्रेम तो केवल एक व्यक्ति से होगा — या तो हृष्टवर से होगा या गुरु से होगा या किसी से भी होगा और जिसके प्रति प्रेम है उसके प्रति जान चौड़ावर होती है। भला अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर देता है, मीरा फिर राजमहल से नीचे उतर जाती है, सड़कों पर यह नहीं देखती फिर कि मैं युलवधू हूँ, राजघराने की रानी हूँ, वह तो धूधरु बांधकर सड़क पर खड़ी हो जाती है, उसके आराध्य, उसके पति, उसके प्रेमी कहा है, उसको ढूढ़ने के लिये सड़क पर उतर आती है, वह समझती है इस राजमहल में बड़यंत्र है, इसमें धोखा है, विश्वासघात है।

और विश्वासघात किया — राजा ने उसके लिये जहर का प्याला भर कर भेजा, सांप की पिटाई भेजी और मारने के बड़यंत्र किये। भीरा ने कहा कि इनसे मेरा बाल—बांका नहीं ही सकता यथोकि मेरे अन्दर एक ज्योति है प्रेम की और उसके अन्दर एक व्यतीर्त बैठा है, वह मुझे मरने नहीं देगा, मैं जहर का प्याला भी पी लूँगी, और उसने भी भी लिया। और जब उसने देखा बड़यंत्र बहुत अधिक हो गया तो वह अपने आप में उस प्रिय की रक्षा करने के लिये रुझकों पर उतर गई कि कहीं उस प्रिय को ही नुकसान नहीं पहुंचा दें। वह उतर गई कि तुम्हें बचाना मेरा धर्म है, मेरा कर्तव्य है। इसलिये नहीं कि वह नाथने, गाने के लिये सड़क पर उतरी थी। वह इसलिये निकली थी, कि ये बड़यंत्र कहीं वहां तक नहीं पहुंच जाये। मीरा प्रेम कृष्ण से है, ये बड़यंत्रकारी कृष्ण को भी समाज कर देंगे, मैं उसे कैसे बचाऊँ? उसके लिये याहे राजमहल भी छोड़ना पड़े, मैं राजमहल भी छोड़ दूँगी।

और वह नीचे उतर गई। आप सोचिये राजघराना, राजस्थान, सामंतीप्रधा, बड़यंत्रकारियों का एक गढ़ जहां छल, झूठ—कपट के अलावा कुछ था ही नहीं, उसके बीच ने पुरुष तो फिर भी रहे पर स्त्री। वह भी कुलवधू! वह धूधरु बांध कर नीचे उतर जाती है, इसलिये कि नुझे हर हालत में अपने प्रेमी की रक्षा करनी है, उस कृष्ण की रक्षा करनी है जो ने वित्त में बरसा हुआ है।

इसके अलावा न उसे पति से प्रेम था, न राज धराने से प्रेम था, न हीरों के हार से प्रेम था। और इसलिये मीरा जीवित रह सकी, इसलिये सूर जीवित रह सके, इसलिये जबीर जिन्दा रह सके, इसलिये नानक जिन्दा रह सके, वह घर से निकल पड़े केवल एक लक्ष्य के साथ कि मेरे अन्दर प्रेम हो।

आपका प्रेम केवल एक के साथ ही ही सकता है — या तो काटों के साथ ही सकता है या गुलाब के फूलों के साथ ही सकता है। दोनों से एक साथ नहीं ही सकता। यह आप पर निर्भर है कि आप काटों के साथ प्रेम करते हैं कि आप गुलाब के साथ प्रेम करते हैं। मगर शंकशिर्शी कहते हैं कि अपने जीवन को उत्थाता तक पहुंचाने के लिये आपको इसी भूमि से परिवर्तित होना पड़ेगा। या तो आप नीचे धरातल पर चले जायेंगे, या फिर कंचाई पर चले जायेंगे। यह फिर आपके हाथ में है या तो आप बड़यंत्रकारी बन जायेंगे या गुलाब के फूल बन जायेंगे या तो काटे बन जायेंगे।

आप क्या बनेंगे, अगी से उसके लिये आपको प्रयत्नशील होना पड़ेगा। आप किसके साथ प्रेम कर रहे हैं, यह आपको सोचना पड़ेगा। आप अपने कोट के कालर पर बबूल की ढहनी नहीं लगाते, एक गुलाब का फूल लगाते हैं और गुलाब का फूल ही जिन्दा नहीं रहेगा, तो हृदय पर लगाए भी क्या?

एक प्रेम करने वाला गुलाब के फूल के नाथ्यन से अपनी भावनाओं को स्वप्न करता है। वह कहना चाहता है कि जिस प्रकार गुलाब सुखदाता है उसी प्रकार नैं तुम्हारी मुस्कुराहट को देखना चाहता हूँ। अपने अन्दर भी एक विकसित कमल है, फूल

है गुलाब है, भवनाएं उसी गुलाब का प्रतिबिम्ब है। दस लोगों को गुलाब नहीं देते, दस इंश्वर को नहीं मानते, और शी दस गुरुओं को नहीं मानती थी, वह तो कहती मेरे तो गिरवर गोपाल, दृश्यो न कोई। दो लोगों से, चार लोगों से आप प्रेम नहीं कर सकते।

दूसरा कोई है ही नहीं, वो निलं नहीं मिले, मैंने तो देखा भी नहीं उनको, मगर मुझे मालूम है कि मेरे तो गिरवर गोपाल! अब नहीं मिले तो उसकी मर्जी, मैं खोड़ करके इन षड्यंत्रकारियों से बचाऊँगी, नहीं तो वह समाप्त हो जायेगा। उसे बधान के लिये जमीन पर उत्तरना पड़ा तो जमीन पर उत्तरांगी, लोक लाज खोती है, संसार मुझे थू—थू करेगा, तो मुझे उसकी चिन्ता नहीं, मगर मैं कुछ करूँगी जरूर, हर हालत में उसे बचाने की कोशिश करूँगी। और भीरा आज अपर हो गई, सीकड़ों लोग उस जगते के थे, वे सनापा हो गये, उनके नाम हमें याद नहीं हैं। हजारों लोगों में से एक लड़की जीवित रह सकी, उड़ान कोटि पर पहुँच सकी, बाकी सब लोग तो मर गये। शंकराचार्य कहते हैं, आपका प्रेम अपने गुरु से है तो फिर दूसरा बीच में कुछ नहीं है।

प्राणिनों के व्याकरण में, शब्दकोश में प्रेम शब्द का अर्थ दिया है अपने आपको पूर्ण रूप से मिटा देना, विसर्जित कर देना, अपने आपको समाप्त कर देना, उसके लिये। और प्रेम अपने आपमें उच्च कोटि के व्यक्तित्व से ही किया जा सकता है, निम्न कोटि के व्यक्तित्व से आप प्रेम करके स्वयं बबूल हन जायेंगे। शास्त्रों में लिखा है कि वह उच्च कोटि का व्यक्तित्व या तो इंश्वर है या ब्रह्म है या गुरु है, धीरा कोई व्यक्ति है ही नहीं, धीरा कोई शब्द नहीं बनाया। बाकी सब हाङ—मांस के पुतले हैं जो बढ़े होते हैं, पिघलते हैं और मिल जाते हैं। और हम भी उनके बराबर खड़े होते हैं और सनापा हो जाते हैं। हैं जो बढ़े होते हैं, पिघलते हैं और मिल जाते हैं। क्या मरते समय हमारे होठों पर मुस्कुराहट दिखाई दी?

कैरियर का मतलब क्या है? तुमने शीरा लाख रुपये कमा लिये या तुमने खापार बहुत ऊंचा कर लिया, यह कैरियर नहीं कहलाता। अगर ऐसा ही होता तो यहाँ तो सभी कैरियर वाले बैठे हैं दिल्ली में, हमसे तो कूपा कैरियर है उनका।

यह कोई कैरियर नहीं, यह अपने आप में महानता नहीं है, ऐसा होता तो यहाँ क्लॉटिंग में महान ही महान व्यक्ति बैठे हैं, कई गुना ज्यादा पैरे वाले भी हैं, एक—एक कोठी दो—दो करोड़ की है। तो फिर महान से नीचे कोई है ही नहीं, सामान्य है, कई गुना ज्यादा पैरे वाले भी हैं, एक—एक कोठी दो—दो करोड़ की है। तो ये कैसे व्यक्तित्व हैं, क्या ये छल कपट करके महान बनने की कोशिश कर रहे कोई है ही नहीं। मगर उनके चित्त में क्या है? ये कैसे व्यक्तित्व हैं, क्या ये छल कपट करके महान बनने की कोशिश कर रहे हैं? नहीं वे केवल छलावा करते हैं, अपने आपको धोखा देते हैं कि मैं मन्दिर का अध्यक्ष बन गया हूँ। जबकि वे नहीं बन हैं, वे हीस हजार रुपये रुपये उसके अध्यक्ष बन जाते हैं और जोचते हैं कि मैं मन्दिर का अध्यक्ष बन गया हूँ। लोग उन्हें नहीं पूज रहे हैं, उन बीस हजार रुपयों को पूज रहे हैं। आध्यक्ष बने हैं, उन बीस हजार रुपये की बजह से बने हैं। लोग उन्हें नहीं पूज रहे हैं, उन बीस हजार रुपयों को पूज रहे हैं।

यह अपने आप में भगवान को धोखा देने की किया है, अपने आप को धोखा देने की किया है। यदि आपके शरीर ने सुनाया है, आपमें यहि प्रेम है तो आप बालाद में उच्चता पर स्थित हैं। प्रेम का अर्थ है अपने आप को मिटा देने की, कन कर देने की क्रिया, उसके लिये अपने आपको न्यौषणवर कर देने की क्रिया, तिल—तिल कर के जल जाने की क्रिया। यदि ऐसा है तो जीवन की सार्थकता है, और यदि ये शब्द शंकराचार्य ने कहे हैं, तो इसलिए कि शंकराचार्य इस पगड़ण्डी पर चले, अपने गोद में लेकर देते कि मैं शंकर हूँ और आपके पास यापस आ गया हूँ आप जाइये मत।

उन्होंने कहा — “शंकर मेरे पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो तृकान और मेरे बीच में खड़ा होता, तृकानों ने, काठों ने नुड़े समारा करने की क्रिया कर दी और मैं समार हो रहा हूँ।” और उसके बाद शंकराचार्य के बैठरे पर मुस्कुराहट नहीं आई, होठों पर खिलखिलाहट नहीं आई, वे काव्य लिख ही नहीं सके, मुल कर के रह गये और केवल 11 महीने बाद कदारनाथ के

पास अपने से बिछवने समर एवं दूर वह वह अद्यथा जो भी अपने

इसमें प्रधान समारोह चारदीवासी

में एक कर दिया कोई नहीं आप ने जो मुझे

युक्ति सके, अगर ही नियम जीवित

शिष्य ही

इस रहने वाले इतने मुरीदों जिन्होंने भी से

उस अपने आपमें घुलते-घुलते समाप्त हो गये। जबकि गुरु से मिलने नहीं मिलने के बीच में 18 साल बीत गये थे। जब गुरु से बिछड़े केरल में, उसके बाद पूरे भारत का भ्रमण किया और जब वापस गुरु से मिले तो 18 साल का अंतराल बीच में था, नगर एक क्षण भी दो उस गुरु से अलग नहीं हो पाये। जब मालूम पड़ा कि गुरु बीमार हैं तो सब कुछ छोड़-छाड़ के दीड़ते डूर वह पहुंचे, 800 मील की यात्रा करके। और जब गुरु का सिर गोद में लिया तो गुरु ने कहा - "जो कुछ मुझे करना था वह अचूरा रह गया, क्योंकि तूफानों ने, अंधेरों ने, इन काटों ने मुझे समाप्त कर दिया। क्योंकि कोई व्यक्ति तुम्हारी तरह नहीं था जो बीच में खड़ा होता, उनमें त्याग करने की शब्दना नहीं थी, वे त्वार्थमय थे। मुझसे सीखे और भाग नये, उनका नाम नी अपने होठों से लेना मैं उचित नहीं समझता।"

शंकर ने कहा - "मैं बैठा हूं" तो गुरु ने कहा - "जब बहुत देर हो गई है, अब यह शरीर इतना गल चुका है कि इसमें प्राण अब नहीं ठिक सकते, मजबूत चारदीवारी में ही कोई चीज रह सकती है। चारदीवारी गल जायेगी तो कोई भी अन्दर घुसेगा ही घुसेगा। उसके बाद मन्दिर सुरक्षित नहीं रह सकता। अब शंकर यह मन्दिर नहीं रह सकता, अब यह गिरेगा क्योंकि चारदीवारी ढूट चुकी है।" और वही उन्होंने प्राण त्याग दिये।

उनका प्राण त्यागना हुआ, शंकर की मुस्कुराहट समाप्त हो गई, उनकी हँसी समाप्त हो गई, उसके बाद चारह महीने में एक लाइन नहीं लिख सके और इतने धुल गये कि मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी, मैंने पूरे देश से बुद्धत्व को तो समाप्त कर दिया, मैंने शंकरभाष्य जैसा ग्रंथ तो लिखा, मगर अपने गुरु की रक्षा के लिये कुछ नहीं कर पाया, मेरे जैसा अध्ययन व्यक्तित्व कोई नहीं है। अंतिम क्षणों में उन्होंने जो इलोक लिखे उन में से चार-पाँच में तो उन्होंने अपने आपको अधम लहा है, अपने आप को पापी कहा है, उन्होंने अपने आपको निर्लज्ज कहा है, उन्होंने कहा है कि मैं सबसे घटिया व्यक्तित्व बन गया, क्योंकि जो मुझे करना चाहिये था, वह मैं नहीं करना चाहिये था, उसके लिये मैं मागता फिरा।

शंकर उस पगड़पड़ी पर चला इसलिये उसने लिखा कि प्रेम अपने आपने आत्मोत्सर्ग करने की किया है, अपना सब कुछ तांप देने की किया है, अपने आपको मिटा देने की किया है, इसलिये कि वह व्यक्ति जिन्दा रह सके, जो मुस्कुराहट बिछेर सके, जो सुगम्य बिछेर सके, पृथ्वी पर अपने आपको व्याप्त कर सके और तूफानों को समाप्त कर सके, काटों को लोड सके। अगर उनको ही समाप्त कर दिया, उस चार दीवारी को ही ढूटने दिया, और हम दुकुर-दुकुर देखते रहे, तो मन्दिर जल्द गिरेगा ही गिरेगा। जो चारदीवारिया गिरायेंगे, वे मन्दिर भी गिरायेंगे, और जब मन्दिर गिर गया तो भगवान् भी गिर गये और भगवान् गिर गये तो फिर अंधेरा ही अंधेरा हो गया, खण्डहर बन गये। अगर हम खण्डहर को देखना चाहते हैं तो तीक है, मन्दिर को जीवित देखना चाहते हैं तो हमें प्रेममय होना ही पड़ेगा, न्यौछावर करना ही होगा।

शंकरभाष्य जैसा व्यक्तित्व आज तक पिछले हजार वर्षों में पैदा ही नहीं हुआ। उन्होंने जीवन को सही ढंग से समझा, शिष्य मी बने, गुरु भी बने, परं उन्होंने एक क्षण भी अपने हृदय से गुरु को निकाला नहीं। उन्होंने कहा कि इश्वर कुछ होता ही नहीं, उन्होंने कहा कोई मां-बाप भी नहीं होता - ज नातो ज माता ज ब्रह्म अ आता

किसी ने उनके सामने कहा कि एक बहन है, तो उन्होंने कहा - 'अह ब्रह्मास्मि, मैं खुद ही ब्रह्म हूं द्वितीयो नास्ति, इस सप्तार में दूसरी कोई चीज है ही नहीं, ब्रह्म हूं तो मैं जो कुछ कर रहा हूं, सही कर रहा हूं।'

मगर आखिर मैं वे कहते हैं कि मेरे जैसा कोई अधम व्यक्ति नहीं है क्योंकि उस व्यक्ति को और बीस साल जीवित रहना चाहिये था, मगर तूफानों ने घेरकर उसे समाप्त कर दिया। इससे पाप इतना होगा कि मैं वापस पैदा ही नहीं हो सकूँगा। इतना अधम कार्य मैंने किया है कि मैं अपने आप को क्षमा ही नहीं कर सकूँगा, इतनी ग़लानि हो रही है कि अब मेरे घेरे पर मुस्कुराहट नहीं आ सकती क्योंकि जिनके लिये मुझे जीवन देना था वह मैं नहीं दे पाया। जिन्होंने मुझे ज्ञान की ज्योति दी, जिसके कारण मैं शंकरभाष्य लिख सका, उस ज्ञान की ज्योति को ही समाप्त हो जाने दिया। पाणिनी ने कहा - प्रेम का अर्थ दो शरीरों का मिलन नहीं होता। प्रेम का अर्थ है कि वह दूर भी है तो भी अपने आपको न्यौछावर कर देने की किया। अगर मीरा की तरह उसको नहीं देखा है तब भी महलों से नीचे उतर आना है। उसने तो कृष्ण को देखा ही नहीं था, वह तो महलों से नीचे उतरी कि उसको ढूँढ़नी और उन बड़याँओं से उसको बचाऊँगी।

बन गये उनके  
को हटाया  
शरीर से सु  
लगी, एक  
के लिये अ  
उसके स्ति

हटाया, उ  
पड़वत्र न  
देते हैं।  
मुश्किल  
है, तूफान  
गुलाब व  
भी फैल

उस वास  
तो पहल  
तो किस  
कचाई  
यह जी  
घटिया  
प्रेम क  
है। अ

फिर  
शेष  
में न  
नाम  
किस  
दिश  
बचा

की  
आ  
ऐस  
एव  
स

शकर भी उसी सतय दौड़कर गये जब देखा कि मन्दिर गिरने वाला है, मैं जाक और उनके पास रहूँ। दे पाथे, ये गंध कोई मेरे कान नहीं आयेंगे क्योंकि उन्होंने नुझे यह ज्ञान दिया था, उस ज्ञान को ही मैं खण्डित कर दूँगा तो मेरे जैसा अधम व्यक्तित्व कोई नहीं होगा। और अंतिम जो घास-पाच श्लोक निकले, वे अपने आप में आत्म गतानि से पूर्ण थे। क्या इतिहास हमें शिक्षा नहीं देता कि जीवन के हमारे अंतिम क्षण आत्म गतानि से भरे न हो? क्या इतिहास हमें शिक्षा नहीं देता कि हम हमारे शिक्षानों का सामना करें, क्योंकि हममें शमता है, जवानी है, जीव है? क्या इतिहास इस बात को समझता नहीं है कि हम मन्दिर तूफानों का सामना करें, क्योंकि हममें शमता है, जवानी है, जीव है? क्या इतिहास हमें शिक्षा करेगा कि वह गुरु पठ्यांत्र का शिकार बना और हम को गिरने न दे और दुकुर-दुकुर देखते न रहें?

इतिहास नहीं बना करेगा, फिर तुम्हारे जीवन का अर्थ क्या रहेगा? फिर तुम्हारे जीवन का मूल्य क्या रहेगा? फिर तुम शिष्य कैसे बनाएंगे? शिष्य वह तो है ही नहीं कि दीक्षा दी वही शिष्य है। यह तो जन्म से लगाकर के मृत्यु तक की सारी क्रिया शिष्यता है, आप सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं या उत्तर रहे हैं — यह शिष्यता है, आप तूफानों से टक्कर ले रहे हैं या तूफानों का शिकार हो रहे हैं — यह शिष्यता है, आप मन्दिर को गिरता देख रहे हैं या मन्दिर को बढ़ाने में तत्पर हैं, यह शिष्यता है। अपने गिरजाघर को गिरने दिया या बचाया, आपने गुरुद्वारे को समाप्त किया या बचाया, यह शिष्यता है।

पंजाब में तो कोई भगवान है ही नहीं, उनके तो गुरु ही हैं और वह गुरु का द्वार है, जिस मन्दिर में वे चुसते हैं। ईश्वर कथा होता है? नानक ने तो हमें यह सिखाया है कि गुरु होते हैं और उनके धर्म ग्रंथ का नाम भी गुरु ग्रंथ साहिब है, कृष्ण कथा होता है? नानक ने तो हमें यह सिखाया है कि गुरु ग्रंथ साहिब नहीं है, गुरु ग्रंथ साहिब है। उन्होंने कुछ समझा होगा, उन दस गुरुओं ने कुछ समझा होगा ग्रंथ साहिब या राम ग्रंथ साहिब नहीं है, गुरु ग्रंथ साहिब है। उन्होंने कुछ समझा होगा, उन दस गुरुओं ने कुछ समझा होगा कि जीवन की श्रेष्ठ स्थिति गुरु है, इसलिये जहाँ हमने नन्दिरों के नाम राम मन्दिर, कृष्ण मन्दिर, शिव मन्दिर रख दिये। उन्होंने एक ही नाम दिया गुरु द्वारा, दूसरा कोई नाम ही नहीं दिया, एक ही पुस्तक लिखी उसको गुरु ग्रंथ साहिब कहा। उन्होंने एक ही नाम दिया गुरु द्वारा, दूसरा कोई नाम ही नहीं दिया है और यह समझने की जीज है कि पंजाब के प्रत्येक व्यक्ति ने समझा कि इस बात को समझा कि दासाव ने गुरु क्या होता है और यह समझने की जीज है कि पंजाब के प्रत्येक व्यक्ति ने समझा कि ईश्वर तो बहुत बाद की जीज है। जीवित ईश्वर गुरु है, उनको भी हमने नहीं समझा तो सब व्यर्थ है। इसलिये उन्होंने उस ईश्वर को गुरु नाम दे दिया।

उन्होंने कहा हमें ईश्वर से मिलकर भी क्या मिल जायेगा, मिलेगा तो इस गुरुद्वारे में मिलेगा, मिलेगा तो इस गुरु ग्रंथ साहिब में मिलेगा। और यह तब मिल सकता है जब अन्दर क्रोध समाप्त होगा, हिंसा समाप्त होगी। तुम क्रोध के घोड़े पर सवार साहिब में मिलेगा। और यह तब मिल सकता है जब अन्दर क्रोध कोई ही नहीं है, तुम्हारे जैसा नीच व्यक्ति कोई नहीं है। तुमने क्रोध किया और होकर आओगे तो तुम्हारे जैसा अधन कोई व्यक्ति ही नहीं है, तुम्हारे जैसा नीच व्यक्ति कोई नहीं है। तुमने अगर प्रेम का अंकुर फैलाया अपने जीवन को समाप्त कर दिया, तुमने क्रोध किया और अपने जीवन को बर्बाद कर दिया, तुमने अगर प्रेम का अंकुर फैलाया अपने जीवन को समाप्त कर दिया, तो चार सीढ़ियों और चढ़ गये। प्रेम के लिये अपने आपको बलिदान कर दिया, तो लिये अपने आप को न्यौछावर कर दिया, तो चार सीढ़ियों और चढ़ गये। प्रेम के लिये अपने आपको बलिदान कर दिया, तो उस मैजिल पर पहुँच गये क्योंकि प्रेम जीवन की पूर्णता का परिचयक है, प्रेम के आगे कुछ ही ही नहीं, इसके आगे कोई शब्द नहीं है। क्योंकि यह तो मिलने की क्रिया है, एक दूसरे की छाया बनने की क्रिया है, एक दूसरे में समाहित हो जाने की क्रिया है, अपने आपको विसर्जित कर देने की क्रिया है।

और यदि आप अपने आपको न्यौछावर नहीं कर पाये तो फिर इस जिन्दगी का भार ढोकर के धल रहे ही। यह उच्चता नहीं है, यह नमुन्यता भी नहीं है, यह श्रेष्ठता भी नहीं है, यह तो तुम्हारा एक खेल है, यह एक मृगमरीचिका है, छल है। छल है कि मैं एक कठी बना दूँगा तो महान बन जाऊँगा, इस मन्दिर का अध्यक्ष बन जाऊँगा तो महान बन जाऊँगा। दिल्ली में तो संकरों अध्यक्ष होगे, हमें तो नाम ही पता नहीं है।

और गुरु की पहचान तो उपने आप में मन की आँखों से ही साधन है। अगर प्रेम का अंकुर फूटा ही नहीं, तो अपने गुरु को पहचान ही नहीं। पहचान लें जिससे प्रेम का वह अंकुर तेजी से बढ़ने लगे क्योंकि सुम्मारे अन्दर प्रेम है तो परन्तु उमने गुरु जागने नहीं दिया है। इसलिये जागने नहीं दिया कि उसके ऊपर घृणा, बाहर की हड्डी हो गये, तूफान हो जी हो गये। तूफान

‘जलवरी’ 2000 मंत्र-संबंध-यंत्र विज्ञान ‘14’

उन गये उसके, और उस प्रेम को तुमने दबा दिया। ज्योहि अधेरे को हटाया, क्रोध को हटाया, इल  
जो हटाया तो प्रेम का अंकुर फूटा, फूटा और तुम्हारा चैहरा मुख्युराहट से खिल गया, तुम्हार  
जीव से सुगम्य निकलने लगी, तुम्हारा शरीर सुगम्यित, सुवासित होने लगा, एक महक आने  
हगी, एक आँखों में सुरुर पैदा हुआ, एक जिन्दगी की घड़कन पैदा हुई और उसकी रक्षा  
के लिये अपने आप को तैयार कर दिया, उसके लिये अपने आपको न्यौछावर कर दिया,  
उसके लिये अपने आपको आत्मोत्सर्ग कर दिया।

जितने भी महान बने, उन्होंने उस प्रेम के अंकुर के ऊपर से इन चीजों को  
हटाया, उनके शिकार नहीं थे। बाहर निकलोगे तो केवल झूठ भिलेगा, छल भिलेगा,  
षड्यंत्र भिलेगा और दो षड्यंत्रकारी भिल जाते हैं तो ऊचे से कंठे राज्य को समाप्त कर  
देते हैं। षड्यंत्र जल्दी पनपता है, काटे बहुत जल्दी फैलते हैं, गुलाब का फूल बड़ी  
मुश्किल से खिलता है, उसको खाद पानी देना पड़ता है, चारों तरफ कपड़ा बांधना पड़ता  
है, तूफानी हवाओं से बचाना पड़ता है, ध्यान रखना पड़ता है कि पौधा मजबूत हो जाये।  
गुलाब का फूल मुश्किल से खिलता है, ऊचा उठता है। काटों को आप कुछ नहीं करें, तो  
मी फैलते ही जाएंगे, और काटों से पैर लहूलुहान हो जाते हैं, सेटिक हो जाता है।

आप क्या दो रहे हैं? आपके हृदय में काटे हैं, आपके हृदय में धूणा है, हे यज्ञोक!  
उस वातावरण में आप सांस ले रहे हैं। क्या आपमें क्षमता है कि आप उनको हटायें? हटायें?  
तो पहली बार अच्छे स्तर पर सीढ़ियों पर चढ़ेंगे। आपने उस प्रेम की अरिन की थोड़ी सी हवा दी  
तो फिर आप उच्चता की सीढ़ियों चढ़े। आपने अपने प्रेम को लहलहाया, पौधा बनाया, आप महानता की  
ऊचाई पर पहुंचे, आपने प्रेम को किसी पर न्यौछावर कर दिया, आप ऊचाई पर पहुंच गये, आपने अपने को समर्पित कर दिया,  
यह जीवन की श्रेष्ठता है। ऐसी श्रेष्ठता आपको मिले क्योंकि आपके अन्दर की धूणा, आपके क्रोध जब तक है तब तक आप  
घटिया से घटिया इसान हैं, षड्यंत्रकारियों के आप नाम हैं तो आपसे अधम कोई व्यक्तित्व नहीं है। यदि आपने प्रेम है और  
प्रेम का पौधा लहलहा रहा है, प्रेम से आपने किसी को सीधा है, तो आप श्रेष्ठ हैं। गुलाब का फूल खून से सीधने से बड़ा होता  
है। आप देखेंगे कि कई बार गुलाब के पौधे में खून दिया जाता है, जिससे एक-एक किलो के फूल भी खिलते हैं।

खून के माध्यम से प्रेम पनाप सकता है। जीवन को उत्सर्ग करने के माध्यम से ही प्रेम पनप सकता है। जहाँ प्रेम पनप  
फिर वहाँ सब काटे समाप्त हो गये और जीवन का एक आनन्द, जीवन की एक मस्ती, जीवन की एक पूर्णता, जीवन की एक  
श्रेष्ठता भिल गई है। भिल गई हो आप सही अर्थों में हारिदास बन गये, आप सही अर्थों में शंकराचार्य बन गये, आप सही अर्थों  
में महापुरुष बन गये। इतिहास यही याद करेगा कि इतिहास में तुम अपना नाम किस ढंग से लिखाते हो — योगेज खां के  
नाम से लिखाते हो, औरंगजेब के नाम से लिखाते हो, अकबर के नाम से लिखाते हो, या शंकराचार्य के नाम से लिखाते हो,  
किस तरीके से लिखाते हो यह तुम्हारे हाथ में है। तुम क्या बनते हो यह तुम्हारे हाथ में है। तुमने दिन भर में गुरु को वथा  
दिया, यह तुम्हारे हाथ में है — मुख्युराहट दी या धूणा दी, षड्यंत्र दिया या प्रेम दिया, तूकान जी तरह खड़े होकर उसको  
बचाया या उसको भारने के लिये तत्पर हुए।

आपने क्या दिया, यह आपका अपना गणित है। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि आपके हृदय ने प्रेम का अंकुर फूटे, आप किसी  
की दाल बन सकें, आपके मन में जो धूणा दूसरों ने भर दी है, जो षड्यंत्र, डर, भय, जातेक है उनको आप हटा कर निर्मीक हो।  
आप निर्मीक हैं तो जीवित हैं, जाग्रत हैं। डर हुए हैं तो आप अधम, गए बीते हैं। जब भय रहित होने तब प्रेम व्याप्त हो पायेगा।  
ऐसे ही आप भय रहित, निर्मय होकर के अपने अन्दर के गुलाब को, प्रेम को विकसित करें और आप आत्मोत्सर्ग हो सकें और  
एक ज्ञान के दीप को, एक गुलाब के फूल को जीवित, जाग्रत, वैतन्य बनाए रख सकें, जिससे कि वह सुगम्य चारं तरज फैल  
सकें। यही आपके जीवन की किया बने, ऐसा ही मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूँ, कल्याण कामना करता हूँ।

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव ■

# ज़माना हमसे है, हम ज़माने से नहीं

संकल्प है इस सहस्राब्दि के प्रारम्भ में -

साकार करेंगे निरिवल प्रज्ञा, चेतना और ज्ञान को



मय का तात्पर्य है - काल, काल का तात्पर्य है - मृत्यु, तो क्या हर साध मृत्यु का क्षण है या हर क्षण जीवन का क्षण है। जहां जीवन है, वहां काल केवल समय खण्ड बनकर रह जाता है, लेकिन जीवन निरन्तर चलने वाली किंवा है। जीवन को देखना और सामर को देखना एक समान है। हर कोई कहता है कि मैंने सामर देखा है लेकिन देखता है वह उन लड़ों को जो किनारे पर आकर समाप्त हो जाती है, केवल सामर जीवन रहता है, वह अपने वश स्थल से निरन्तर लहरे में जाता रहता है, लेकिन लहर कभी सामर नहीं बन सकती, लहर तो सामर का एक प्रसाव है।

जीवन यदि निरन्तर चलने का नाम है, तो उसके साथ-साथ विचार भी है, स्वप्न भी है, रात्रि को देखे सपनों को भुलाया जा सकता है, उन्हें नकारा जा सकता है लेकिन दिन के सपनों को किया कहा जाता है। दिन समाधि के ओर से किया की ओर ले जा सकता है और इस दिवस का ही तो जान कराते हैं सदगुरु - रात्रि भुला दो, दिवस का प्रारम्भ ही सदगुरु है और सदगुरु का तात्पर्य ही तो प्रसन्नता है। सदगुरु तो सूर्य की भाँति है, जैसे सूर्य निकलता है और ये भव नहीं करता कि जिस घर पर प्रसन्न होगा उस घर पर रोशनी करेगा, जिस पर अप्रसन्न होगा उस पर रोशनी नहीं करेगा। सदगुरु तो मानो द्वार पर खड़े हैं, केवल आख खोलने भर की आवश्यकता है। जिन्होंने आंखें बन्द कर लीं, उनके लिये रात्रि है और जिन्होंने अपनी आंख खोल दी, अपने अहंकार की पट्टी छटा ली तभी जान पड़ता है कि सदगुरुदेव प्रसन्न हुए, दिवस हुआ।

ऋ 'जनवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '36'

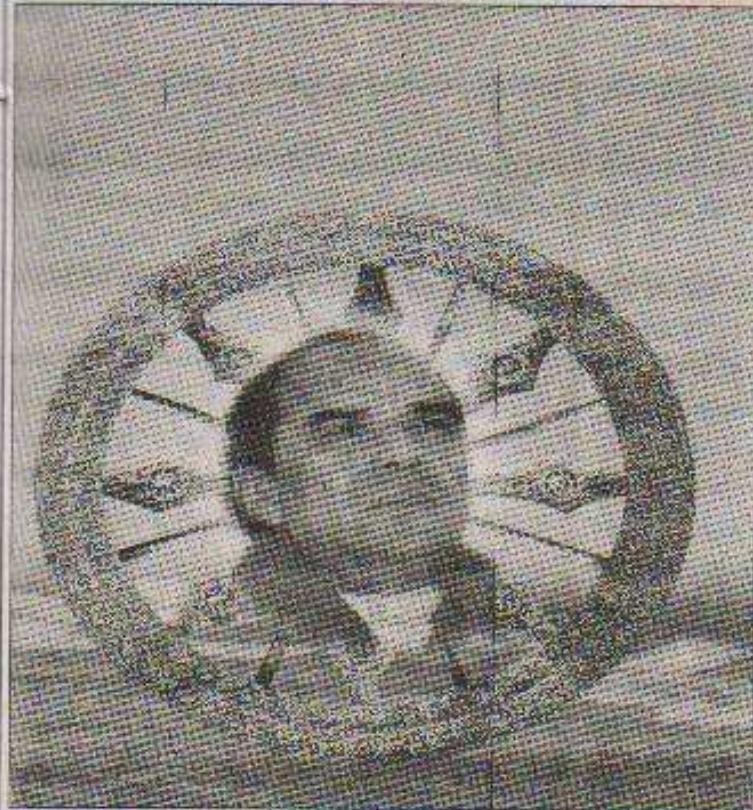
सदगुरुदेव तो प्रकाश है कि आंखें खोली और अपने भीतर उतार लिया। अंधेरे के लिये सूर्य प्रकाश व्यर्थ है। हमें तो अपनी मानसी आंखें खोल कर उन्हें देखना, उन्हें पालेना, अपने साथ मिला लेना है। जैसे उत्सव उन्हीं के लिये है जो प्रसन्न हो सके, तृत्य कर सके, उत्सव तरंग के साथ लीन हो सके, तल्लीन हो सके। तल्लीन होने की किया मैं ही सदगुरु की प्रसन्नता का अनुभव होता है।

सदगुरु तो वह किया करते हैं, जो उन्हें करनी ही है - सुबह हुई, एलार्म सुनाया और नीद से जगा दिया। परन्तु एलार्म में जागना नहीं छिपा था, वहां से तो केवल एक अनाज आई और जागृति जो भीतर छिपी थी वह जागत हो गई, मालस को चेतना मिली कि उठ खड़े होना है - 'प्रातःवेला हो गई, मोर भई मुसाफिर, अब तो जाग!'

चेतना सोई है भीतर, एलार्म भी बज गया, परंतु यदि आपने हाथ बढ़ाकर एलार्म बंद कर दिया तो जागरण कैसे होगा? सदगुरु का नाम चमत्कार नहीं है; सदगुरु का नाम प्रसन्नता है, तरंग है, हिलोर है, वह बार-बार उठती है और किया पक्ष को चैतन्य कर देती है।

सदगुरुदेव ने बार-बार अपने प्रवचनों में कहा कि मुझे प्राणवान शिष्यों की आवश्यकता है, क्योंकि जो भी सामने आया वह देहगुरु तो था, भद्रकन तो था लेकिन उन्होंने केवल प्राणशेतना युक्त शिष्यों की मांग की। पहली बार जीवन में सदगुरु ने मांगा तो प्राणशेतना युक्त शिष्यों को ही मांगा।

समय आने पर ही शब्दों की प्रासंगिकता सिद्ध होती



है, पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व शंकराचार्य ने भी यही कहा था कि जीवन्त ही जाओ, पर क्या समाज जीवन्त हो सका? जीवन्त समाज की चेतना उधार की चेतना नहीं होती, जीवन्त समाज को बाढ़ा जान की आवश्यकता नहीं होती। मैं बार-बार इतिहास को देखराना नहीं चाहता लेकिन कहाँ से हम चले थे और कहाँ आकर रुक गये इस पर विचार करना तो आवश्यक ही है। जब ३१वीं व १२वीं शताब्दी में राजराज चोल ने तंजोर का महान मन्दिर निर्माण कराया, जब राजा विद्याधर चैदिला ने खजुराहो शिव मन्दिर बनाया, जब विक्रमादित्य ने महान न्यायशास्त्री श्री विघ्नेश्वर की न्याय एवं शासन पद्धति भारत मण्डल पर विभूषित की, और जब रामानुज जैसे महान संत हुए जिन्होंने 'विशिष्टाङ्गत' का सिद्धान्त स्थापित किया तब सौराष्ट्र में महान जैनाचार्य हेमचन्द्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन कुमारपाल चालुक्य ने किया। तब उसी समय गंगा राजवंश के राजा अनन्तवर्मन द्वारा जगत्राथ मन्दिर का निर्माण हुआ, उसी काल के दौरान तो महाकवि कम्बन ने रामायण की रचना तमिल भाषा में की और उसी समय के दौरान जयदेव जैसे महाकवि हुए जिनका लिखा गीत गोविन्द, वैष्णव धर्म का महान काव्य है।

‘जनवरी’ 2000 मंत्र-तत्त्व-यंत्र विज्ञान ‘11’ ८

ये सारी घटनाएं इसी सहसान्वित के प्रारम्भ में हुई और सन् १२०० तक यह भूमण्डल न्याय, ज्ञान से ओत-प्रोत था। ‘यथा राजा यथा प्रजा’ – यदि उस समय ऐसे महान राजा हुए तो निश्चय ही महान कवि, लेखक, संगीतज्ञ, वास्तुशास्त्री भी उत्पन्न हुए। उस समय नालन्दा विश्वविद्यालय अपने चरमोत्कर्ष पर था। इसी समय नो महान वैज्ञानिक भास्कर ने खगोल एवं गणित शास्त्र से सम्बन्धित अनुसन्धान सम्पन्न किये। बस इस सदी का समाप्त होना था और संस्कृत में विनाश का बीज लगना प्रारम्भ हो गया। इसी काल के अंत में उस नालन्दा विश्वविद्यालय निसमें दस हजार विद्यार्थी अध्ययन करते थे को जलाकर भस्म कर डाला गया और एक भी विद्यान को जीवित नहीं छोड़ा गया। कल्पना कीनिये राष्ट्र के सर्वोच्च विश्व विद्यालय जहाँ से ज्ञान का प्रसारण होता है, जहाँ सिद्धान्तों की

रचना की जाती है, जहाँ राजा और आम नागरिक एक साथ अध्ययन करते हैं, वह ध्वस्त कर दिया जाय!

शासकों के आपसी युद्ध में जय-पराजय होना सामान्य बात है लेकिन अगर ज्ञान के प्रखरवाहों को ही समाप्त कर दिया जाये जिससे संस्कृति का ही विनाश हो जाय, राजा अनेक ही सकते हैं, वंश समाप्त हो सकते हैं लेकिन विचार धारा को ही समाप्त कर देने का प्रयास किया जाय, तो संस्कृति आहत होती है और इसी समय अपनी ही धार्मिक सहिण्यता, शत्रु को अमा कर देने की भावना के कारण षड्यंत्रों से केन्द्र विन्दु दिल्ली पर पदासीन पृथ्वीराज चौहान का अंत मुहम्मद गोरी द्वारा कर दिया जाता है।

कोशिश बराबर जारी थी, कि संस्कृति को भी समाप्त कर दिया जाय, पूरे आर्योत्तर में छतना भेद कर दिया जाय कि हम आपस में वैचारिक रूप से एक नहीं हो सकें। इन सबके बावजूद संस्कृति को जीवन्त रखने हेतु राजा कृष्ण देव राय, उड़ीसा के राजा नरसिंहो ने कोणाकर में सूर्य मन्दिर का निर्माण कर सिद्ध किया कि संस्कृति मिटाई नहीं जा सकती। चंगेन खुं और मोहम्मद गोरी से प्रारम्भ हुए ये विध्वंस कार्य चलते

नहीं, क्योंकि  
कर चुका है  
उ  
को कर लेने  
५० साल  
साथ और  
जा रहा है

आश्वर्य  
मंसार  
डोगा, प  
ने हाथ  
नहीं के  
प्रेम, ये

यहाँ प्र  
भी। ३

हो रहे, क्योंकि विचारधारा को जबरन बदलने का प्रयास किया गया और किरवही 'विद्या राजा विद्या प्रजा' वाली स्थिति बनी। मूरु गग्न लोग कि हमारे यहाँ महान वैज्ञानिक, वाईनिक, कवि, विचारक हुए हैं, जिनके जान से पुनः जगति प्राप्ति की जा सकती है। वह विशुद्ध ज्ञान तो एलाइ घड़ी ही था जो बार बार जगता था लेकिन जानबूझ कर सोने वालों को कौन जगा सकता है?

दास बंश, खिलजी बंश, तुगलक बंश, बहमानी बंश, लोधी बंश पता नहीं कितने ही आये और आपस में लड़ते रहे और हमारी पांडियां उनके साथ आपस में ही लड़ती रहीं। गृजी थी बीच-बीच में गुरु नानक की वाणी, कबीर की वाणी, सूरदास और रेखास की वाणी, धीमी थी लेकिन चेतना देने का प्रयास अवश्य था।

एक गवा, दूसरा आगा, दूसरा गया तीसरा आगा, और साप्तवतया इसीलिये उसी समय सन् १२०० के बाब गुरु शिष्य की पश्चिमा और केवल अपने गुरुखारविन्द में शिष्य को ज्ञान देना और शिष्य द्वारा उसे गहण कर उसे आत्मसात कर लेने की क्रियायें प्रारम्भ हुई। वैदिक संस्कृति, हिन्दू भस्तुति के सम्बन्ध में कोई महान ग्रन्थ ही नहीं लिखा गया, क्योंकि

उस समय विचारक एवं ज्ञान गुरुओं के मन में यह यात स्पष्ट हो चुकी थी कि ग्रन्थ लिखकर समाज में बांटना उस ज्ञान को समाज करने के समान ही सकता है, इसीलिये शिक्षा और दीक्षा का सम्बन्ध मौखिक एवं गोपनीय ही रहा। गुरु ने अपने शिष्य को ज्ञान दिया और स्पष्ट निर्देश दिया कि तुम भी यह ज्ञान अपने योग्य शिष्य को ही देना, जिसपर तुम्हें स्वयं विश्वास हो।

सेवा का धर्म और कई कई शब्दों तक सेवा करने के बाद ज्ञान देने की वह क्रिया इसलिये बनाई गई कि गुरु हर दुष्ट से शिष्य को तपाकर देख ले कि वह कितना गहण कर सकता है और आने वाली पांडी को किस प्रकार से दे सकेगा।

आज बहुत गर्व से हम कह रहे हैं कि हम इकीकौसी जाताधी में प्रवेश कर रहे हैं, हमारे सहराओं विरचन देखा है, यदि वास्तव में सहस्रांशि परिवर्तन को पौष्टि करना ही है, तो इस महान संस्कृति की ८०० वर्षों से जर्जर काया में नवे प्राण फूंको आवश्यक है। सद्गुरुदेव ने रूपद कहा है कि हमारी यह संस्कृति, हमारी यह चेतना विलुप्त नहीं हो सकती लेकिन लीभार का इलाज आवश्यक है। आठ सौ वर्षों से विभिन्न प्रकार के तीर हमारी भस्तुति को देखे जा रहे हैं और हमारे पूर्वजों ने यह सब देखा है और अब वह समय आ गया है जब हम सद्गुरुदेव द्वारा प्राप्त ज्ञान द्वारा इस संस्कृति का पुनरुत्थान सम्पन्न कर सकें। आप एक नहीं, आप उस आभामण्डल के भाग हैं जिसे खण्ड-खण्ड नहीं किया जा सकता जिस आभामण्डल का नाम है - हमारे प्यारे सद्गुरुदेव निखिल!

शिष्य शब्द संसार का सबसे पवित्रतम शब्द है, जो कि 'समर्पण' का रूप है। गुरु द्वारा विद्यालय नहीं चलाये जाते, गुरु द्वारा गुरुकूल प्रसंग किये जाते हैं और शिष्य को अपने साथ पूर्ण रूप से जोड़ा जाता है। गुरु के हनार शिष्य हो सकते हैं, हनार शरीरों में एक साथ प्राणशेतना का संचार कर सकते हैं, लेकिन एक शिष्य के हनार गुरु नहीं हो सकते। ज्ञान वह हनार जगह से प्राप्त कर सकता है, लेकिन प्राणशेतना के नार केवल एक से ही चुड़ पाने हैं।

आज वे शब्द याद आते हैं जो मदगुरुदेव ने १९९८ को कहे थे - "तस्मै मनः शिव संकल्पमस्तु ...

हम दृढ़ तथ बनेंगे जब हम संकल्प लेंगे और मंकल्प यह लेना है, कि हमें चार-पांच महीनों के अन्वर-अन्वर सिद्धांश्म पहुंच जाना है, हर छात्र में पहुंच जाना है, नहीं तो मेरी वाणी मिथ्या हो जायेगी, सिद्धांश्म के उन क्रियों के सामने मैं जबाब नहीं दे सकता, वे व्यंग्य से मुक्तराएंगे और मेरी गर्दन नीरी शुक्री रहेगी। और देखा आज तक हुआ ही

## एकलव्य हैं या कृष्ण और?

जब गुरु द्वोणाचार्य ने एकलव्य को शासंधान की दीशा नहीं दी तो उसने अपने रथान पर गुरु द्वोणाचार्य की मूर्ति बनाकर ही धनुर्विद्या प्रारम्भ कर दी और अपनी एकग्रता और गुरु की प्राणशेतना के बल पर द्वोणाचार्य के प्रिय करना, तपस्या करना तो शिष्य का कर्तव्य ही है, क्योंकि हर शिष्य के लिये यह सम्भव नहीं हो पाता कि वह गुरुकूल, गुरुधाम में रहकर ज्ञान क्रिया सम्पूर्ण कर सके। . . . लेकिन आज यह कहते हुए . . . कुछ शिष्य गुरु प्रतिमाएं स्थापित कर गुरु मंदिर बनवाकर, आश्रम खोलकर क्या क्रिया करने जा रहे हैं? क्या वे एकलव्य की भाँति निषावाच ये सद्गुरु के नाम पर यह कृत्य कर रहे हैं, उनका कान पकड़ कर उन्हें सही गुरुमार्ग पर लाना शिष्य का कर्तव्य है। जो गुरु के नाम पर यह कृत्य कर रहे हैं, उनका कान पकड़ कर उन्हें सही गुरुमार्ग पर लाना शिष्य का कर्तव्य है।

नहीं, क्योंकि मैं आपको बेख़चुका हूं, परख़चुका हूं, विश्वास कर चुका हूं।

और अगले छः महीनों के अन्वर-अन्वर उस कार्ब को कर लेना है, क्योंकि यों तो मैं २० साल से आपके साथ हूं, १० साल से आपके साथ हूं, पर अब छः महीने ही मैं आपके साथ और हूं। अब भीर-धीर आपके कंधों पर बजन डालता जा रहा हूं। और आप बजन उठाने में सक्षम हैं, समर्थ हैं।

कह योगी, संन्यासी, कथावाचक, और विद्वान आश्चर्यचित हैं, कि आप सब इन्हें अनुशासन में कैसे हैं? संसार में और भी योगी होंगे, अनुशासन तो उन्होंने देखा होगा, पर इतना प्यार मिला ही नहीं होगा उनको। उन योगियों ने हाथ जोड़ना ही देखा होगा शिष्यों का, इन्हें गदगद कण्ठ नहीं देखे होंगे, इनका प्रेम नहीं देखा होगा और आप में वह प्रेम है। यह आपके चेहरे का दर्प, यह गरिमा, यह आंखों का प्रेम, ये मेरे प्रति अपनत्य अद्वितीय हैं।'

निश्चय ही ये रादशुद्देव के शब्द नहीं उनका प्रेम है, यही प्राणों के मन्दन्ध हैं, जो दू लेते हैं इदय की गहरी पत्तों को ची। और यह प्रेम, यह दायित्व, यह चेतना मुक्त हस्त में दान

देने की क्रिया वही कर सकता है, जिसके पास अटूट की स्थिति हो, जिनके विचारों का प्रवाह कभी नहीं स्कै, जिनके मन में केवल एक ही संकल्प हो कि मेरे शिष्य प्रजावान हों। 'प्रजा' सुन्दर वस्त्रों से, स्वादिष्ट व्यंजन से अथवा धन-सम्पद से नहीं आ सकती, प्रजा तो केवल गुरु रूपी सूर्य की अग्नि को अपने भोतर उतार लेने से ही आ सकती है और योगी किसे कहा गया है? योगी वही है जो प्रजा प्राप्त कर ले, जो कि सामने होने और नहीं होने दानों की स्थितियों में निर्लिप्त बना रहता है। यदि जीवन में कोई स्थिति सिद्धाश्रम ले जा सकती है, तो वह आपकी प्रजा ही है – वह चेतना समाप्त नहीं हो सकती क्योंकि यह प्रजा सदगुरु की प्रजा से जुड़ी है, उनके छारा प्राप्त है।

'सिद्धाश्रम साधक परिवार' प्रजावान पुरुषार्थी व्यक्तियों का सुवासित स्वाध्याय मण्डल है, जिनकी आभा गुरु से उद्घाटित है। संसार की सारी वैचारिक, कार्यिक, आर्थिक क्रियाएं सम्पन्न करने के साथ ही जो प्रजा के साथ जीवन्त एवं प्राणश्चेतना से युक्त खड़ा रह सके, वहीं तो निर्विल शिष्य है, निर्खिल रत्न है, निर्खिल के प्राणों का समन्वन है।

# प्रकृति की ठोट्ठम साधना का एक नवीन दृष्टिकोण



हसाल्बि परिवर्तन के इन क्षणों में यह आवश्यक है, कि प्रत्येक शिष्य, जो अपने को गुरुदेव के प्राणों का स्पन्दन समझता है, वह विचार करे जीते हुए इतिहास का, क्योंकि पीछे बहुत कुछ ऐसा भी घटित हो गया जो कि नहीं होना चाहिये था, अब उसको पुनरावृत्ति नहीं हो। हजारों वर्षों की गुलामी रही और यदि देश की इस परसंत्रसा को सार में कहें तो कह सकते हैं कि 'मुझे अपनों ने लूटा, जैसे मैं कहां दम था' हम आपस में एक दूसरे को नीचा दिखाने में ही उलझ गये। परन्तु समय अभी भी कोई हाथ से निकल नहीं गया है, जान का सूर्य भी सामग्रे आकाश में उदीयमान है, कहीं ऐसा न हो कि जीवन फिर निकल जाये और अंतिम बाणों में यही कहने को रह जाये – 'मैं दूबा वहां जहां पानी कम था'।

महाकाली परिवर्तन का क्षण है, विश्व भर में कई नभाह उत्सव मनाये जायेंगे। और उत्सव, महोत्सव, त्यौहार केवल पृथ्वीवासी ही नहीं मनाते, इसे तो देवी-देवता, योगी-यति भी मनाते हैं, मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक भूम-धारा से मनाते हैं, परन्तु यह धूम-धारा विश्वावर्ती नहीं होती, यह तो अपने अन्वर विचार, चिन्तन और संकल्प के माध्यम से होता है। उत्सव का ऊर्जा ही यही है कि इस शब्दवाची शरीर में जीवन, जीतना का संचार हो, हलचल हो – यही महोत्सव होता है।

यह क्षण साधकों के लिये भी उत्सव के क्षण है परन्तु इसके लिये साधनात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा। साधना के प्रति अपने दृष्टिकोण का परिमार्जन करना होगा, एक नये ढंग से साधना करना होगा। प्रकृति के मध्य रहकर . . . !

साधक मनुष्य हो जाता है, और मनुष्य का पूरा जीवन प्रकृति पर आश्रित है। फिर भी वह उसके दोहन की ही सोचता है, संहार की सोचता है, सुखन तो हो ही नहीं पाता। अपनी स्वार्थपूर्ति के लिये मनुष्य प्रकृति का उपभोग करता गया, परंतु प्राकृतिक संसाधन तो भीमित है, जबकि हमारी आवश्यकताएं अनन्त हैं। फिर कैसे इस खाई को भरा जायें? आधुनिकता की अंधी दोहन में मानवता और प्रकृति दोनों नष्ट होती जा रही है। ऐसे में क्या एक साधक, एक मनुष्य, प्रकृति पर आश्रित एक मनुष्य अपनी आंख नूद ले, कान बंद कर ले?

कटे हुए पेड़ से निकली चड़-चड़ाहट पेड़ की नहीं होता प्रकृति की ही होती है, जिसने उस पेड़ को और पेड़ को काटने वाले उस मनुष्य को भी पाला है, संरक्षण दिया है। मनुष्य पेड़ों को काट रहा है, नदी के बहाव को बांध रहा है, बनों की जगह ककर्हट की अटलिकाएं बना रहा है। और प्रकृति इस प्रकार नष्ट होती जा रही है। जब प्रकृति ही नहीं रहेगी तो साधक भी नहीं होंगे, साधनाएं नहीं हो सकेंगी, मनुष्यता भी नहीं रह सकेंगी, मर्शी ही रहेगी और मनुष्य भी एक मरीच बन कर रह जायेगा।

और परिवर्तन केवल साधना के माध्यम से ही हो सकता है। आप जब साधनाएं करते हैं, तो केवल आपका ही निर्माण नहीं होता, जब शिविरों का आयोजन होता है, तो वहाँ के आस-पास का शेष भी शिव और आत्मोक्त हो उठता है, आस पास के क्षेत्र में साधना की किरण पहुंचती ही है। इन शिविरों में न जाने किनने ही ऋषियों का जन्म होता है, जो आगे बाले समय में फलित फूलित होंगे।

अब तक जिस प्रकार से साधना करते आए हैं, जिस कर्मकाण्ड में पढ़ते आए हैं, पण्डि-पुजारियों के चक्कर में पढ़ते आए हैं, मन्दिर में मनोरी मानते आए हैं, अब परिवर्तन की इन घड़ियों में यह संकल्प लेना चाहिये कि कुछ ऐसी भी साधनाएं करें, एक नवीन पद्धति से जो प्रकृति से साधक का सीधा तारतम्य जोड़ सकें। प्रकृति का प्राकृतिक ही गुरुत्वाकर्षण से हुआ है, गुरुत्व से हुआ है, और गुरुत्व से यदि साक्षान हो सकता है तो प्रकृति के मध्य ही हो सकता है। इस सक्षात्कार के लिये साधनाएं ही परंतु इन साधनों द्वारा हेतु अपना तारतम्य प्रकृति के साथ जोड़ा ही है। प्रकृति का नात्पर्य है शक्ति और पुरुष का तात्पर्य है शिव। जब प्रकृति रूपी शिव और शिवरूपी पुरुष एकाकार होते हैं तो सृजन होता है। सृजनात्मक प्रक्रिया का गृहतम साधनाओं को सम्पन्न किया जा सकेगा और अपने भीतर संसाय ग्राव को उद्दीप्त करना है, उसे अपने

स्वयं के योग के सिद्धान्त बनाने हैं।

सदगुरुदेव का शिष्य — धर्म, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रन्याहर, ध्यान, धारणा, समाधि का अधिकारी है तो उसे प्रकृति रूपी शक्ति को शिव रूप में एकाकार करने हुए नवोन मिद्यानों का निर्माण करना है। काल चक्र धूम रहा है, स्व. नहीं सकता लेकिन उसका स्वरूप वृत्ताकार अवश्य है, धूमकर वह काल खण्ड पुनः अवश्य आता है, आवश्यकता है काल के उन शास्त्रों को पढ़ने की। वह चेतना विद्यमान अवश्य है, लौकिक स्वयं के लिये साधना करनी आवश्यक है, स्वयं को उपासक बनाकर उत्तर्खंगति प्राप्त करनी है। और उत्तर्खंगति प्राप्त होगी अवश्य, क्योंकि हम उस गिरिल प्रबा से जुड़े शिष्य हैं।

हम सभी भले ही सही अर्थों में शिष्य न हो, ऐसा ही सकता है परन्तु उस गुरु परम्परा से जुड़े अवश्य हैं जो आज से ५० हजार साल पहले प्रारम्भ हुई, उस समय से भी पहले जब वेदों, पुराणों, उपनिषदों की रचना हुई थी। उस गुरु परम्परा से जुड़ा व्यक्ति कितना मूल्यवान होगा, इस बात की कल्पना की जा सकती है। हम भले ही सी प्रतिशत शिष्य न हो, ऐसा ही सकता है, क्योंकि शिष्यता की कस्ती अत्यंत कठोर होती है, परन्तु एक प्रतिशत तो ही है — इसमें कोई दो राय नहीं है। और वह एक प्रतिशत कभी न कभी तो सी प्रतिशत बनेगा ही, इसीलिये हम सतत प्रवल्लीरत हैं। छमारा यही प्रवल्ल साधना है। और सफलता मिलेगी क्योंकि हीरक खण्ड चाहे कितना भी सूखा हो, वह रहेगी हीरक सण्ड ही, वह रेत नहीं बन सकता। वह एक प्रतिशत सी प्रतिशत में बढ़लेगा ही, यही विश्वास है।

पृथ्य सदगुरुदेव जी का संकल्प भी यही है कि मैं पुनः उस आर्योंवंत का निर्माण करूँ जो सही अर्थों में पूर्ण प्रकृतिमय हों। और इसी लिए उन्होंने शिष्यों का निर्माण किया है, सूजन किया है, प्रेम से नहीं अपने प्रह्लादों से कि वे प्रकृति के आधारों को झेल सकें और प्रकृतिस्य साधनाओं को भी सम्पन्न कर सकें, जिनके माध्यम से प्रकृति का नये रूप से सृजन किया जा सके, प्रकृति और विश्व में नवीनता का रस संचार किया जा सके।

अवश्य ही ऐसे साधक होंगे जो ऐसा करना चाहते होंगे, वे अब छिप कर नहीं बैठें, प्रकृति पुरुष बनने की प्रक्रिया का शुभारम्भ करें। उन्होंने माध्यम से यह युग सही अर्थों में सत्यम् वापस बन सकेगा। और प्रकृति को विस्तारित करने की उन गृहतम साधनाओं को सम्पन्न किया जा सकेगा जो अब तक अधूरों ही रही हैं। अब नये काल में, नये प्रभात में यहाँ करना है, यही संकल्प है।

शक्तराचार्य ने पूरे भारतवर्ष में दूनकर एक ही बत कही कि संसार का सब कुछ मन्त्रों के आधीन है। विना मन्त्रों के जीवन गतिशील नहीं हो सकता, विना मन्त्रों के जीवन की उन्नति नहीं हो सकती, विना लक्ष्यना के सफलता नहीं प्राप्त हो सकती।

गुरु तो वह है जो प्रत्येक व्यक्ति को एक मन्दिर बना दे मन्त्रों के माध्यम से। वैष्णों देवी जाएँ और देवी के दर्शन करें, उससे नी श्रेष्ठ है कि मन्त्रों के द्वारा देवों देवी का भीतर स्थापन हो, उन्नर देहना पैदा हो जिरासे वह स्वयं एक पलता जिरासे मन्दिर बने, जहाँ सी वह जाएँ ज्ञान दे सके, चरना व्याप्त कर राके तथा अने याली पीड़ियों के लिए ज्ञान को गुरुदेवत रख सके।

जब मैं इंग्लैण्ड गया तो वहाँ मैं लाख-लेक लाख व्यक्ति इकट्ठे हुए, उन्होंने मैं स्वीकार किया कि मन्त्रों का ज्ञान प्राप्त होना चाहिये। उन्होंने कीर्तन किया, नगर कीर्तन के बाट मन्त्रों को सीखने का प्रयास भी किया, निरन्तर जप किया और उनकी आत्मा को शुद्धता, पवित्रता का भाव हुआ। मैंक्स भ्यूलर जैसे विद्वान् ने भी कहा है कि वैदिक मन्त्रों से बड़ा ज्ञान संसार में ही ही नहीं। उसने कहा कि इन विद्वान् हूँ और पूरा यूरोप मुझे भनता है, नगर वैदिक ज्ञान, वैदिक नन्त्रों के अने हमारा सारा ज्ञान अपने आप में तुच्छ है, बौना है। आईर्टीन जैसे वैज्ञानिक ने भी कहा कि एक ब्रह्मा है, एक नियंता है, वह मुझे वापस भारत में पैदा करे, रेखी जगह पैदा करे, जहाँ किसी योगी, ऋषि या येद नन्त्रों के ज्ञानकार के सम्पर्क में आ स्कृप्त, उनसे मन्त्रों को सीख सकूँ। उपने आप में सक्षमता प्राप्त करुँ और संसार के दूसरे दशों में भी इच्छा ज्ञान को पौलाऊँ।

गुरु वह है जो आपकी दरम्याओं को रन्झे, आपली तकलीफों को दूर करने ले लिए उस मन्त्र को समझाये, जिसके नाम्यन से तकलीफ दूर हो सके। मन्त्र जप के साथन से देवी सहायता को प्राप्त कर जीवन में पूर्णता रखना है। देवी सहायता के लिए जरूरी है कि आप देवताओं से परिचित हों और देवता आपसे परिचित हों।

परन्तु देवता आपसे परिचित हैं नहीं। इसलिए जो भगवान शिव का मन्त्र है, जो सरस्वती का मन्त्र है, जो लक्ष्मी का मन्त्र है, उसका नित्य जप करें और पूर्णता के साथ करें, तो निरवय ही आपके और उनके भी वृक्षों की दूरी कम होगी। जब दूरी कम होगी तो उनसे बह चीज़ प्राप्त हो सकेगी। एक करोड़पति से हजार सौ-हजार लप्य प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु लक्ष्मी अपने आपमें लक्ष्मीपति ही नहीं है, असंख्य धन का भण्डार है उसके पास, उससे हम धन प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु तभी जब आपके और उनके दीन की दूरी कम हो... और वह दूरी मन्त्र जप से कम ही सकती है। मन्त्र का तात्पर्य है — उन

शब्दों का चरण जिन्हें देवता ही समझ सकते हैं। मैं अपनी आपका इंशान की भाषा में या थीन की भाषा में भाष्य दृष्टे भी बताऊँ, तो आप नहीं समझ सकते। यह शाल भी नहिं करेंगे तो उसके दीस साल बाद भी समस्यार्थी सुलझ नहीं जायेंगे, क्योंकि उसका रास्ता भक्ति नहीं है, उसका रास्ता साधना है, मन्त्र है।

जो कुछ बोले और बोल करके इच्छागुरुकूल प्राप्त कर सकें वह मन्त्र है।

— पूज्यपाद सदगुरुदेव ■

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अग्रिम उंग है। इसके साधनात्मक शक्ति को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से रवीकार किया जाया है, कर्योंके इसमें प्रत्येक वर्ग का समर्थयाओं को हल सरल और शान्त रूप में समाहित है।

## गोरखशाली हिन्दी मारिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

# वार्षिक सद्बुद्धिमता

इस पत्रिका की वार्षिक सद्बुद्धिमता को प्राप्त कर आय पायेंगे  
अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

# गणपति यंत्र



अगवान गणेश सभी देवताओं में प्रथम पूज्य देव हैं। इनके द्विना कोई भी कार्य, कोई भी पूजा अधूरी ही मानी जाती है। समस्त विद्यों का नाश करने वाले विद्वनिनाशक गणेश की यदि साधक पर कृपा बनी रहे, तो उसके घर में ऋषि, सिद्धि जो कि गणेश जी की ही पत्नियाँ हैं, और शुभ-लाभ जो कि उनके के पुत्र हैं, का भी स्थायित्व होता है। ऐसा होने से साधक के घर में सुख, सौभाग्य, समृद्धि, मंगल, उम्भति, प्रगति एवं समस्त शुभ कार्य होते ही रहते हैं।

इस प्रकार का यंत्र आपने आप में अगवान गणपति का प्रतीक है, और इस प्रकार का यंत्र प्रत्येक साधक के पूजा स्थान में स्थापित होना ही चाहिये। बाद में यदि किसी प्रकार की कोई साधना के पूर्व गणपति पूजन करना हो, तो इसी यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर लेना पर्याप्त होता है। इस यंत्र का नित्य धूप आदि द्वारा करने की भी आवश्यकता नहीं है। मात्र इसके प्रबाह से ही घर में प्रगति, उन्नति की स्थिति निर्भृत होने लगती है। घर में इस यंत्र का होना ही अगवान गणपति की कृपा का धोतक है, सुख, सौभाग्य, शान्ति का प्रमाण है।

**यंत्र स्थापन विधि** – इस यंत्र को प्राप्त कर गणपति चित्र के सामने हाथ जोड़ कर 'गं गणपतये नमः' का मात्र दस मिनट जप करें और गणपति से पूजा स्थान में यंत्र रूप में निवास करने की प्रार्थना करें। इसके पश्चात यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। अनुकूलता हेतु नित्य यंत्र के समक्ष हाथ जोड़ कर नमस्कार कर दें।

यह दुलभ उपहार तो आप दाखिला का वार्षिक सद्बुद्धि उपले केली। मैंने, रिक्तेवार या सरजल लो बनाकर ही प्राप्त कर लकड़ते हैं। योदे आप दाखिला के दायरे नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सद्बुद्धि बनाकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड उपहार अक्षरों में भरकर हमारे पाला बैज डें, शेष कार्य हुम उठायेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at : —

वार्षिक सद्बुद्धिमता शुल्क – 195/- डाक रखर्च अलिरिट 30 / Annual Subscription 195/- + 30/- postage



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India.

Phone 0291-432209 Fax 0291-432010

# मीडिया भी सहयोगी है

क्या सन्देश दे रहे हैं समाचार पत्र, टी.वी. सीरियल, फिल्में और पुस्तकें  
आज के युग में?

**S**करसता न मनुष्य को प्रिय है, और न तो मनुष्य को बनाने वाले विद्याना को ही। परिवर्तन नगर का नियम है, युग परिवर्तन कोई ऐसा क्षण नहीं होता है कि ज्वालामुखी कटा, भूकम्प आया, आसमान से फूलों की वर्षा प्रारम्भ हुई और हो गया युग परिवर्तन। परिवर्तन तो अनुभव करने की चीज़ है, आस पास के वातावरण में, लोगों की सचियों और धारणाओं में, आचार-विचार में। और मनुष्य को अधिकांश अनुभव दो प्रकार से ही होते हैं – दृष्टि द्वारा या अवण द्वारा। आज के युग में व्यक्ति की अधिकांश विचारधाराओं, धारणाओं का नियंत्रण दृष्टि और अवण के सशक्त माध्यम तथाकथित मीडिया से ही संचालित हो रहा है। यदि रेडियो, टी.वी., समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकों की सामग्री का पिछले कुछ वर्षों में हुए परिवर्तन का भाँकलन करें, तो यह स्पष्ट हो सकेगा कि युग परिवर्तन हुआ है अथवा नहीं और यदि परिवर्तन हुआ है, तो क्या आने वाला समय आध्यात्म युग कहा जा सकता है?

जैसे जैसे मानवता भौतिकता की पराकाष्ठा तक पहुंच रही है, यह पहचास भी सुदृढ़ होता जा रहा है, कि जिन आध्यात्मिकता के जीवन केवल अपूर्ण हो नहीं, बल्कि आनन्द, रस, शान्ति, आङ्गाद से रहित है। बोस्वी शलान्वी के प्रारम्भ में विज्ञान के विकास के साथ-साथ ही उपर्युक्त कामना मामव जीवन को अधिक सुखमय, सुविधापूर्ण बनाने की और आज जब वह सब कुछ प्राप्त हो गया है, तो भीतर का खालीपन, अपूर्णता और भी अधिक गहरा गई है, यही एहसास मन को कचोटता है, कि मैतिकता की अंधा दीड़ में घमने प्रकृति से, ईश्वर से, आत्मानन्द से और स्वयं अपने आप से अपने को ही बहुत दूर कर लिया है।

शास्त्रद इसी भौतिकी खालीपन का परिणाम है कि

ज 'जबवरी' 2000 मत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान '23' ल

आज उसी विज्ञान की सहायता से अपने अंतीत को पुनः पहिचानने का प्रयत्न किया जा रहा है। जमीं कुछ वर्षों पूर्व जहां दूरदृशीन एवं टी.वी., बैनलों पर फिल्मी मनोरंजन एवं पाइचात्य कार्यक्रमों की कमी नहीं थी, वहाँ अब आध्यात्मिक आधार के वेद, पुराण, धर्म ग्रंथों नीति, आचार से सम्बन्धित कार्यक्रमों का मानो सैलाब ही आ गया है।

यों तो जब से भारत में फिल्मों का प्रवेश हुआ है, नभी से धार्मिक विषयों पर फिल्में बनती जाई हैं और आज तक की सबसे सफल फिल्म है – 'जय संतोषी मा' जिसने सभी रिकार्ड तोड़ दिये हैं।

परन्तु वह समय और या, तब पाइचात्य संस्कृति ने भारत को इस प्रकार नहीं जकड़ा था जैसा कि आज। इसलिये सुखद आश्चर्य होता है ऐसे कार्यक्रमों को वेखकर जो कि न केवल धार्मिक ग्रंथों के उच्छरणों पर आधारित हैं बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान की बारीकियों में भी प्रवेश करते हैं। इन कार्यक्रमों के देखने के बावजूद, मन्त्र, त्यग, ऊहेसा, शक्ति, भक्ति, भगवद्गीता, वैदीय कृपा, सदाचार, सानी एवं वृद्ध जनों का सम्मान, दान, तप और ऐसे ही अनेक गुण स्वतः ही दर्शक के हृदय पटल पर एक छाप छोड़ देते हैं। और सद्गुणों की यह छाप एक सामान्य दर्शक को एक बार सोचने पर विश्वाकर देती है कि जीवन की दिव्यता, जीवन की श्रेष्ठता पाइचात्य फैशन शो में नहीं, अपितु उसके स्वयं के भोतर छिपे अशाह आनन्द लोत को प्राप्त करने में है। वही रास्ता तो सदगुरुस्त्रेष्व ने प्रदान किया है आनन्द प्राप्त करने का, पूर्णता प्राप्त करने का ओ केवल और केवल उन्हीं ज्ञानी परम्पराओं से, योगिक पद्धतियों द्वारा प्राप्त हो सकता है जिसे साधना पथ कहते हैं, जिसे गुरु जान कहते हैं, जिसे गुरु मंत्र कहते हैं।

'शक्तिमान' टी.वी., सीरियल भले ही बच्चों के

मनोरंजन का कार्यक्रम हो परन्तु जिस प्रकार शक्तिमान का पहली बार परिचय कराया गया कि वह एक कुण्डलिनी जगरण से युक्त, वैगिक बल से आपूर्ण पुरुष है, उससे यह साफ़ झलकता है कि आज भारतीय समाज में कुण्डलिनी जगरण के प्रति उत्सुकता पुनः जाग्रत हो चुकी है।

क्या यही कारण नहीं है कि 'जय हनुमान', 'जय गंगा मेर्या', 'महाभारत', 'श्रीकृष्ण', 'अमर वित्त कथाएँ', 'उम नमः शिवाय', 'जय शिव शंकर', 'जे माता की' जैसे कार्यक्रम आज सर्व प्रदर्शित भारतीयों में से हैं। और उन्हें कोई हिन्दु ही नहीं परसन्द कर रहे, अपितु सभी धर्मों के लोग परसन्द कर रहे हैं, क्योंकि इन धारावाहिकों में धर्म का सन्देश नहीं है, इनमें हिन्दूत्व का सन्देश नहीं है, इनमें तो मानव मूलयों का सन्देश है, मनुष्य के अन्दर छिपी देव शक्तियों को झलक है, यही अध्यात्म है जिसका कि कोई रंग या धर्म नहीं होता। मनुष्य से प्रेम करना, जीवन में पूर्णता प्राप्त करना, अपने लक्ष्य को पाना, आविष्यक तो प्रत्येक मनुष्य के चिन्तन के विषय है, इसे किसी धर्म में नहीं बांधा जा सकता। इसीलिए सदगुरुदेव के जहां हिन्दू शिव्य है, वही सिक्ख, ईसाई, जैन और मुस्लिम शिव्य भी बनेंगे हैं। यही वास्तविक और प्रेरितकल आध्यात्म है जिसे सभी समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार कर सके, प्रत्येक व्यक्ति अपना लक्ष्य प्राप्त कर सके।

टेलियो पर प्रति सुनें तो वेदों से एवं अन्य महापुरुषों द्वारा कही गई सूक्तियां पढ़ी जाती हैं, टेलीविजन के अलग-अलग चैनलों पर संतों के प्रवचन का प्रसारण होता है, इन सबसे जन साधारण और समाज में वेतना व्याप्त हो रही है, जीवन के उच्चावधियों के प्रति ललक जाग रही है। समाचार वर्षों के रविवार संस्करण या विदेश संस्करणों में आध्यात्म विषयक लेख और संतों-महापुरुषों की अमर वाणियों अधिक से अधिकतर देखने को मिल रही है।

गीडिया के इस सुखद प्रभाव से जब व्यक्ति अपने हृदय में अद्वा उमड़ते हुए अनुभव करता है, और पूर्ण विश्वास से जब साधाना करता है, तो उसे सदगुरुदेव की बताई साधना पद्धतियों से उन्हीं देवी-देवताओं के, लक्ष्मी के, शिव के, हनुमान, विष्णु और राम के दर्शन हो रहे हैं, कृष्ण के दर्शन होने लगे हैं। ऐसे कई व्यक्ति हैं जो पहली बार साधना करते हैं, और सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

पिछले दशक में जहां व्यक्ति किलगी पविकाएँ लेने ही तुक स्टालों के चक्कर लगता था, अब वह ज्योतिष, अध्यात्म, मंत्र-तंत्र, आयुर्वेद और गुरु विद्या और सम्बन्धित पविकाएँ व

अ. 'जनवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-वंत्र विज्ञान '24'

पुस्तकों तलाशता है। यह अवश्य हो सकता है, कि उन सभी पविकाओं में यथार्थ और प्रामाणिक ज्ञान न मिल सके, परन्तु पिछले दो वर्षों में मंत्र-तंत्र विषयक पविकाओं की आई बाढ़ को देखकर इन्हां अवश्य सिद्ध हो गया है, कि समाज में साधनाओं के प्रति ललक पूर्ण रूप से जाग्रत हो चुकी है।

भारत में ही नहीं पूरे विश्व में नवा अनेकों भाषाओं में कुण्डलिनी पर इनी अधिक पुस्तकों का पाप चुकी है, क्या यह विश्व की भारतीय योग पद्धतियों में जागरूकता का ही बोतक नहीं? भारतीय आध्यात्मिक गूल के रूप 'ब्रह्म' (Brahma), 'मन्त्र' (Mantra), 'जनवतार' (Avatar) आदि अब अंग्रेजों के शब्दों में, अंग्रेजी भाषा के Paper, Book आदि जैसे ही शब्दों की भाँति ज्ञामिल कर लिये गये हैं। क्या यह भारतीय अध्यात्म विद्या की विश्व स्वीकृति नहीं है? एक और आश्चर्य की बात यह है, कि पूरे विश्व में बोस्टनी शान्तियों की भवांधिक कमाने वाली अंग्रेजी फिल्म 'Sixth Sense' (छठी इंद्रिय) है, जो कि आत्मिक शक्तियों पर आधारित फिल्म है।

क्या यह सब संकेत नहीं है कि नये युग की नीव रखी जा चुकी है? युग परिवर्तन के इस विशाल कार्य में केवल कुछ संत, कुछ महापुरुष, योगीजन, गुरु या शिष्य ही नहीं बरन पूरे समाज का ही योगदान होता है। निश्चय ही इन सीरियल निर्माताओं, इन पत्रकारों का, संतों का योगदान है और अपने अपने स्तर पर ठीक है। परन्तु जब भी कोई जिजासु किसी भी व्यक्ति, पुरुष, दो वी. सीरियल, पुस्तक, ग्रंथ या संत से भेदणा लेकर अध्यात्म पद्ध पर निश्चील होने का मानस बनाएगा, तो कुछ सीढ़ियां तो अवश्य चढ़ सकेगा, परन्तु पूर्णता के लिए उसे साजना पथ भर ही आना पड़ेगा, जिसका प्रामाणिक ज्ञान, क्रिया पद्धति केवल और केवल इस युग में भक्ति द्वारा नहीं साधना द्वारा ही सम्भव है, जिसका सूत्रपात केवल और केवल सदगुरुदेव डॉ नारायण रस श्रीमानी जी ने ही किया है।

यदि उन्होंने कहा कि "आने वाली शताब्दी के तुम ही नायक होगे, इन आध्यात्मिक युग की सबसे आगे वाली पंक्ति में तुम मेरे शिष्य हो खड़े विखाइ दोगे", तो मिल्या नहीं कठा है, बहु को वाणी मिल्या नहीं कुआ करती। जो स्तर, जो वेतना सदगुरुदेव के शिष्यों ने प्राप्त किया है, वह तो समय आने पर स्वन: ही जाएगा और ही भी रहा है, आने वाले समय में लाखों-लाखों लोग और नुडेंगे, करोड़ों की संख्या में जिजासु आएंगे और उन्हें समाधान, शान्ति इसी साधना मार्ग से मिलेगी, दीक्षा मार्ग से मिलेगी, सदगुरुदेव निखिल की अविरत कृपा से मिलेगी। निखिल वन्दे जगदगुरु!

# शिष्य धर्म

## इकलीखीं शान्ताल्दीं नं

**J**

ब संक्षमण की घटना घटती है, जब परिवर्तन की घटना घटती है, जब रूपोत्तरण होता है, तो समाज का ढांचा बदल जाता है, जन मानस को आचार संहिता में परिवर्तन आता है, दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है, जीवन मूल्यों और उद्देश्यों में परिवर्तन आता है।.., परन्तु फिर भी जो शिष्य है, उसके लिए प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है, कि जब युग परिवर्तन की किया घट रही है, तो इस नवीन शान्ताल्दी में शिष्य का धर्म क्या होगा और ये चार प्रश्न प्रत्येक शिष्य के मन में उठेंगे ही कि –

- वर्तमान परिस्थिति में और निकट भविष्य में शिष्य का गुरु के प्रति क्या धर्म होगा?
- उसे अब गुरु से क्या अपेक्षा रखनी चाहिए?
- अब उसे अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए क्या करना चाहिए?
- भौतिक उन्नति के लिए अब उसे किस प्रकार और कौन से प्रयास करने चाहिए?

वस्तुतः मात्र ये ही तो वे चार प्रश्न हैं, जो वर्तमान में किसी भी शिष्य के मानस में कीध सकते हैं। इनके अलावा अन्य कोई प्रश्न है ही नहीं।

समय के साथ जीवन मूल्य परिवर्तित अवश्य हो जाते हैं, कई चीजें होती हैं, जो बदलते हुए समय के साथ बदल जाती हैं, पर इसी परिवर्तनशील जगत में कुछ ऐसी भी चीजें होती हैं, जो शाश्वत रहती हैं, अपरिवर्तनशील...।

इसी प्रकार शिष्य का धर्म और उसके गुरु से सम्बन्ध सदा-सर्वदा के लिए अपरिवर्तनशील ही रहते हैं, समय के साथ वे और अधिक प्रगति ही होते हैं, स्थायी ही होते हैं,

उनमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती। शिवता तो पक भाव है गुरु के ही मानस शरीर से जन्मी अंश आन्माओं का। अंश का तो बस एक ही भाव होना है और वह यह कि अपने अंशी में ही मिल जाना है। यही समर्पण होता है।

शिष्य के पास श्रद्धा, सेवा और समर्पण के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता, न तो किसी प्रकार की अपेक्षा, न कोई कर्तव्य, न कोई उत्तराति या अवनति। वह तो बस गुरु के ही विशेष शरीर का एक अंग होता है, उसका यही भाव होता है कि जब गुरु जो उससे कराना चाहें, वे उससे करा लें। वह तो बस उपस्थित होता है, शेष कार्य तो गुरु ही करते हैं।

न तो उसका कोई धर्म होता है, न ही उसका कोई लक्ष्य, न ही कोई उद्देश्य। उसका तो अपना कुछ होता ही नहीं। वह तो बस एक पने की भाँति गुरु रूपी नदी में बह जाता है, और बस तब यह नदी की ही इच्छा होती है कि वह उसे किस दिशा में ले जाए।

सोचना, विचारना, अपेक्षा रखना, नहीं रखना, प्रयास करना, नहीं करना ये तो शिष्यता के पूर्व की बातें होती हैं, क्योंकि जब एक बार समर्पण हो गया, जब सौंप ही दिया तो शेष कुछ रह ही नहीं जाता। फिर तो नदी में उफान भी आएंगे, और कई नगह शान्त जल भी होगा, परन्तु पता दोनों ही स्थिति में नदी के ऊपर निर्भर है, वह यह नहीं सोचता कि मैं नूफान से बच जाऊं या शान्त जल में आनन्द से तैरूं। शिष्य के जीवन में भी फिर उसी तरह कुछ शेष रह नहीं जाता, अब आध्यात्मिक उन्नति ही या भौतिक उन्नति ही वह सब रखत, ही समझानुसार घटता जाता है। सुख भी आते हैं, तुख भी आते हैं, अहंकार भी आती है, और अनुकूलता भी मिलती

## सेवा धर्म अति कठोरा

‘गुरु के पुत्र गुरु ही कहलायेंगे, हाँ पिता मिखा दे अच्छी तरह से, यह पिता का धर्म है कि एक भी क्षण अकारण नहीं जाए। इसीलिए इनको तैयार किया है। इस लिये नहीं कि कोई वारिस बनाना है पीछे। परन्तु आपकी आंख मेरे प्रति जितनी जग्ह है उतनी इनके प्रति भी होनी चाहिये। मगर गुरु बनने में काटे ही काटे हैं। शिष्य बनने में आनन्द ही आनन्द है, शिष्य का अर्थ है – सेवा,

और सेवा धर्म अति कठोरा है’

— सदगुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली,  
जनवरी १, १९९८, शिविर प्रवचनांश

है, राह में काटे मिलते हैं तो गुलाब के फूल भी मिलते हैं –  
... कियाएं दोनों ही समान स्पष्ट से घटती हैं, परन्तु किर शिष्य विचलित नहीं होता, अङ्ग बना रहता है, क्योंकि उसे पता होता है कि वह तो मात्र एक पता है, कार्य तो नदी कर रही है, उसे बहा तो नदी रही है, उसका अपना कोई लक्ष्य तो है नहीं, जो नदी का लक्ष्य है वही पते का भी लक्ष्य होता है, जिन-जिन स्थानों से नदी गुजरती है, उन उन स्थानों से पता भी बहता हुआ चलता है।

जो शिष्य होता है, वह वह शिष्य ही होता है, एक शिष्य और कुछ बनने की सोच भी नहीं सकता, और कुछ बनने की सोचता है तो वह शिष्य हो ही नहीं सकता। शिष्यता की बात जब आती है तो हनुमान का नाम स्वतः ही समने आता है। एक शिष्य जो इन्हीं कुबाई पर पहुंचा कि भगवान की तरह पूजा जाने लगा, भगवान राम से भी ज्यादा हनुमान की पूजा हुई। राम, कृष्ण और अन्य सभी देवी-देवताओं के भी इन्हें मन्दिर नहीं होते, इन सब को जोहने के बाद जो संख्या बनती है, उससे भी ज्यादा मन्दिर हनुमान के हैं – एक सेवक के मन्दिर हैं... एक शिष्य के मन्दिर हैं।

इसका तात्पर्य यह हुआ, कि यदि ‘गुरुत्व’ से भी कोई उच्च कोटि की स्थिति है तो वह ‘शिष्यत्व’ है। जब जीवन का सीधप्रथ उवित होता है, तब व्यक्ति कुछ और नहीं बनता,

तब वह शिष्य बनता है, क्योंकि शिष्यत्व अपने आप में जीवन का अद्वितीय धर्म है, अद्वितीय पक्ष है।

शिष्यत्व भाव जब नहीं रहता और कोधनुक तामसी भाव होता है तब शरीर और मन दोनों ही रोग से यस्त लो जाते हैं, जिछुचिङ्गायन आ जाता है, लडाई-झगड़े होने लगते हैं, स्वार्थ बढ़ जाता है... और इसलिए हनुमान ने कहा कि मैं शिष्यत्व ही बना रहा चाहता हूँ। शिष्य के हृदय में केवल क्षमा और सेवा ही नहीं होती, साहस भी होता है, बल, कुछ, साहस, शीर्ष और अपराजेयता भी होती है। इन सबसे मिलकर जो बनता है वह शिष्यत्व होता है।

स्वामी विवेकानन्द भी अपने आप में एक दुर्धर्ष युवा सन्यासी के रूप में विश्व विश्वास दुष्ट और उन्होंने ध्रुमण कर विश्व के शिखर पर भारत की कीर्ति ध्वना आरोहित की, उन्हें बहुत सम्मान मिला, अपने गुरु से भी अधिक सम्मान मिला, अधिक स्थानि मिली।... परन्तु जब भी उन्हें कहीं सम्मान मिलता, तो उनका अन्तमें रो उठता कि ये सम्मान, ये तालियों की गडगडाहट जिसे मिलनी चाहिए थी, उसका हक्कदार नो कोई और ही है और वे ये उनके गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस। स्वामी विवेकानन्द विगतित होकर कह उठते थे – “जो सम्मान आज मुझे मिल रहा है, वह तो श्रीरामकृष्णदेव के जान की बजह से ही है, मैं तो मात्र उनका सन्देशवाहक ही हूँ। आज आप जिस व्यक्ति को अपने सामने देखकर हरित हो रहे, वो तो उस महापुरुष का, उस व्यक्तिका एक हिस्सा भी नहीं है, जिसके चरण में बैठ कर मैं विवेकानन्द बन सका हूँ। जब आप अनुमान नहीं लगा सकते कि वह व्यक्ति कितना उच्चकोटि का था, मैं तो उनका एक अंश मात्र ही हूँ।”

और जब विवेकानन्द ने यह आत कही, तो वे नहीं एक शिष्य बोल रहा था, गुरु का एक शिष्य बोल रहा था, वास्तव में शिष्य के लिए तो सम्मान जैसी, व्यक्तिगत उपलब्धियाँ जैसी कोई जीव ही नहीं होती, वह तो वह केवल और केवल मात्र गुरु का सन्देशवाहक, उनका माध्यम, उनका अंग भर ही होता है। शताब्दी बीसवीं हो या इक्कीसवीं शिष्य वही होता है, जो शिष्यता धारण किये रहे, उसी में उसकी पूर्णता है। और शिष्य वही है जो अपने पूर्ण जीवन को गुरु कार्यों में समर्पित कर, गुरु का सन्देशवाहक बनते हुए पुनः गुरु के ही विराट आस्तित्व में विलीन हो जाता है। और अपने ही विराट अस्तित्व में जन्मे उस शिष्य को गुरु भी अपने में विलीन कर लेते हैं। मात्र इतना भर ही होता है शिष्य का या गुरु का

परस्पर धर्म!

जो तत्र से मध्य खाता है वह मनुष्य ही नहीं है, वह साधक तो बन ही नहीं सकता। गुरु गोरखनाथ के समय में उत्तर अपने आप ने एक सापोत्कृष्ट विधि दी और समाज का प्रथेक वर्ग उसे अपना रखा था। जीवन की जाटिल समस्याओं को गुलजाने ने केवल तत्र ही लहायक हो सकता है। परंतु गोरखनाथ के शाव में मध्यनन्द आदि जो लोग हुए उन्होंने तत्र को एक पैकूत रूप दे दिया उन्होंने तत्र का तात्पर्य भोग, विनास, मध्य, मास, पद्मनाभ को ही नान लिया।

### मध्य मासं तथा मध्यस्य मुद्रा षेष्यबमेव च, मकार पञ्चवर्गित्यात् सः तत्रः सः तात्रिकाः

जो व्यक्ति इन पांच नकारों में लिपा रहता है वही तात्रिक है, मध्यनन्द ने ऐसा लड़ा उत्तरे कहा कि उसे मास, मछली और नदिरा तो खानी ही चाहिए, और वह निष्प रसी के साथ सनागम परता हुआ साधन करे। ये ऐसी गलत धारणा समझ में फैली कि जो ढौंगी थे, जो पाषण्डी थे, उन्होंने इस श्लोक को नहत्पूर्ण मान लिया और शाशब्द यीने लगे, धनोपार्जन करने लगे, और मूल तत्र से अलग हट गये, धूरता और छल मात्र रह गया। और समाज ऐसे लोगों से भय खाने लगे और दूर हटने लगे। लोग सीधे लगे कि ऐसा कैसा तत्र है? इससे सामाज का क्या हित हो सकता है? लोगों ने इन तात्रिकों का नान लैना बढ़ाया, उनका सम्मान कम्ला-बंद कर दिया, अपना दुख लो भोगते रहे परन्तु अपनी समस्याओं को उन तात्रिकों से कहने में कठाराने लगे, व्योंगि उनके पास जाल ही कई प्रकार की समस्याओं को मोल लेन था। और ऐसा लगाने लगा कि तत्र स्वानुज वे लिये उपयोगी नहीं हैं।

परन्तु देव तत्र का नहीं, उन पवध्रष्ट लोगों का रहा, जिनकी वजह से तत्र भी बदनाम हो गया। लही अर्ध में देखा जाए तो तत्र का तात्पर्य तो जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देना है।

जब हम भ्रत के नायन से देवता को उनुकूल बना राकते हैं तो किर तत्र की हमारे जीवन में कहाँ अनुकूलता रह जाती है? नत्र का तात्पर्य है देवता की प्राधना करना, हाथ जोड़ना, निवेदन करना, भोग लगाना, आरती करना, पूर्ण अगरबत्ती करना, पर यह आवश्यक नहीं कि लक्ष्मी प्रसन्न हो ही और हमारा दूर अक्षय धन से भर दे। तब दूसरे तरीके से यदि आपने हिम्नत है, साहस है, हौसला है, तो क्षमता के साथ लक्ष्मी की आँख में आँख डाल कर लाप खड़े हो जाते हैं और कहते हैं कि मैं यह तत्र साधना कर रहा हूँ, मैं

तुम्हें तत्र में आबद्ध कर रहा हूँ और तुम्हें हर हालत में सम्पन्नता देनी है, और देनी ही पड़ेगी। पहले प्रकार से स्तुति या प्राधना करने से देवता प्रसन्न न हो ही पड़ता है। भ्रत और तत्र दोनों ही पद्मतियों में साधना विधि, पूजा का प्रकार, व्यास सभी कुछ लगाना एक जैसा ही होता है, वस अतर दोता है, तो दोनों के तत्र विनास में, तात्रोक्त भ्रत अधिक तीर्णण ठोता है। जीवन की किसी भी विपरीत स्थिति में तत्र अचूक और अनिवार्य विधि है।

आज के युग में हमारे पास हृतना समय नहीं है कि हम बर-बर हाथ जोड़ें, बर-बर धी के दिये जलाएं, बर बर भोग लगाए, लक्ष्मी की आरती उतारते रहें और बोले सल-तक दरिद्री घने रहें, इसलिए तत्र ज्वादा महत्वपूर्ण है, कि लक्ष्मी बाध्य हो ही जाए और कन से कन समय में लफलता मिले। बड़े ही व्यवसित तरीके से भ्रत और साधना करने की क्रिया तत्र है। किन्तु ढूंग से भ्रत का प्रयोग किया जाए, साधना को पूर्णा भी जाय, उर दिया का नम तत्र है। और तत्र साधना में यदि लोई न्यूनता रह जाए, तो यह तो ठा सकता है, कि सफलता नहीं मिले परन्तु कोई विपरीत निरिण्य नहीं मिलता। तत्र के मध्यम से कोई भी गुह्यस्य वह सबकुछ हस्तगत कर सकता है जो

उसके जीवन का लक्ष्य है। तत्र तो अपने आप ने अल्पतर सौन्दर्य साधन का प्रकार

है, पद्मनाभ तो उसमें अवश्यक है ही नहीं। नलिक इससे परे हटकर जो गुर्ज

पलित्रमय सालिल तरीके, हर प्रकार के व्यसनों से दूर रहता हुआ साधन करता

है तो वह तत्र साधना है।

किसी भी माह के प्रदोष से प्रारम्भ की जाने वाली

# भगवान् सदाशिव

## की ८ तांत्रोक्त सिद्ध साधनाएँ

- जिन्हें देवता भी सम्पन्न कर धन्य हो गये

शिवो गुरुः शिवो देवः शिवो बन्धुः शसीरिणाम् ।  
शिव आत्मा शिवो जीवः शिवादल्लव्व इं चत् ॥  
(स्कन्दपुराण, ब्रह्मोत्तर लाइ, अ. ५)

अर्थात् भगवान् शिव ही गुरु हैं, शिव ही देवता हैं, शिव ही प्राणियों के बन्धु हैं, शिव ही आत्मा और शिव ही जीव हैं। शिव से भिन्न कुछ नहीं हैं। सदगुरु के साकार रूप की भी पूर्णता उनके शिव स्वरूप में ही होती है। अतः शिव की साधना, शिव की आराधना, उपासना से ही संसार के समस्त पदार्थ प्राप्त हो सकते हैं, समस्त कामनाएं पूर्ण हो सकती हैं। अन्य देवी-देवता तो फिर भी सीमित शक्तियों से बधे होते हैं, और अपनी शक्ति और क्षमतानुसार ही वरदान दे पाते हैं, परन्तु मात्र शिव ही ऐसे देव हैं, भगवान् ही जो सब कुछ प्रदान करने में समर्थ हैं। संसार के समस्त मन्त्र भगवान् शिव के डमरू निनाद से ही निकले हैं और उन्हीं शिव मन्त्रों को गुरु (जिन्हें शास्त्रों में शिव का ही रूप कहा जाया है) द्वारा प्राप्त कर साधना सम्पन्न की जाये तो सफलता मिलने में कोई संशय नहीं होता।

भगवान् शिव की कुरी हुड़ अमोध, अचूक फल प्रदान करने वाली कुछ साधनाएं जिन प्रस्तुत की जा रही हैं, जिन्हें साधक यदि शिव काल्य में सम्पन्न करें, तो निश्चित रूप से उन्हें शिव कृपा अनुभूत होती ही होती है। पूरे वर्ष में ३६५ दिन होते हैं, परन्तु कुछ विशेष दिवसों को शक्ति पूजा के लिए उपयुक्त माना जाता है, कुछ दिवसों को गुरु स्तुति के लिए श्रेष्ठ माना जाता है, कुछ दिवसों

### शिव ध्यान

वन्दे देवमुपापति सुरघुरं वन्दे जगत् कारणं,  
वन्देपनज्जग भूखणं मृगधरं वन्दे पशूनां पति ।  
वन्दे मूर्य शशांक वह्नि नयनं वन्दे मुकु नद प्रियं,  
वन्दे भृत जनाश्रयं च वरं वन्दे शिव शंकरम् ॥

‘जनवरी’ 2010 मंग-तंत्र-यत्र विज्ञान ‘३८’



बगलामुखी जनवती के रूप में सिद्ध दिवस समझा जाता है, इस प्रकार अलग अलग देवताओं के अलग अलग सिद्ध दिवस होते हैं, उन दिवसों पर यदि साधना सम्पन्न की जाये तो फल मिलता ही है। महाशिवरात्रि का दिवस भगवान् शिव का सिद्ध दिवस है।

महाशिवरात्रि के पहले पड़ने वाली माघी पूर्णिमा से बसंत ऋतु का प्रारम्भ होता है और इसी दिन से भगवान् शिव साधकों के लिये अपने पूर्ण वरदायक रूप में अवस्थित हो जाते हैं। माघी पूर्णिमा से लेकर फालग्नु मृग्नल पक्ष की अष्टमी तक का समय शिव कल्प कहलाता है। इन दिवसों में और शिवरात्रि में कोई मेव नहीं है, इन दिनों में की गई साधना निष्कल नहीं होनी, ऐसा भगवान् शिव ने स्वयं कहा है। इस बार ‘शिव कल्प’ दिनांक 19.2.2000 से लेकर 13.3.2000 तक है। यदि इन साधनाओं को शिव कल्प में प्रारम्भ न कर सके, तो इन साधनाओं को वर्ष के किसी भी माह के प्रवृत्ति में भी प्रारम्भ कर सकते हैं, प्रवृत्ति भी भगवान् शिव का प्रिय दिवस है।

आगे के पृष्ठों में भगवान् शिव की आठ तांत्रोक्त साधनाएं प्रस्तुत हैं, जिनमें प्रयुक्त मंत्रों का प्रयोग कर देवता भी अपने लक्ष्यों को पूर्ति कर सके, ये आठ साधनाएं हैं -

१. गौरीश्वर साधना - पूर्ण सौभाग्य, सौन्दर्य एवं समृद्धि देतु, तथा गृहस्थ कलेश निवारण देतु
२. इन्द्रेश्वर शिव साधना - सर्व पाप, दोष शमन देतु
३. भूतेश्वर शिव साधना - भूत-प्रेत, तंत्र बाधा निवारण देतु
४. सिद्धेश्वर शिव साधना - मनोकामना पूर्ति देतु
५. वृहस्पतीश्वर साधना - दोष, शिवदर्शन, गुरु कृपा देतु।
६. पिंगलेश्वर शिव साधना - रोग/शारीरिक व्याधि निवारण
७. महावग्नेश्वर साधना - शत्रु पर विजय/आत्मरक्षा देतु।
८. मुष्यमतेश्वर शिव साधना - कार्य सिद्धि देतु।

# गौरीश्वरशिवसाधना

-पूर्ण सौभाग्य, सौन्दर्य व समृद्धि  
हेतु, जिससे समस्त गृह क्लेश भी  
समाप्त हो जाते हैं।



लाश पर्वत पर एक बार भगवान शिव और पार्वती में बार्ता चल रही थी, कि भगवान शिव के मुह से पार्वती के श्याम वर्ण के लिये 'काली' शब्द निकल गया। 'काली' शब्द सुनकर देवी को बहुत दुःख हुआ और अपने रूप, रंग पर क्षोभ होने लगा। उसी आवेग में पार्वती प्रभास क्षेत्र में चली गई, वहाँ नाकर उन्होंने शिवलिंग की स्थापना कर तपस्या प्रारम्भ की। इसे जैसे तप बढ़ता गया, वैसे वैसे ही पार्वती का वर्ण उन्न्यत होता गया और धीरे-धीरे उनके सभी अंग गौरवर्ण एवं पूर्ण कान्तिमय हो गये। तब भगवान शिव प्रकट हो गये और देवी को अपने साथ बापर कैलाश लिवा गये और बोले जो इस गौरीश्वर शिवलिंग की साधना करेगा उसे सौन्दर्य, रूप, दीवन, सौभाग्य, धन, पेशवर्य और समृद्धि प्राप्त होगी।

गौरीश्वर शिव की साधना को स्वीकृता युक्त कोइ मी सम्पन्न कर सकता है। इसके सम्पन्न करने से यदि स्त्री है तो सौन्दर्य, रूप, लावण्य में आश्चर्यजनक निखार आता है, और यदि पुरुष है तो शरीर बलिष्ठ, हृष्ट-पुष्ट होता है, व्यतिलित में आकर्षण आता है। माता पार्वती लक्ष्मी का ही स्वरूप है, अतः उनके द्वारा प्रयुक्त इस साधना को करने से साधक के जीवन में आर्थिक रूप से तंगी नहीं होती। यदि गोनगर नहीं है रोजगार प्राप्त होता है, यदि व्यापार टीक से नहीं चल रहा है तो व्यापार में उन्नति होती है, आय के नये स्रोत प्राप्त होते हैं। घर में समृद्धि के सभी साधन-उपकरण उपलब्ध होते हैं।

इस साधना से व्यक्ति का सौभाग्य जागत होता है,

ऋग्वेद 'जब्दवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '29' व-

धर में क्लेश, अशांति, पति-पत्नी में कलह-झगड़े, मनमुटाव आदि समाप्त होता है। यदि पति-पत्नी के सम्बन्धों में वरार पह गई हो, अलग-अलग रहने तक की नीबत आ गई हो, तो इस साधना को एक आकर्षण प्रयोग मानकर सम्पन्न करना चाहिये। ऐसा करने से पति-पत्नी स्वतं द्वारा समिलकर समझीता कर पुनः प्रेमपूर्ण जीवन में संलग्न हो जाते हैं। गौरीश्वर साधना द्वारा पार्वती और शिव में पुनः मेल हुआ था।

इस साधना को 23.2.2000, 8.3.2000 अथवा किसी भी प्रदोष से प्रारम्भ किया जा सकता है। उत्तर दिशा की ओर मुख कर गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन कर गुरु मंत्र की एक माला जप जै। अपने सामने एक धातो में कुंकुम से एक बड़ा 'ॐ' बनाएं। 'ॐ' के मध्य में 'सदाशिव यंत्र' को रखें तथा 'ॐ' के बन्द्र बिन्दु<sup>1</sup> पर 'गौरीशंकर रुद्राक्ष' स्थापित करें। रुद्राक्ष का कुंकुम, अक्षत व सिन्धूर से पूजन करें। यंत्र का भा सांक्षेप पूजन कर धूप, दीप आदि जला दें। किर 'हरगोरी माला' से निम्न मंत्र की ११ माला जप ७ दिन तक नित्य करें—

गौरीश्वर शिव मंत्र

// हीं उ॒॒॒ नमः शिवाय हीं //

Hreem Om Namah Shivaay Hreeng

साधना समाप्ति होने के एक बाद कम से कम एक सप्ताह तक सभी सामग्री को पूजा स्थान में ही रखने दें, फिर बाद में उसे जल में विमर्जित कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

# इन्द्रेश्वर शिव साधना

-सर्व दोष पाप शमन हेतु



'नव पुराण' में विवरण आता है, कि महार्षि लक्ष्मण के पुत्र बृद्ध ने देवताओं के राजा इन्द्र को परास्त करने के लिये घोर तपस्या की। उसकी तपस्या देखकर इन्द्र को बहुत भय उत्पन्न हुआ और उन्होंने अपने बृद्ध से उसे मार डाला। परन्तु इसमें उन्हें ब्रह्माहत्या का दोष लग गया। जहाँ कहीं भी इन्द्र जाने, वहीं मदिरापान, अनाचार, हत्या, व्यथित्यार, पर एवं गमन होने लगता - यह सब ब्रह्माहत्या के दोष के कारण ही था। इन्द्र सम्पूर्ण जगत में धूम-धूम कर थक गये, परन्तु उन्हें कहीं शान्ति न मिल सकी।

इससे दुर्जी होकर इन्द्र ने रेवा शेत्र में पहुंच कर भगवान शिव को अपने तप से प्रसन्न किया। तब भगवान शिव बोले - 'मैं तुम्हारे द्वारा स्थापित शिवलिंग में सदा विश्वजान रहूँगा और जो भी इस शिवलिंग की पूजा करेग, उसे सभी महापातकों से मुक्ति मिलेगी।' बाद में इन्द्र ने अनंदा तट पर शिवलिंग स्थापित कर उसकी साधना की और ब्रह्माहत्या के पाप से मुक्त हुए।

जब देवताओं में भी पाप हो जाते हैं, तो मनुष्य से तो ही ही सकते हैं, होते ही हैं, स्वाभाविक भी है। परन्तु एक बात निश्चित है, कि जब तक इन पापों का, इन दोषों का शमन नहीं हो जाता है, तब तक जीवन हर प्रकार से अशान्त बना ही रहता है। प्रत्येक व्यक्ति ने नामे अनगाने में, इस जन्म में अथवा पूर्व जन्मों में कई ऐसे कार्य किये होते हैं, जिनमें अन्य आत्माओं को कष्ट अथवा क्लेश पहुंचा हो। ऐसे ही कार्य पाप कहलाते हैं, और जिन आत्माओं को कष्ट पहुंचने से पाप लगा है, जब तक उन आत्माओं का वर्चस्व है, तब तक वे पाप पीछा नहीं छोड़ते और रोगों के रूप में, अपभान के रूप में, निराशा के रूप में, दैन्य के रूप में, तनाव के रूप में, व्यक्ति के स्वयं के ही पाप सामने प्रकट होते रहते हैं और उसके जीवन को अस्त-व्याप्ति कर देते हैं।

इन पाप-दोषों का शमन दो प्रकार से किया जा सकता है - या तो उस आत्मा को प्रसन्न कर हिता जाए, जिसकी वजह से पाप लगा है, या दूसरा तरीका साधना का है, साधना के माध्यम से, तपोबल के माध्यम से प्राप्तिका प्रयास हो, जैसा कि देवराज इन्द्र ने किया था। साधक के लिये पहला कार्य यह होता है, कि वह

अपने जीवन का आंकलन करे और यह कूदने का प्रयास करे, कि क्या मैं सभी पाप-दोषों से मुक्त हो सकत हूँ और यदि नहीं हो सका हूँ, तो मैं 'इन्द्रेश्वर शिव साधना' सम्पन्न करूँगा जिससे मेरा जीवन भारी निष्पाप हो सके, निर्दोष हो सके, निष्कलंक हो सके और मैं उच्चतर साधनाओं में सफलता प्राप्त कर जीवन को पूर्णता दे सके, और सब बीं भी निकल सके तो मैं भी अपनी सभी कामनाओं को पूर्णता के साथ पूरा कर सकूँ।

यह एक सहायक साधना है, इस साधना की अनुभूति किसी परालीकिक दृश्यादि के रूप में तो नहीं होती, परन्तु जब कायों में आ रही स्कार्वटें समाप्त होने लगती हैं, मन शान्त होने लगता है, साधनाओं में सफलता मिलने लगती है, इष्ट में मन रमने लगता है, तो यही सब प्रमाण होता है, कि यह साधना बेकार नहीं गई है। पाप-दोषों की अधिकता ये सफलता किसी भी शेत्र में नहीं मिल पाती, इसलिये सर्वप्रथम इन्द्रेश्वर साधना सम्पन्न करनी ही चाहिये।

इस साधना को 6.3.2000, 13.3.2000 अथवा किसी भी प्रवेष से प्रारम्भ किया जा सकता है। अपने सामने गुरु चित्र एवं शिव चित्र स्थापित कर लें। दैनिक साधना विधि के अनुसार गुरु पूजन कर गुरु मंत्र की एक माला जप लें। फिर अपने सामने एक सफेद कपड़े पर काले तिल से एक त्रिकोण बना लें। त्रिकोण के मध्य में 'विष्व शिव यंत्र' को स्थापित कर दें। यंत्र का कुंकुम, अक्षत, बिल्व पत्रादि से पूजन करें। दहिने हाथ की मुँही में अक्षत के कुछ ढाने लेकर सर्व पाप दोष से मुक्ति का प्रार्थना करें, फिर तीन बाई मुँही को सिर पर से चुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। इसके बाव यंत्र के बाई और अक्षत की एक ढेरी बनाकर उम्म पर 'इन्द्रायण' को स्थापित कर दें। फिर 'इन्द्रेश्वर महादेव माला' से निम्न मंत्र की ८ माला अप '५ दिन तक नित्य करें -

इन्द्रेश्वर शिव मंत्र

॥ उम्म हौं दौं नमः शिवाय ॥

Om Hreem Hreem Namah Shivaay

साधना समाप्ति होने के पक्के बाद समस्त सामग्री को

किसी निर्जन स्थान में जमीन में जाकर दबा दें।

साधना समाप्ति पैकेट - 270/-

करता है, जल्दी के मार्ग में पहुँच होगा।" और उस पर भृंगारा।

विज्ञान का ज्ञान भौतिक वर्ग ले सकते ही जाला नहीं।

उच्चकोटि लाया जाए है, तो वह है कि इस को जो के तत्रों कोई व्य है कि उसको जाना ही नहीं।

है कि नहीं। इस साधना उनके लिये

की आ के ज

दशिष्ठ ने कात्यायनी को कहा - 'यदि तुम्हें जीवन में आनन्द प्राप्त करना है, सभी शोगों से मुक्त होना है, तिर्यौयनमय बने रहना है और सिद्धाभ्यम के नाम से पूर्णता प्राप्त करनी है तो तुम्हें मंत्र-तंत्र और यंत्र का सम्बन्ध करना होगा।' और कात्यायनी ने दशिष्ठ को पति नहीं गुण रूप में स्वीकार कर ऐसा किया और उपने जीवन को एक उच्चता पर पहुँचाया।

इसलिये जीवन में मंत्र-तंत्र-यंत्र का परस्पर सम्बन्ध है, इनके द्वारा ही जीवन ऊपर की ओर उठ सकता है। मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का प्रकाशन ही इसलिए किया है... कोई आदश्यकता नहीं थी, नगर जीवशब्दला इस बात की थी कि इस समय सारा संसार नीतिक व्यवनी में बद्ध हुआ है, और वशनों में बदले के कारण व्यक्ति अन्दर से छटपटाता रहता है, वह बाहर है मैं दुर्लभ हूँ मैं जल ले सकूँ मैं कुछ आगे बढ़ सकूँ मैं जीवन में बहुत कुछ कर सकूँ... नगर इलके लिये कोई रास्ता नहीं है, उसको कोई उपज्ञान नहीं है।

ऐसी रिष्टि में पत्रिका का प्रकाशन किया गया और इस पत्रिका में मंत्र-तंत्र और यंत्र तीनों का सम्बन्ध किया गया है। इसमें उच्चकोटि के नवों का विनाश दिया गया है। यह पत्रिका कैदत कागज के बोरे पन्ने नहीं है। यदि बजार से कागजों का एक बण्डल लाया जाय, तो वह भी रुपये में ज्ञान ही लकड़ा है, मार जब उन कागजों पर उच्चलिटि के भव और साधन विषय हैं जाती हैं, तो वह पुस्तक अमृत्यु हो जाती है। ज्ञान यो नूत्य के तराजू में नहीं तैला जा सकता, ज्ञान को हम बात से भी नहीं देखा जाता है कि इस पत्रिका का मूल्य पांच रुपये या एक्टीव रुपये है, ज्ञान का नूत्य तो अनन्त होता है।

इसलिये हमने इस एप्लिकेशन पत्रिका का प्रकाशन किया। इसके माध्यम से हम आने पूर्वजों के ज्ञान को, पूर्वजों के साहित्य को, जो लुप्त होता जा रहा है, जो सनातन होता जा रहा है, उसे सुरक्षित कर लकें, व्याकि कुछ समय और बैठ रखा, तो हम इन मंत्रों के तरों के बारे में कुछ जान ही नहीं सकेंगे। उन राष्ट्रों सुरक्षित रखने के लिये इस पत्रिका का प्रकाशन किया... इसके गीठ कोई व्यापार की आकृष्णा और इच्छा नहीं है, इसके गीठ जीवन का जोई ऐसा चिन्तन नहीं है कि इस पूर्वजों की थाती को, पूर्वजों के ज्ञान को सुरक्षित रख सकें।

और पेठले कई वर्षों से इह पत्रिका का प्रकाशन इस बात का प्रबन्ध है कि आज भी समाज में चेतना है, जो इस प्रकार का ज्ञान चाहती है। अगर नहीं चाहती, तो पत्रिका कभी की बन्द हो चुकी होती। ऐसे व्यक्ति हैं जो इस प्रकार की साधनाओं के लिये लालचित हैं, उनको इस प्रकार की साधनाएं देने के लिये, वे समग्रानुसार किस त्रिकार की साधनाएं करें। उनको नामांदर्शन देने के लिये ही इह पत्रिका वह प्रकाशन किया रखा है।

और सही कहूँ तो यह पत्रिका नहीं कलिग्राफी

जी श्रीमद्भागवद्गीता है, जिसका एक-एक पन्ना

आने वाले समय के लिये, आने वाली पीढ़ी

के लिये पश्चात् है, उच्चता तक ले

जाने की सोची है।

- पूज्यपाद

सदव्युक्तेच

"जलवरी" 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '3'

# भूतेश्वर शिवासाधना

**अ**

गवान विष्य का एक नाम 'भूतेश्वर' भी है। जब भगवान शिव को हम भूतनाथ कहते हैं, तो उसका अर्थ यह होता है, कि वे पञ्चभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से बने सभी प्राणियों के स्वामी हैं। ऐसी कई योनियां होती हैं, जिनमें पृथ्वी तत्व और जल तत्व विद्यमान नहीं होता है, इस कारण उनका कोई स्वून स्वरूप नहीं होता है।

ये इतर योनियां अपनी अतृप्त आकोशाओं एवं वासनाओं की पूर्ति के लिये प्रायः मनुष्यों को परेशान करती हैं। किसी व्यक्ति पर भूत आदि का प्रकोप हो जाने अथवा किसी घर में दुष्टलमा का वास हो जाने से भूत भोगी व्यक्ति का जीवन एकदम पशु समान हो जाता है, अस्त-व्यस्त हो जाता है, उसकी हरकतें, आवर्त, इच्छाएं एकदम बदल जाती हैं, अपानकीय हो जाती हैं। कई बार तो एक व्यक्ति के ऊपर सौ से भी ज्यादा आत्माएं देरा जमा लेती हैं, और उस व्यक्ति के शरीर के माध्यम से अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति अथवा मुक्ति का प्रयास करती है। इनका समाधान भगवान भूतेश्वर की साधना से किया जा सकता है।

इसके अलावा कई बार टोने-टोटके जैसी वृण्डि जियाओं को अपना कर कुछ घटिया लोग अच्छे भले सीधे-सादे लोगों को कुछ खिला-पिला देते हैं अथवा मृतादि प्रयोग करवा देते हैं। तंत्र के इन कुकूतों से उस भले-चंगे व्यक्ति का जीवन मरणतुल्य हो जाता है, अच्छा भला खाता-पीता धर लखवादी की कंडाएँ पर पहुंच जाता है। ईव्यविश्वा आजकल इस प्रकार के दुच्चे प्रयोग लोग आसानी से कर देते हैं, अथवा करवा देते हैं, यह निश्चय ही असामानिक, अनैतिक व निन्दीय कार्य है, परन्तु इसका समाधान भी तंत्र से ही हो



-भूत बाधा, प्रेत बाधा  
एवं समस्त प्रकार की  
तंत्र बाधा से मुक्ति हेतु

सकता है। तंत्र ही वह किया है, जिसके द्वारा जीवन को सूख्यवस्थित किया जा सकता है। भगवान भूतेश्वर की यह साधना इन सबका ही समाधान है।

इस साधना को 19.2.2000, 11.3.2000 या किसी भी प्रदोष से प्रारम्भ किया जा सकता है। वक्षिण विश्वा की ओर मुख्य कर गुरु वित्र एवं शिव वित्र का संक्षिप्त पूजन करें। इसके पहले काजल से अपने आसन के चारों ओर एक गोल घेरे के रूप में रक्षा चक्र बना लें। सम्मने

एक याली को काजल से रंग लें, उसके बीच में अक्षत की एक ढेरी पर 'तांत्रोक्त रुद्र यंत्र' को स्थापित करें, उसके दाईं ओर चावल की एक ढेरी पर 'कढ़कड़ा' स्थापित करें।

यंत्र का संक्षिप्त पूजन करें, तथा कढ़कड़ा पर 'ॐ नमः शिवाय' बोलकर सिन्धूर एवं तेल अर्पित करें। ताहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि आप अपुक व्यक्ति अथवा अमुक के घर से अथवा स्वयं के ऊपर से तंत्र बाधा, भूत-प्रेत बाधा छाने के लिये भगवान भूतेश्वर की साधना में गुरु कृपा से प्रवृत्त हो रहे हैं। ऐसा बोलकर जल को चारों दिशाओं में केंक दें। फिर 'भूत दामर माला' से निम्न मंत्र की ७ माला जप ७ दिन तक नियंत्र करें—

**भूतेश्वर शिव मंत्र**

// उ॒ ह्रीं ह्रीं एं ल्लमो ल्लदाय भूतान् त्रासद्य उ॒ एक्ट //

Om Hreem Ayeem Namoo Rudraye Bhootaan Traasady Om Phat

साधना के अंतिम दिन अर्थात् सातवें दिन मंत्र जप के बाद उपरोक्त मंत्र (अंत में स्वाहा लगाकर) बोलकर, अग्नि जलाकर सरसों के दानों से १०८ आड़तियां दें। बाद में किसी सोमवार को सभी सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

साधना समाप्ती पैकेट - 390/-

# सिद्धेश्वर शिव साधना

- मनोकामना पूर्ति हेतु



चीन काल में नर्मदा के किनारे वैत्य और दानव दोनों ही रहने थे। पहले तो सर्वत्र आनन्द था, परन्तु धीरे-धीरे दानवों की शक्ति अधिक हो गई, जिससे संतुलन बिगड़ गया और दोनों में संश्लम हुआ। अंत में देवगण पराजित होकर भगवान शिव की शरण में गये, यज्ञ के माध्यम से उनकी आराधना करने लगे। तभी ओकारेश्वर भगवान महादेव पाताल का भेदन कर 'ॐ' कारपूर्वक 'भूर्भुवः स्वः' – इन तीनों व्याहृतियों का उच्चारण करते हुए लिंग रूप में निकल पड़े। शरणागत वत्सल भगवान देवताओं से बोले कि तुम ओकारेश्वर शिवलिंग की यज्ञ के माध्यम से आराधना करो, तुम्हारा अभीष्ट पूरा होगा। और ऐसा करने से देवताओं के बल में वृद्धि हुई और दानव वह स्थान छोड़ कर गाग गये। ओकारेश्वर की साधना करने से साधक की मनोकामना पूर्ण होती है, ऐसा भगवान शिव का वचन है। इसी शिवलिंग को सिद्धेश्वर शिवलिंग भी कहा जाता है।

इस साधना को 6.3.2000, 13.3.2000 अथवा किसी भी प्रदोष से प्रारम्भ किया जा सकता है। उत्तर दिशा की ओर मुख कर, गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। अपने सामने एक पात्र में सफेद पुष्प का आसन देकर उस पर 'सदाशिव यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र के पीछे चावल की पांच डेरियां बनाएं और उन पर एक-एक सुपारी रखें – ये नर्मदा तट के मार्कण्डेय, अविमुक्त, केदार, अमरेश्वर एवं ओकारेश्वर शिवलिंग के प्रतीक हैं। इनका कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप आदि से पूजन करें। यंत्र का भी पूजन करें। यंत्र के आगे अक्षत का आसन देकर एक ढेरी पर 'सिद्धेश्वर शिवलिंग' स्थापित करें। दाहिने हाथ में कुंकुम, जल, अक्षत और पुष्प लेकर अपनी मनोकामना का उच्चारण करें और फिर उन्हें सिद्धेश्वर शिवलिंग पर चढ़ा दें। फिर 'शिव सिद्धि माल्य' से निम्न मंत्र की ८ माला जप ३० दिन तक नित्य करें – सिद्धेश्वर शिव मंत्र

// ऊँ श्री मनोकारितं देहि ऊँ ऊँ नमः शिवाय //

Om Shreem Manoakarishnam Dehi Om Om Namah Shivay

प्रत्येक दिन मंत्र जप के बाद किसी पात्र में थोड़ी लकड़ी लेकर अभि प्रज्ज्वलित कर लें, तथा उपरोक्त मंत्र के अंत में स्थाहा

ज्ञ 'जब्दवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '33' ॥



लगाकर धी से १०८ आहुतियां दें। बाद में कुछ भस्म लेकर सिद्धेश्वर शिवलिंग पर स्पर्श कराकर अपने ललाट पर लगायें। साधना समाप्ति होने के बाद कप में कम एक सप्ताह तक सभी सामग्री को पूजा स्थान में ही रहने दें, फिर बाद में उसे जल में विसर्जित कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट - 315/-

## शाधना शिविर

मंत्र-तंत्र और यंत्र का प्रयोग किस प्रकार से किया जाय कि जीवन में सफलता प्राप्त हो

इसके लिये पत्रिका का प्रकाशन तो किया ही है जरन्यु इसके साथ-साथ इनका प्रेषिटकल ज्ञान देने के लिये विभिन्न साधन शिविरों का अव्योग्यन भी किया है। और आप लोग जो साधना शिविरों ने भरे साधने होते हैं, वे अपने अप में पत्रिका का एक भाग हैं, यद्योंकि पत्रिका बोल कर सुना नहीं सकती कि उन मन्त्रों का उच्चारण किस प्रकार रोका दिया जाय? यह भी नहीं बता सकती कि इन धर्मों में देवता की स्थापन कैसे की जाती है? इस साधका प्रेषिटकल ज्ञान के बहुत से ही सम्बन्ध हैं।

और ये साधन विभिन्न लगाए ही उत्तरिये जाएँ हैं कि दाम जीवन में जो छुट्टी चाहते हैं, जो कुछ पूर्णता आप चाहते हैं, वह पूर्णता वहें भौतिक है, वह आध्यात्मिक है, आपको ज्ञान हो लके। यदि हम योग ग्रन्त हैं, तो रोम को समाप्त करने की क्रिया ज्ञावशयल है, उत्तरी की शादी नहीं हो जा सकती है, कर्जी बहुत हो गया है ये राज्य भय है या अन्य प्रकार की कोई समस्या है, उनके निराकारण के लिये ही नन्हों लो रचना हुई है। और उन गोपनीय मत्रों का सही ज्ञान तुम मुझ से ही प्राप्त हो सकता है, साधन विविध में ही ग्रान्त हो सकता है।

और मुझे प्रसन्नता है कि यिन्हें यहाँ में जितने मी साधना शिविर लाये, उनमें ज्यादा से ज्यादा पूरे भारतवर्ष से लोग एकत्र हुए। उन लोगों ने साधनार्थी में अनुभव किया कि वास्तव में ब्रह्मात्मज जीवन क्या है? उन्होंने अनुभव किया कि वास्तव में इस जीवन का अख्यां और उदारेश्वर क्या होता है? उन्होंने अनुभव किया कि वास्तव में नहीं न खेतने राजत होती है? उन्होंने वास्तव में समझा कि नव-तत्त्व क्या है? उन्होंने इस बात को समझा कि इन दीर्घों का लग्नपट क्या है? और सबसे बड़ी है? उन्होंने वास्तव में समझा कि जीवन में गुरु की नहसा वया होती है? गुरु के घरमें मैठकर उनके प्रदर्शनों को सुनन से विद्याना अनन्द और क्या अननुशिष्य होती है?

गुरु के चरणों में प्रहृष्ट सक्षमे तभी गुरु में जो विद्युत प्रवाह है, ज्ञान का, साधना का, चेतना का, यह प्राप्त हो सकता। वाक्य के मध्यम से भ्रंतों के मध्यम से। इसीलिए शिविरें जा, अध्योजन किया जाता है कि आप गुरु से उस विद्युत प्रवाह को प्राप्त कर, सक

यह तुम्हारा सीधाया है और मैं खुद तुमसे हँस्या कर रहा हूँ, तुम्हारे सीधाया से हँस्या कर रहा हूँ क्योंकि जिस बारान ऐसा हुआ था, टेण्ट के गोबे, डिजली के पर्यंत के गोबे बैठकर उच्चोटि की साधनाओं को, जिन दीक्षाओं को इतनी असानी से प्राप्त कर लेते हों, उन्होंने साधनाओं को बार करने के लिए मुझे रिमालय के चर्चे-चर्चे में कई-कई दिनों तक बिना खाए भी घूमना पड़ा था। निश्चय ही विद्याता ने आपको अधिक सीधाया प्रवान किया है कि आपको युक्त इतनी सहजता से सुलझ है, जो इस ज्ञान को बिना किसी परीका के, बिना किसी लसीटी के तर्के इतनी सहजित से दिये जा रहे हैं।

आज अमेरिका में होग मेण्टली टॉपर हो रहे हैं, वे भागते हैं दूसरे देशों की शरण में, मगर इस्ति तो साधन नहीं है। लल सकती है। ये साथाना शिटिर जिनमें आप भग ले रहे हैं, यह अपके जीवन को ... लौकिक जीवन को और आपके चर्माधिक जीवन को पर्याप्त देने में सहायता है तथा इनके मध्यम से ही आप जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।

- पञ्चपाव अद्यग्रुदेव

# बृहस्पतीश्वर शिव साधना

-पूर्ण आध्यात्मिक उन्नति, मोक्ष प्राप्ति, शास्त्र ज्ञान प्राप्ति, शिव दर्शन व गुरु कृपा प्राप्ति हेतु



हा के पीत्र आङ्गिरस समस्त शास्त्रों के ज्ञाता, वेदों के पारंगत थे, उन्होंने भगवान महादेव की तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और वर मांगने को कहा। आङ्गिरस बोले कि मैं तो आपके दर्शन से ही कृतकृत्य हो जया हूं, अब कोई कामना नहीं रही है। इस पर शिव ने कहा —

“तुमने महान तप किया है, तुम इन्द्र आदि सभी देवताओं के गुरु होओगे तथा सभी श्रद्धों में पूज्य होओगे और ‘बृहस्पति’ नाम से पुकारे जाओगे। तुम बड़े वक्ता और विद्वान होओगे, तुम्हारी या तुम्हारे द्वारा जो मेरी अर्चना करेगा, वह तुम्हारे समान ही विद्वान एवं श्रेष्ठ वक्ता बनेगा।”

तबनन्तर बृहस्पति को देवताओं का आचार्य पद प्राप्त हुआ और वे स्वर्गलोक के भवीच्च पद पर आसीन हुए। धनवत्, रघु बल से भी अधिक श्रेष्ठ ज्ञान बल है। इस ज्ञान को,

**शिव साधनाओं को सम्पद्ध करने समय वदि कुछ लघु सूत्रों का पालन करें, तो सफलता अधिक सम्भावित हो जाती है —**

१. साधना काल में नित्य मंत्र जप के बाद धी का दीपक जलाकर शिव आरती सम्पद्ध करें।
२. शिव यंत्र पर शिव ध्यान मंत्र बोलकर बोल पत्र छारें।
३. ‘ॐ नमः शिवाय’ मंत्र बोलते हुए मात्र एक शिव नित्य दुधयुक्त जल धार को शिवलिङ्ग (किसी भी शिवलिङ्ग पर) पर चढ़ावें।
४. प्रातः उठते समय एवं रात्रि को शयन से पूर्व ५ या ११ बार ‘ॐ नमः शिवाय’ मंत्र का उच्चारण करें।

समस्त शास्त्रों के ज्ञान को, आध्यात्मिक सूक्ष्मताओं को जानने वाले ज्ञानी की सर्वत्र पूजा होती है — ‘विद्वान सर्वत्र पूज्यते’। बृहस्पति की शिव साधना से व्यक्ति की पूर्ण आध्यात्मिक उन्नति होती है, मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है और यदि पूर्ण श्रद्धा से साधना सम्पन्न कर ली जाये तो भगवान शिव के परोक्ष-अपरोक्ष दर्शन भी सम्भव होते हैं। बृहस्पति की यह साधना करने से गुरु कृपा भी प्राप्त होती है, क्योंकि बृहस्पति गुरु के ही रूप हैं।

इस साधना को 24.2.2000, 9.3.2000 अथवा किसी भी प्रदोष से प्रारम्भ किया जा सकता है। इस साधना को प्रातःकाल ही सम्पन्न करना चाहिए। उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख कर, गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संस्कार पूजन करें। गुरु मंत्र की एक माला अवश्य जप करें। फिर अपने सामने एक धात्री में कुकुम से गुरु मंत्र अंकित करें। इसके ऊपर पुष्प का आसन देकर ‘तांत्रोक्त रुद्र यंत्र’ को स्थापित करें। यंत्र की दाईं ओर पुनः पुष्प का आसन देकर ‘गुरु गुटिका’ रखते हुए बृहस्पति की स्थापना करें। फिर ‘चैतन्य माला’ से नित्य मंत्र की ७ माला जप १६ दिन तक नित्य करें —

**बृहस्पतीश्वर शिव मंत्र**

// ॐ श्री नमः शिवाय ॐ श्री //

Om Shreem Namah Shivay Om Shreem

आठवें दिन मुद्रिका को हाथ में अथवा गले में धारण कर लें। साधना समाप्ति होने के बाद कम से कम एक सप्ताह तक अन्य सामग्री को पूजा स्थान में ही रहने दें, फिर बाद में उसे जल में विसर्जित कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट - 240/-

ज 'जलवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '37'

# पिंगलेश्वर शिव साधना

सर्व दोन एवं आदीरिक व्याधि निवारण हेतु

एक बार अभिषेक कई रोगों से ग्रस्त हो गये, कोई भी उपाय लाभ न हो सका, रोगों से उनकी आँखें पीली पड़ गईं। रोगों से छुटकारा पाने के लिए वे महादेव की आराधना करने लगे। देवताओं ने भी प्रार्थना की कि अग्नि दृग् लोगों के मूल हैं, वहीं इत्यादि दृग् लोगों को यज्ञानि में हाले गये हृविष्याज्ञ-सामग्री के रूप में मोजन मिलता है। इनका रोग दूर कर हम सब पर भी कृपा कीजिये। देवताओं की प्रार्थना और अग्नि की तपस्या से भगवान् शिव ने पिंगलेश्वर के रूप में उनके सभी रोगों को भस्म कर दिया और कहा कि मुझे पिंगलेश्वर रूप में भजने से सभी रोग एवं दैन्य का नाश होगा।

मृत्यु पर भी विजय दिलाने वाले भगवान् महामृत्युनय अर्थात् शिव यदि रोगी पर भी विजय दिला दें, तो इसमें आश्चर्य कैसा? कुछ दिन तक नियमित रूप से शिव की पिंगलेश्वर साधना करने से रोग शान्त होते हैं और स्वास्थ्य लाभ होता है। रोग शारीरिक भी हो सकते हैं, मौनसिक भी हो सकते हैं, घड़ियड़ापन, द्वीन भावना, अपराधबोध, उत्साहहीनता आदि मानसिक रोग ही हैं। यदि कोई रोग नहीं है, और इस साधना को सम्पन्न कर लिया जाता है, तो भी इससे रोगों के प्रति एक सुरक्षा कवच प्राप्त होता है।



इस साधना को 25.2.2000, 10.3.2000

अथवा किसी भी प्रदोष से प्रारम्भ किया जा सकता है। मुरु चित्र एवं शिव चित्र के संक्षिप्त पूजन आदि के बाद एक बालों में महामृत्युनय मंत्र को अंकित करें—

ॐ ऊर्जम्ब्रह्म वज्रमहे तुजनिधि पुष्टिवर्धनं ॥

उवलिक्षित वन्धनाल मृत्युमुर्द्धीय मामृतात् ॥

मंत्र के ऊपर 'महामृत्युनय यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र का कुंकुम, अङ्गत, बिल्व पत्रादि से पूजन करें। यंत्र के दाईं ओर दो बस्तियों बाला दीपक जला दें तथा बाईं ओर 'पिंगलाश' स्थापित करें। फिर 'आरोग्य सिद्धि माला' से निम्न मंत्र की ७ माला जप १३ दिन तक नित्य करें—

पिंगलेश्वर शिव मंत्र

॥ उ॒ हौं हौं ज्व॑ ल्ल॒ न्मः शिवाय ॥

Om Breem Gleem Namah Shivaay

साधना समाप्ति के बाद किसी सोमवार को समस्त साधना सामग्री जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 430/-

# तांत्रोक्त शिव साधना - ७

27.2.2000, 12.3.2000, या किसी प्रदोष से

# महाकालेश्वर साधना

शत्रुओं पर विजय एवं आत्म दक्षा हेतु

भगवान् शिव का यह स्वरूप अपने आपमें पूर्ण क्रोधमय स्वरूप है। उनके इसी क्रोध और प्रचण्डता से साधक के शत्रु भयभीत एवं निस्तोज हो जाते हैं। भगवान् महाकाल अपने साधक की हर संकट से रक्षा करते हैं, खतरे की बढ़ी में उसकी सामाजी खतरों से रक्षा करते हैं। यदि शत्रु आपकी नान के पीछे पड़ गये हों, तो भी इस प्रयोग से उनकी मति फलट जा सकती है और वे शान्त हो जाते हैं। किसी प्रकार कोई असामियक दुर्घटना नहीं होती। इस प्रकार की साधना ऐसे रक्षा कर्तियों को अथवा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अवश्य करनी चाहिये, जिनके न चाहते हुए भी कई शत्रु उत्पन्न हो ही जाते हैं।

इस साधना को 27.2.2000, 12.3.2000 अथवा किसी भी प्रदोष से प्रारम्भ किया जा सकता है। उत्तर दिशा की ओर मुख कर, मुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। अपने सामने आसन पर काले तिल की एक ढोरी पर 'तांत्रोक्त रुद्र यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र की चारों दिशाओं में दिशाल 'बनायें। यंत्र के ऊपर 'महाकाल मुद्रिका' को स्थापित करें। फिर 'तंत्र सिद्धि माला' से निम्न मंत्र की ३ माला जप ७ दिन तक नित्य करें—

महाकालेश्वर शिव यंत्र

॥ उ॒ हौं सः पालय पालय सः वूं उ॒ ॥

Om Joom Sah Paalay Paalay Sah Joom Om

आठवें दिन मुद्रिका की हाथ में अथवा गले में धारण कर लें। साधना समाप्ति होने के बाद कम से कम एक सप्ताह तक सभी सामग्री को पूजा स्थान में ही रखने दें, फिर बाद में उभे जल में विसर्जित कर लकड़े हैं।

साधना सामग्री पैकेट - 230/-

ज 'जनवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '३९'

# पुष्पदत्तेश्वर शिव साधना

- सर्व कार्य सिद्धि हेतु

**G**

न्थवराज पुष्पदत्त भगवान शिव की अर्चना के लिये नित्य अदृश्य रूप में एक राजा के बर्गने से जाकर सुगन्धित पुष्प तोड़ कर लाते थे। राजा ने कासी छानबीन की, कि पुष्प कौन ले जाता है, परन्तु पता न चल सका। अत मैं यह निष्कर्ष निकला, कि कोई अदृश्य होकर इस उपवन से फूल ले जाता है। इसके समाधान के लिये राजा ने उपवन के चारों ओर 'शिव निर्माल्य' फैला दिया, जिससे उसे लांघते ही अदृश्य व्यक्ति की अदृश्य रक्ति क्षीण हो जाये और वह विश्व जाये। अगले दिन पुष्पदत्त ने जैसे ही फूल तोड़ने के लिये शिव निर्माल्य को लांधा, वैसे ही मालियों ने उन्हें वेख लिया और पकड़ कर राजा के कारागार में डाल दिया।

जब कारागार में पुष्पदत्त को पता लगा कि उन्होंने भगवान शिव के निर्माल्य को लांधा है, तो उन्हें अपराध बोध हुआ, उन्होंने शिव को प्रसन्न करने के लिये कारागार में ही शिव की उपासना की, जिससे भगवान प्रकट हुए और उन्हें मुक्ति मिली। उन्होंने 'पुष्पदत्तेश्वर शिवलिङ' की स्थापना भी की। पुष्पदत्त प्रणीत शिव साधना करने से साधक के सभी कार्य सिद्ध होते हैं, यदि किसी कार्य में कोई स्कावट आ रही हो, तो वह समाप्त हो जाती है — जैसे कि पुरी का विवाह नहीं हो पा रहा हो, किसी योजना के क्रियान्वित होने में बार-बार विघ्न उपस्थित हो रहे हैं, या किसी भी कार्य को आपने हाथ में लिया हो और आप उसमें पूर्ण सफलता चाहते हों, प्रमोशन नहीं हो रहा हो, मुकदमे में सफलता नहीं मिल रही हो, किसी प्रकार की कोई राज्य बाधा या सरकारी अहंकर से आपके कार्य रुक रहे हों, कोई धन आपका कहीं अटका हुआ हो, आदि।

इस साधना को 22.2.2000, 7.3.2000 अथवा किसी भी प्रदोष से प्रारम्भ किया जा सकता है। उत्तर दिशा की ओर मुख कर गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। किसी बाली में सुगन्धित पुष्पों से स्वास्थ्यक का निर्माण करें, उस पर 'तांत्रोक्त रुद्र यंत्र' को



स्थापित करें। यंत्र की चारों दिशाओं में '४ पुष्पदत्त रुद्राक्ष' स्थापित करें। यंत्र एवं रुद्राक्ष का कुंकुम, अष्टत, धूप, दीप-आदि से पूजन करें। वाञ्छो हाथ में एक पुष्प लेकर किस कार्य की पूर्णता के लिये यह साधना कर रहे हैं, उस प्रयोजन की बोले और फिर उस पुष्प को यंत्र पर चढ़ा दें। फिर 'पुष्पदत्तेश्वर माला' से निम्न मंत्र की ११ माला जप ७ दिन तक नित्य करें —

पुष्पदत्तेश्वर शिव मंत्र

// उ॒ ह्र॑ हृ॒ हृ॒ कार्य सिद्धि लम् शिवाय //

Om Hreem Hrour Kaary Siddhim Namah  
Shivay

साधना समाप्ति होने के एक बाद कम से कम एक सप्ताह तक सभी सामग्री को पूजा स्थान में ही रहने दें, फिर बाद में उसे जल में विसर्जित कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट - 210/-

# आयुर्वेद सुधा

किसी भी साधना में साधक के लिये जिस प्रकार मन की एकाग्रता आवश्यक होती है, उसी प्रकार शरीर के उत्तम स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद शास्त्र की उपयोगिता है। शिवरात्रि सन्निकट होने से शिव को प्रिय बेल की आयुर्वेदिक उपयोगिता पर एक साधक से प्राप्त सूत्र दिये जा रहे हैं। इसके अलावा आयुर्वेद ग्रंथों में दिये शीत ग्रन्थ ने सौन्दर्य वृद्धि के कुछ अनुभूत उपाय भी दिये जा रहे हैं—



लवक्षों को प्रायः धार्मिक स्थानों में और विशेषकर भगवान शिव के उपासना स्थलों पर लगाने की भारत में प्राचीन काल से परम्परा है। बेल का वृक्ष जितना पुराना हो, उसनी ही उसकी महत्ता बढ़ जाती है। वसंतऋतु के अंत में वृक्ष पर नये पते आने लगते हैं और शीष्म में वृक्ष कूलों से पर जाता है तथा वातावरण को सुगन्धित कर देता है। यदि घर के ओरगन, द्वार या घर के बाहर बेल का वृक्ष लगा दिया जाए, तो उससे स्पृश कर आने वाली हवा स्वास्थ्य के लिए विशेष हितकारी होती है।

बेल के पते तीन-तीन, चार-चार या कमी-कमी पाँच-पाँच के गुच्छे में लगते हैं। बेल का फूल सफेद तथा सुगन्धपूर्ण होता है। बेल का फल प्रायः गोलाकार कड़े छिलके वाला, स्वाविष्ट, मधुर और सुगन्धधुक्त, रुचास्त्रवर्धक तथा अरोग्यकारक होता है। बेल के फल और पते भगवान शिव को अन्त्यंत प्रिय हैं, और यिव पूजन में खिलव पत्रों का अत्यन्त महत्व है, परन्तु इसके औषधीय गुण भी कम नहीं हैं।

## बेल के स्वास्थ्योपयोगी गुण

१. धाव कैसा भी हो, खिलवपत्र को जल में पकाकर, उस जल से धाव को धोने के बाद ताजे पत्तों को पीसकर धाव पर बांध दीजिये। इससे बहुत एवं मवाद दोनों का शमन होता है तथा धाव सूखने में शीघ्रता होती है।

२. पके बेल का गूदा, डमली और मिश्री को जल में मस्तन कर, छान कर शर्वत तैयार कर लें। इसके प्रातः काल सेवन से शारीरिक दाह, अनिसार, मृद्य का पीलापन, मिवलाहट, स्फूर्ति का अभाव आदि दोष शान्त हो जाते हैं।

३. बेल की पत्ती का रस योहो काली मिर्च के चूर्ण में

मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करें। इससे पीलिया, सूजन एवं कब्ज में आराम मिलता है। बेल के पते का रस यों भी किसी भी प्रकार की मेट की गर्मी या हाजमे सम्बन्धी रोगों में लापदायक होता है। बच्चों को होने वाले दस्त में एक चम्मच बेल के पत्तों का रस देने से आराम मिलता है।

## बेल के पते से इस निकालने की विधि

बेल के पत्तों को रात के अंधेरे में तोड़ें एवं अंधेरे कमरे में ही इसे पीसकर इसका रस निकालें। आवश्यकता होने पर लाल रंग के बल्ब की रोशनी का प्रयोग कर सकते हैं। बेल के पते से रस निकालने के लिए उसमें पानी नहीं मिलाना चाहिए। यद्यपि इस प्रकार पत्तों से बहुत अल्प मात्रा में रस निकलता है और कठिन भी है परन्तु इसका लाभ बहुत अधिक होता है।

४. खिलव वृक्ष के भीतर की छाल १० तोले मोटी-मोटी कूट कर आधा किलो गोद में ढालें, इन्हानुपार मोठा मिलाकर प्रातः और सायकाल प्रयोग करें। इससे हृदय की अधिक घबराहट, निद्रा एवं मानसिक तनाव में राहत मिलती है। कुछ समय तक नियमित सेवन करना चाहिये और साथ ही वायु कारक प्रवार्थ से भरडेन करना चाहिये, लाभ होगा।

५. इवेत प्रदर और रक्त प्रदर से बचने के लिये बेल के पत्तों का प्रयोग महिलाओं के लिये गुणकारी है। बेल के पत्तों को पीसकर योड़ा जोश मिलाकर दिन में दो बार सेवन करने से लाभ मिलता है।

६. नेत्रों का दुखना, नेत्रों का लाल हो जाना, कीचड़ आना आदि व्याधियों में पत्तों को पीसकर आंख बंद कर उसके ऊपर बोधना हितकारी होता है।

७. बेल का मुरब्बा अतिसार और खून मिले दस्तों

पर प्रभावशाली किया दिखाता है। आंतों के घावों को अच्छा करने में मुख्या बड़ी लाभकारी है।

८. बेल के ताजे फल का गूदा कवालचीनी के चूर्ण में मिलाकर ताजे दूध के साथ पिलायें तो उपदंश में लाभ होता है।

९. बेल के गुदे में शक्कर मिलाकर नित्य सेवन करने से रक्त के विकार समाप्त होते हैं व रक्त की शुद्धि होती है।

१०. बेल के कोमल पत्तों को किसी निरोगी गाय के मूत्र में पीस लें। पिसी वस्तु से चार गुना सरसों के तेल और तेल से चार गुना बकरी का दूध, इन सभी को मिलाकर हल्की अन्नि पर जलीय अंश उड़ने तक पकावें। इसके बाद नीचे उतार कर शीतल हो जाने पर सुरक्षित रख दें। यह तेल कान के रोगों में लाभकारी होता है, बहरापन, कान में सांघर्ष-सांघर्ष

की आवाज आना आदि व्याधियों में लाभ मिलता है। इस तेल की कुछ बूंदों को दिन में तीन बार कान में डालना चाहिये।

११. बिल्ब के पत्तों का अथवा बिल्ब के पत्ते के रस का नित्य सेवन करने से काम वासना अधिक उद्देशित नहीं करती है और ब्रह्मचर्य बालन में दृढ़ता मिलती है।

बेलपत्र का कई आयुर्वेदिक औषधियों में प्रयोग होता है, इसके साथ ही एक अनोखा तथ्य जो बेल के वृक्ष के साथ जुड़ा है वह यह कि ब्राह्मपुर (नेपाल) में प्राह दस वर्ष बाद एक अनोखा समारोह होता है। इसमें कन्याओं का सामृद्धिक विवाह बिल्ब से कराया जाता है। मान्यता है कि कुमारी कन्याओं का पवित्र बेल से विवाह करने पर बाद में उसे जीवन में वैधव्य दुर्घट देखने को नहीं मिलता।

## शीत कृतु में सौन्दर्य

### फूलों पर पड़ी ओस का प्रयोग करें

प्रातः सूर्योदय के समय किसी बगावे में जाकर छोटे-छोटे पौधों पर पड़ी ओस की बूंदों से किसी स्वच्छ रुमाल को भिगो लें। इस भीगे रुमाल को धीरे-धीरे चेहरे पर मालिये। चेहरा गुलाब की तरह खिल उठेगा। सदियों में इस रुमाल को घर में लाकर और गर्म कमरे में बैठकर इस ओस भीगे रुमाल से चेहरे की धीरे-धीरे मालिश करें। इस प्रकार फूलों, पत्तियों पर पड़ी ओस मुख पर मलने से आप स्वयं एक सुखद ताजगी का ऊनुपव करेंगे।

### नींबू का रस अत्यंत लाभकारी है

नींबू के रस में रोमकूपों को साफ कर उनमें भरे मैल को निकालने की विलक्षण क्षमता है। नींबू के प्रयोग से त्वचा स्वच्छ, सुन्दर, अधिक कांतिमान बन जाती है। नींबू का रस, ग्लासरीन और गुलाब जल तीनों को बराबर मात्रा में मिलाकर एक रस कर लें। इस लोशन को प्रतिदिन रात सोने से पूर्व चेहरे पर हल्के-हल्के मलने से चेहरा रेशम के समान कोमल और सुन्दर बनता है। चेहरे के दाग, कील, छाइयों, मुँहासे दूर होकर मुखमण्डल की रंगत निखरती है। पन्द्रह-बीस दिन के प्रयोग से कील मुँहासे दूर हो जाते हैं तथा चेहरा पुलायम और साफ हो जाता है।

### आजट का रस सौन्दर्य की वृद्धि करता है

गाजर तीन भाग, टमाटर दो भाग, चुकन्दर एक भाग लेकर उनका रस निकाल कर पन्द्रह दिन तक नित्य

आधे गिलास रस का सेवन करें। इस प्रकार के रस का सेवन दिन में तीन-चार बजे करें, तथा इसके आगे पीछे एक घण्टे तक कुछ भी न खाए-पिए। इससे चेहरे की झूरियाँ, छाइयाँ, दाग दूर होने लगते हैं तथा चेहरा सुन्दर और लाल होने लगता है। योदे पेट में कोडे हों तो भा यह रस लाभकारी भिन्न होता है। अग्न्लरोग (ऐमिडिटी) में भी यह रस लाभकारी होता है।

### दुग्ध स्वान से त्वचा स्विभव होती है

आधा कटोरी कल्पे या गुनगुने दूध में एक स्वच्छ रुई का टुकड़ा भिगो लें। चेहरे, भर्व, हाथों, शरीर के सभी अंगों पर पांच-दस मिनट तक रुई को बार-बार भिगो कर नर्मी से फेरिये। ओस मिनट बाद ठण्डे या गुनगुने पनी से धो दालें। इस प्रकार के तुश्य स्वान से त्वचा स्विभव बनती है तथा मुँहासे, दाग-धब्बे, झूरियाँ, खुरदुरापन दूर होता है और चेहरे की काति बढ़ती है।

### शीत कृतु में त्वचा का रंग बिल्कुलिये : उबटन

६७ श्राव गेहूं या जी के छने हुए आटे में चौथाई चम्पच बारीक पिसी हन्दी, एक चामच लिन या सरसों का तेल और आवश्यकतुनसार बानी मिलाकर गाढ़ा लेप या उबटन तैयार कर लें। इसके बाद पूरे शरीर पर उबटन का लेप करें। योदा सूखने पर या दस मिनट बाद इसे हबेली से रंग दें कर मैल सक्किन छुड़ाएं। आधे घण्टे के बाद स्नान करें। एक कटोरी में एक भाग बेसन और दो भाग दूध का गाढ़ा धोल बनालें, सालुन के स्थान पर इस धोल का प्रयोग करें, उसे लगाकर फिर नहाएं। इससे त्वचा की नर्मी और स्तिरणता बनी रहेगी।

# पूर्णता योग्य

पूर्णता प्राप्त करना ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो या साधना से सम्बन्धित, चाहे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनी हो या सिद्धियों को हस्तगत करना हो, चाहे गृहस्थ जीवन का सुख हो या सन्यास जीवन का आजड़ - श्रेष्ठता, अद्वितीयता और सर्वोच्चता तो प्राप्त होनी ही चाहिये।

लेकिन सामान्य मानव शरीर अत्यंत क्षुद्र एवं गन्धा है, मल, मूत्र, स्त्र आदि के सिवाय कुछ ही नहीं, जबकि दिव्यता और आनन्द की उपलब्धि तो केवल दिव्य एवं धैतन्यता प्राप्त देह में ही सम्भव है। जिस प्रकार जल में ही जल का पूर्ण सूप से मिलन सम्भव है, तेल में नहीं, उसी प्रकार शरीर एवं मन को धैतन्यता युक्त बना कर ही हृष्ट की धैतन्यता को समाहित किया जा सकता है।

यह यंत्र गुरु कृपा का एक ऐसा ही श्रेष्ठ प्रसाद है,

जो पूर्णता एवं पूर्ण दिव्यता को प्रदान करने वाले रिद्धाश्रम मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित किया गया है तथा जिसे पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक पूजा स्थान में स्थापित करने से साधक के शरीर में दिव्यता और धैतन्यता का संचार होने लगता है, कुण्डलिनी रूपतः ही स्पंदित होने लगती है, समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्त होने लगती है और पूर्णता की ओर अवासर होने की क्रिया प्रारम्भ होने लगती है।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - “ज्ञान दान”

जीवन को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समाजों में, मंगल कार्यों में, बालाणों की, निर्धन परिवारों की दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इन श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बचित है। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अधसर हो सकेगा।

### आप क्या करें?

आप केवल एक पथ (संबन्ध पोस्टकार्ड क्रमांक ३) भेज दें, कि ‘मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप नि: शुल्क ‘मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पूर्णत्व यंत्र’ ३६५/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिका व वार्षिक सदस्यता के ३००/- + डाक व्यय ६५/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आपे पर मैं पोस्टमैन को घन राशि बेकर छुड़ा लूँगा। बी. पी. पी. छुट्टे के बाव मुझे २० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।’ आपका पथ आपे पर, ३००/- + डाक व्यय ६५/- = ३६५/- की बी. पी. पी. से ‘मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पूर्णत्व यंत्र’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको वह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। बी. पी. पी. छुट्टे पर आपको २० पत्रिका भेज दी जाएगी।

### सम्पर्क

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१, (राज.)

फोन - ०२९१-४३२२०९, टेलीफोन: ०२९१-४३२०१०

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone: 0291-432209



# अग्रोद्ध वरदायी शिवरात्रि पूजन

महाशिवरात्रि पूजन पैकेट

जिसे स्वयं भगवान राम ने सम्पन्न किया और जिसके कारण ही भगवान शिव रामेश्वर कहलाये

**S**

क दिन पार्वती जी ने भगवान भौजनाथ से पूछा—  
‘आप हरदम क्या नपते रहते हैं?’

उत्तर में महादेव ‘विष्णु सहस्रनाम’ कह गये।

तब पार्वती बोली—‘ये तो एक हजार नाम हैं, सबका जप सामान्य मनुष्य के लिये असम्भव है। कोई एक नाम कहिये जिसे सहस्रों नामों के स्थान पर जपा जाय।’ इस पर शिव बोले—  
राम रामेति रामेति रामे रामे मत्त्वरामे।  
लहसुनराम लत्तुरूप्य रामब्राम वरदन्त्वे॥  
राम राम शुभ नाम रटि, लब्धवन अरांद वाम।  
लहसु ब्राम के तुल्य है, राम नाम शुभ नाम॥

अर्थात् भगवान शिव को राम नाम ही सर्वप्रिय है, भगवान राम को भी शिव का नाम सबसे अधिक प्रिय है। लंका तट पहुंचने पर श्री राम के मन में यह विचार आया कि बिना भगवान शिव की कृपा के लंका अभियान में विनाय सम्भव नहीं है, उन्होंने अपने इष्ट की पूजा करने के लिये शिवलिंग की स्थापना की और विधिवत् पूजन किया। भगवान शिव प्रकट हुए और विनाय का वरदान दिया, वही शिवलिंग आगे चलकर ‘रामेश्वरम्’ कहलाया। राजा जनक द्वारा आयोनित सीता के स्वयंवर में शिव धनुष भी केवल और केवल राम ही धंग कर सके थे। तब भी धनुष धंग के पूर्व राम ने शिवपूजा की थी।

आज से पन्द्रह दीस वर्ष पूर्व जब सदगुरुदेव डॉ नारायण वत्त श्रीमाली जी कुछ शिष्यों के साथ रामेश्वरम जपे थे, तब उन्होंने बताया था, कि आज जो रामेश्वरम शिवलिंग है, यह वह शिवलिंग नहीं है जो भगवान राम ने अपने हाथों से स्थापित किया था। वस्तुतः मूल शिवलिंग तो आज भी मन्दिर के निकट ही रेत में दबा हुआ है, जिसे दिव्य दृष्टि सम्पन्न योगी आज भी देख सकते हैं और उसका पूजन करते हैं। उस समय सदगुरुदेव ने शिव पूजन के आवश्यक सूत बताए थे और राम द्वारा प्रयोग किये गये उस मंत्र को भी स्पष्ट किया था, जिससे भगवान शिव को प्रत्यक्ष होकर वर प्रदान किया।

इस प्रकार के पूजन के लिये विशेष रूप से ‘रामेश्वर

शिवलिंग’, ‘महादेव रक्ष कंकड़’ और ‘२ पंचमुखी रुद्रादा’ और ‘हर गौरी मुद्रिका’ को कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि में शिव मंत्रों और सिद्धांत्रम आहूत मंत्रों से वैत्तन्य किया गया है और फिर इन चारों की प्राण संजीवन किया भी सम्पन्न की गई है। इस प्रकार के दिव्य पाठ्यना उपकरणों से यदि साधक महाशिवरात्रि पर शिव पूजन सम्पन्न करने के पश्चात मन को निर्मल बनाते हुए पूर्ण समर्पित होकर सोए, तो रात्रि में अवश्य ही प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष अनुभव होंगे।

यह पूजन भगवान शिव के रामेश्वर स्वरूप का पूजन अर्थात् घट-घट व्यापी परमात्मा स्वरूप का पूजन है। इस प्रकार के पूजन में बिल्व पत्र की विशेष रूप से आवश्यकता होती है। बिल्व पत्रों पर एक विशेष मंत्रात्मक क्रिया करते हुए उन पर ‘राम’ नाम अंकित कर यदि शिवलिंग पर अंपित किये जाएं, तो भगवान शिव अति प्रसन्न होते हैं, और साधक के मनोरथ पूर्ण करते हैं। सम्पूर्ण पूजन विधि तथा बिल्व पत्र लेखन विधि पत्रिका के फरवरी-२००० अंक में प्रस्तुत की जायेगी।

पूजन में प्रयुक्त ‘रामेश्वर शिवलिंग’ घर के बातावरण को दिव्यता, वैत्तन्यता तथा उत्तरि प्रदान करने में पूर्ण सहायक है तथा जिस संकल्प से पूजन सम्पन्न किया गया है, उस कामना की पूर्ति में भी सहायक है। यह शिवलिंग एक प्रकार से साधक के पूजा स्थान में सैदेव स्थापित रहने योग्य धरोहर है। पूजन के बाद ‘महादेव रक्ष कंकड़’ साधक के धारण योग्य हो जाता है, जिससे उसे कहों परानय, अपमान या असफलता का मुख नहीं देखना पड़ता है। ‘हर गौरी मुद्रिका’ घर में स्त्री के अथवा स्वयं धारण करने योग्य है, जिससे घर में अखण्ड सुख, सौभग्य, लक्ष्मी एवं शान्ति व्याप्त रहती है। ‘२ रुद्राक्ष’ नालकों की उत्तरि एवं प्रगति में पूर्ण सहायक हैं तथा बल, बुद्धि, मेधा प्रदान करते हैं। इस प्रकार यह पूजन परिवार के सभी सदस्यों का कल्याण करने में सहायक है। शण मात्र में प्रसन्न होने वाले भगवान शिव महाशिवरात्रि के दिन अपने प्रत्येक साधक की कामना पूर्ण करते ही हैं, अतः इस रात्रि में पूजन अवश्य ही करना चाहिए।

आप किन्हीं दो मिलों को (जो पवित्र कार्यक्रम सदस्य नहीं हैं एवं आपके ही परिवार नन्हीं हैं), पवित्र का वार्षिक सदस्य बनायें। इसके लिये कार्ड कंडू, दर अपने मिलों के पूर्ण डाक पते लिख कर भेजें। कार्ड मिलने पर आपको ४३/- की दी. पी. द्वारा साधन सामग्री भेज दी जायेगी। साथ ही आपके दोनों मिलों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पवित्र के जायेगी।

# साधक

साधक बचनेवाली पहली शर्त है कि वह सच को जानता हो। और उसका मुख्य है कि वह स्वीकृति प्रकार का भव नहीं है, दोनों की साथमा वह सकता है।

छोटी सीटी सफलता की सफलता -ही कठत, गदि जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त होनी तो केवल साहेभाड़ों के माध्यम से ही हो सकती है। साधन का तात्पर्य है अपने जीवन को सापूर्णता के साथ एक लक्ष्य की ओर अग्रसर करना - अपने न को, अपने प्राणों को, अजनी देह को और अपने व्यक्तित्व को। जब इन सबको लेकर व्यक्ति तीर छोड़ता है तब उसे साधन कहते हैं, तब उसे अपना गंतव्य लगता हो जाता है, एवं उस ज्ञात हो जाता है कि वहुना कम समय में भी जीवन को सधीच्चत, अद्वितीयता दी जा सकती है।

साधक बनने की गहली जर्ते गहरी है कि उसका नामम्, उसके विचार और उसका व्यक्तित्व दुकड़ों-दुकड़ों में विचरण हो। सब कुछ समझ हो, सब कुछ एक पूँज में हो, सब कुछ तेजों की साथ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिये जाता है, और उस उसके जीवन के प्राण, उसके जीवन को बेटा। उसके जीवन का आधार एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ने लग जाता है, तब नजिल स्थान उसके तामने आकर खड़ी हो जाती है। फिर वह छोटी-छोटी

समस्याओं से विचलित नहीं होता... धोड़ा रा लकट या शमरवा आ जाने पर उसके द्वितीय पर कोई आघात नहीं लगता... वह सुख को भी उसी भाव से देखते होता है जिस भाव से दुःख को देखता है, फिर बादाएँ या परेशानियाँ उसे विचलित नहीं करतीं... वह अपने जीवन में हताश या निराश नहीं होता... और फिर उसका एकमात्र लक्ष्य समृद्धिता की ओर घुटने का होता है... और वह तब तक विश्वास नहीं करता जब तक वह पूरी तरह नहीं कर लेता।

ऐसी ही रिश्ति आने पर उसे 'रिधिप्रद' या साधक कहलाने का गीर्ह लगता है। ऐसा व्यक्ति ही अपने जीवन में सब लक्ष्य की प्राप्ति कर पाता है, जिसे प्राप्त करने के लिये लाखों करोड़ों लोग प्रयत्नरात्रि रहते हैं।

यह ज्ञान तो निश्चियता है कि मनुष्य को पूर्णता प्राप्त करने के लिये देवी कपा की आवश्यकता नहीं है, परन्तु ऐसी कृपा रोने, गिर्डगेडाने, हाथ जोड़ने, अरकी उतारने से नहीं ब्राह्म हो सकती, उसके लिए तो जल्दी है कि इस तुरुष घरने, पुरुषोत्तम बने, इनसे अन्दर एक भूमिका हो, इह निश्चय हो जौह औलाल की तरह विद्युत हो। यह निश्चय हो कि शरीर साधनति या पात्रता है - या तो मैं देवी कृपा प्राप्त लकड़े रहूँगा या शरीर का रहना हो जाने पूरा... ऐसा बैलेज, ऐसी लंकन्या शक्ति व्यक्ति मन में, उसके विचारों में आती है तब उसे 'साधक' कहा जाता है। ऐसे ही साधक को सजलाना या सिंदूर प्राप्त हो जाती है।

ठोकर नारकर आगे बढ़ने ली जो अवश्यक किया है, वह अपने आप में साधन है, और जो अपनी ठोकर पर पूरे ब्रह्माण्ड को रख लकता है, वह मृत्यु लो आगे बढ़ेगा देता है, वह बन्धनों से नुत्र ही रक्षर। है, वही यात्राव में साधक हो सकता है।

- पूज्यपाद सरदूरुदेव

हम कह रहे हो, कि हम शिष्य हैं।

पर शिष्य तो साधक के आगे की स्टेज है।

शिष्य को समझने के लिए उपनिषद को भी समझना होता। उपनिषद का तात्पर्य है इष्ट, निवद, यज्ञ ने आना और नजदीक बैठन। यहां पास में आना और नजदीक बैठन का तात्पर्य, गुरु के समीप जाना और गुरु के समीप बैठने को किया से है। जो गुरु के समीप बैठता है, जो गुरु से कुछ सीखता है, जो गुरु का ध्यान करता है, उनके ज्ञान में से कुछ नीती प्राप्त करता है और अपनी जिज्ञासा वो ज्ञानादान करता है, उन्हें मन की अटिल गणियों को छोड़ने का प्रयत्न करता है, ऐसी क्रिया करने वाले को उपनिषद कहते हैं।

उपनिषद और शिष्य में कोई अन्तर नहीं दीनों का अद्वार्थ है। शिष्य का अर्थ भी है नजदीक होना और इतना नजदीक होना तक गुरु के हृदय से एकाकार हो जाके, उसे ही शिष्य कहते हैं।

शिष्य का तात्पर्य किसी दैह से नहीं है, शिष्य का तात्पर्य खड़े होकर हाथ जोड़ने से नहीं है, शिष्य का तात्पर्य लोहे दीक्षा लेने से भी नहीं है, यह तो एक नव है कि हम दीक्षा लेकर अपने आपको पूरी रूप से गुरु वरणों में विसर्जित करके गुरु से एकाकार हो जाएं, वहां से ही हमारी शिष्यता प्राप्त होती है।

शिष्य का वास्तविक तात्पर्य है गुरु के अनुरूप बनना, और आज्ञा पालन करना ही शिष्य का परम कर्तव्य है। यदि हमने तर्क—वितर्क किया तो हम शिष्यता की भावशूभ्री से नरे हो जाते हैं। शिष्य शब्द बना ही है आज्ञा पालन से, निरन्तर उनको रेखा करने से : सेवा और आज्ञा पालन ये दो साधन हैं, जिनके पावधाम है शिष्य आगे की ओर अग्रसर होता हुआ पूर्णता प्राप्त कर सकता है। जो सेवा नहीं कर सकता, वह समर्पण भी नहीं कर सकता और जहां समर्पण नहीं है वहां शिष्यता भी नहीं है।

गुरु ने क्या काम कीया है, वह तो गुरु ही जावें, परन्तु ऐसा काम, जाहे कठिन भी हो, यदि सीज है तो जल्द इसके पांछे उनका कोई हेतु होगा, जल्लर लोहे नियमन होगा, तभी ऐसा काम रोचा है — जो ऐसा ध्यान करते हुए ब्रिना आलत्य के, समय पर कारों को समर्पण कर गुरु वरणों में समर्पित कर दे, वही शिष्य है।

शिष्य का तात्पर्य है रथ्याग — सब कुछ ल्याग करने की जिसने क्षमता होती है, वही शिष्य कहला सकता है। शिष्य बनना हल्ला आसान नहीं है, यह तो अपने आप को फना कर देने की क्रिया है। गुरु और शिष्य के बीच व्याख्या का कोई सन्दर्भ नहीं होता, यदि व्यक्ति हुलसता हुआ, प्रलम्बन्त के अतिरेक में गुरु के वरणों में पहुँच जाता है, और उनके वरणों में शुक कर भन्दिर, मरिजद काशी और काशा, हरिहार और मधुस के दर्शन कर लेता है, सारे देवी और देवताओं के दर्शन कर लेता है, तब यह सही अर्थों में शिष्य है।

यह जल्दी नहीं कि गुरु आपको बुलाए ही, परन्तु जिस प्रकार एक बेल पेड़ के चारों ओर लिपट कर एकाकार हो जाती है उसी प्रकार शिष्य भी गुरु के वरणों से लिपट जाए, ऐसी विश्विति करने तब वह शिष्य है।

और जब अहंकार को स्वानुदान कर सेवा और समर्पण में शिष्य पालनात्मा प्राप्त कर लेता है, जब वह पूरी रूप से सेवामय बन जाता है, समर्पणमय बन जाता है, तो फिर उसके हिते मंत्र ज्ञान जाली नहीं रहे जाता, क्योंकि सेवा ही मन्त्र ज्ञान है, समर्पण ही अपने आप में पूर्ण सधन हो जाती है, और ऐसा होना जीवन का सीमावर्य होता है, जिससे दैवतों भी झंगी करते हैं।

— पूर्ज्यपाद सद्गुरुदेव द्वारा

“जनवरी” 2000 मंत्र-तंत्र-यत्र विडियो ५८

# साधक साक्षी है

## बुद्धिमत्ता के दर्शन श्रीकृष्ण के रूप में

यह घटना पिछले वर्ष  
अक्टूबर ५ अप्रैल १९९८ की है। उस  
दिन मेरा मन किसी अज्ञात भय के  
कारण बहुत विचलित था और हमी  
लिए हैं रात्रि में गुरु मंत्र का जप कर  
रहा था। मंत्र जप करते-करते कब  
मुझे नींद आ गई, मुझे जात नहीं।  
प्रातः चार से पाँच के बीच का समय



होगा, कि मुझे स्वर्ण में पूज्य सद्गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त  
श्रीमाली जी पूर्व वन्दीय माताजी के दर्शन हुए। मैंने जैसे ही  
उनके चरण स्पर्श किये, ठीक उसी समय गुरुदेव का स्वरूप  
अचानक श्रीकृष्ण भगवान के रूप में एवं माताजी का राधा  
देवी के रूप में परिवर्तित हो गया। अपने हाथ उठाकर उँहोंने  
मुझे उसी रूप में आशीर्वाद प्रदान किया और फिर अंतर्धान  
हो गये। इसके तुरन्त बाद ही मुझे चेतना हुई और मेरी नींद  
खुल गई, मन में प्रसन्नता अनुभव हो रही थी।

— लोकेश कु, त्रिपाठी, २८/७४८, आजावनगढ़, कानपुर

## बुद्धि का साम्राज्य ही तो है

मेरे दिल में क्षण-प्रतिक्षण वेदना रहती थी, कि कोई  
बहाहृत परमहंस गुरु मिल सके और जीवन कृत्य-कृत्य हो  
जाए। सद्गुरुदेव के आशीर्वाद के साथ ३ फरवरी-९९ को  
विह चैतन्य बंड' प्राप्त होने पर मेरे अन्दर एक विशिष्ट आंतरिक  
परिवर्तन हुआ और मेरा हृदय में प्रेम का सामर लहराने लगा—  
जो भरा नहीं है भावों से, बहाहृत जिसमें रसधार नहीं।

वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें रसता प्यार नहीं॥

गुरुकृपा से हृदय कपाट खुलते ही उस शाश्वत शक्ति  
की अवाह प्रेमानन्द समर के रूप में लहरते हुए अनुभूत किया  
है और जब जब चिन्तनरथ होता है, तो भाव विहृत होकर  
अशुद्धारा में स्नान कर कृतर्थ होता रहता है। मेरा सौमान्य है  
कि मैं सिद्धांशुग साधक परिवार से पत्रिका के माध्यम से संबंध

ज 'जनवरी' २००० मन्त्र-नन्द-यत्र विज्ञान ४६' है

हुआ, जो मानव मात्र का प्रेरणा स्रोत है, जिसके द्वारा समाज  
जीवन को विविध समस्याओं का समाधान प्राप्त कर रहा है,  
और जो मंत्र शक्ति में विश्वास का कारण है।

शत सहस्रों व्यव यह, तुम्हाँ जे चतुर्वा सिद्धांशु।

हे गुरुदेवा हमेशा पूर्ण प्रसन्नता से, सर्व सुलभ रहते  
हुए आपने सभी शिष्यों को बिना भेद भाव के मार्गदर्शन दिया  
है, आशा की किरण ही है। हे गुरु त्रिमूर्ति! आप विश्व के  
युगनिर्माता व मानव हितचिन्तक महामानव हैं, जो विश्वपटल  
पर आज सर्वाधिक शोध के विषय हैं।

— श्री लालजीत कुशवाह, पैसीखेड़ा, आगरा-२८३३२३

## मस्तक बीच हजार वाट का बल्ब जल रहा था

पिछले दो वर्षों से लगातार दैनिक साधना कर रहा  
हूं। दो माह पूर्व ही जब मैं दैनिक गुरु पूजन सम्पन्न कर मंत्र  
जप कर रहा था, तभी मुझे ऐसा लगा कि मेरे मस्तक के  
बीचों-बीच एक यगाकार में आग के समान एक हजार वाट  
के बल्ब से भी अधिक रोशनी हो रही है। वो दिन बाद किर  
सद्गुरुदेव जी का दर्शन भी हुआ। मेरे पत्र लिखने का  
अभिप्राय यह है, कि दैनिक साधना, गुरु मंत्र भी यदि  
पूर्ण लग और नियम से किया जाये, तो भी वह एक विशेष  
साधना के समान है।

— श्री रविन्द्र कुमार, जी.टी.रोड, पानीपत-३

## लम रहा था जैसे सूर्य मण्डल के बीच हूं

१ जनवरी १९९७ को रात्रि में परम पूज्य सद्गुरुदेव  
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी ने सामृद्धि शक्तिपात कर  
राज्याभिषेक दीक्षा प्रदान की थी। उस क्षण मुझे ऐसा लगा कि  
मैं एक सूर्य मण्डल के मध्य स्थित हूं। ऐसा मुझे करीब एक  
मिनट तक लगा। उसके बाद भगवते दिन तक मुझे इतनी गर्मी  
महसूस होती रही कि मैं उतनी अधिक सर्दी में भी बहुत कम  
कपड़े पहने रहा। उस विशेष दीक्षा से शरीर का ताप बढ़ गया  
था।

— हिमांशु, लखनऊ

## शिविर छोड़कर न जावें

मैंने दिनांक १३ फरवरी को बिलासपुर शिविर में गुरु दीक्षा यज्ञण की और धनवा महालक्ष्मी प्रयोग सम्पन्न किया, जिससे १५ वर्षों से रुका हुआ धन प्राप्त हुआ।

इसके बाद निखिल जन्मोत्सव में भाग लेने में दिनांक २० अप्रैल १९, को भोपाल पहुंचा तथा साधना प्रयोग में भाग न लेकर केवल वहाँ उपस्थित रहा। दिनांक २१ अप्रैल की रात्रि लगभग ८:४५ को पूज्य गुरुदेव ने घोषणा की कि वे सद्गुरुभिषेक करेंगे तथा साथ ही हम शिष्यों को भी साथ में अभिषेक करते जाना है, जिसके लिये पारद शिवलिंग होना आवश्यक था। चूंकि मेरे पास शिवलिंग नहीं था, अतः मैंने सोचा कि बिना पारद शिवलिंग के शिविर में रुकना ब्यर्थ है और रेलवे स्टेशन जाने के लिये उठ खड़ा हुआ। ठीक उसी समय जैसे गुरुदेव को मेरे मन की बात पता चल गई और स्टेज से पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी ने घोषणा की - 'सद्गुरुभिषेक के लिये कम से कम तीन घण्टे लगेंगे, वहि किसी को जाना हो तो वे चले जावें, किन्तु उसकी जिम्मेदारी हमारी नहीं होगी। जो वहाँ शिविर में रुके रहेंगे उनकी पूरी जिम्मेदारी मेरी है।'

इस घोषणा के बाद जूद भी मैं शिविर स्थल से निकलने की धृष्टिता कर बैठा। परिणाम यह हुआ कि रात्रि १०:३० को छुटने वाली ट्रेन १२:३० को छूटी। तात्पर्य यह कि सद्गुरुभिषेक की समाप्ति के बाद भी यदि शिविर से स्टेशन जाता, तो भी मुझे ट्रेन आसानी से मिल जाती। अतः मैं इस नीति पर पहुंचा हूँ कि एक तो पूज्य गुरुदेव को सभी के मन की बात मालूम चल जाती है और दूसरे कि यदि वे कभी कोई सकेत हैं, तो बात मन लेनी चाहिये और शिविर छोड़कर नहीं जाना चाहिये।

- पी.आर. प्रधान, एम.पी.ड.बी. कालोनी, रायगढ़, म.प्र.

## मुरुदेव में पूर्ण झट्कि, विश्वास भी फलदायक

मैं एक विद्यार्थिनी हूँ, एक दिन पत्रिका मुझे पढ़ने को मिली और मेरे मन में गुरु दीक्षा लेने की उत्सुकता पैदा हुई। लेकिन मैं अभी तक गुरु दीक्षा नहीं ले सकी हूँ। किन्तु भी मैंने एक साधना की ओर उसमें मुझे सफलता मिली है। मुझे विश्वास है कि मन में यदि भक्ति, विश्वास हो तो सफलता अवश्य मिलती है। मेरे गैज़्यूएशन के पूरे



होने में मैं गुरुदेव का ही आशीर्वाद मानती हूँ। मैं हमेशा गुरुदेव की भक्त रहूँगी।

- सविता, महबूबनगर (आंध्र प्रदेश)

## बायावणी एवं ब्रह्मा स्वरूप में सदगुरुदेव के साक्षात् दर्शन



अप्रैल २७ की अमावस्या की रात्रि को हम कुछ गुरु भाई उन्नेन महाकाले श्वर स्थित रामधाट पर सदगुरुदेव का पूजन और गुरु मंत्र जप करने एकद दुप थे। मैं खुले नेत्रों से गुरु मंत्र का जप कर रहा था, मेरी पीठ शिप्रा नदी की तरफ

थी और सामने मन्दिर था। मन्दिर के पांछे २०-२५ सीढ़ियाँ थीं, परन्तु उसका मुझे जान नहीं था। अचानक मैंने देखा कि सदगुरुदेव के साथ कुछ गुरुभाई और मैं सीढ़ी से उतर रहे हैं। कुछ पल बाद गुरुजरने के बाद सदगुरुदेव ने अचौम कृपा कर उच्च स्वरूप का दर्शन कराया जो बाद में मुझे जुलाई ९८ की पत्रिका के कवर पर देखने को मिला। मैंने देखा कि मां शिप्रा (नदी) की गोद में सदगुरुदेव शेषनाग पर लटे हुए हैं। उनके चरण के समीप मां स्वर्यं उपस्थित होकर चरण कमलों की सेवा कर रही हैं। यह स्थिति मैंने तीन-चार बार पलक अपका कर देखी कि कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ। किन्तु यह तो सदगुरुदेव की कृपा ही थी कि मैं उनमें एवं माताजी में उस दिव्य ज्योतिमय स्वरूप को देख सका जिसका दर्शन पाने के लिये अनेकानेक योगी, महायोगी जीवन पर्यन्त तपस्या करते हैं।

सदगुरुदेव जी तो स्वयं भगवान साम्ब सदाशिव हैं, वे अपनी लीलायें हम सभी शिष्यों को दिखाते ही रहते हैं। केवल मन, कर्म, चरन, ध्यान, साधना के माध्यम से ही नहीं, सदगुरुदेव को हम उतना प्रेम भी करें और उनके चरणों का ध्यान करें तो वे भगवान साम्ब सदाशिव कल्याण करेंगे ही।

ऐसे ही एक अन्य अपावस्या की रात्रि को रामधाट पर साधना कर रहा था, कि सदगुरुदेव के ब्रह्मा स्वरूप में साक्षात् किया, उनके तीन ही मुख में देख सका, चौथा मुख देखने में असमर्थ था। इस दिव्य स्वरूप के दर्शन कर सका, यह सदगुरुदेव आपकी ही परम कृपा है।

- राजेश शर्मा, ३७-३८ अंजनी नगर, बड़ी कमोरी, इंदौर, (म.प्र.)

## देखा तो विष्णु भगवान की जगह गुरुदेव ही थे

दिनांक २० जून-१९ को बण्डीगढ़ में सम्पन्न हुए एक दिवसीय शिविर में मैंने भगवती लेकर ज्वालामालिनी दीक्षा प्राप्त की, यह मेरा प्रथम साधना शिविर था। पूज्य गुरुदेव श्री कैलाशनन्द श्रीमाली जी ने वहाँ सभी को आष लक्ष्मी साधना सम्पन्न कराई। यह साधना २७ दिन तक निर्विघ्न रूप से चली। अंतिम दिन ‘बज विधान’ पुस्तक विधि के अनुसार साधना समाप्ति पर निम्न लक्ष्मी मंत्रों से आतुरि सम्पन्न की गई—

॥ उठे कर्ती हैं श्री ऐश्वर्य सिद्धि ॥ उठे बज विधान ॥

आरती के बाद अचानक मुझे महसूस हुआ कि भगवान विष्णु तथा भगवती लक्ष्मी पूजा स्थल के द्वार पर खड़े हैं। कुछ क्षणों बाद ही विष्णु भगवान की जगह सद्गुरुदेव द्वारा नाशयण वत्त श्रीमाली जी माता लक्ष्मी के साथ खड़े हैं। इतने में मेरे कंधे पर किसी ने हाथ रखा और माता लक्ष्मी की तरफ हशारा किया, माता जी वहीं दरवाजे पर ही थीं। गुरु कृपा से हुई इस प्रत्यक्ष अनुभूति पर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

— श्री जसपाल चिंह बैवतान, चुडियाला (सुधा),

वाया: लण्डन, १५०३०७, (पंजाब)

## बस में बैठने की प्रेरणा की

मुझे पहली बार जब जनवरी-१८ का मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का अंक पढ़ने को मिला था, तभी से मुझे गुरुदेव पर अदृष्ट विश्वास हो गया था। और रोज नियमित गुरु मंत्र जप का प्रभाव मुझे देखने को दिनांक ३ जुलाई-१९ को मिला।

मुझे बस से कहीं जाना था। बस स्टेप्ह पर पहुंचते ही स्वतः मेरे मन में गुरु मंत्र का जप चालू हो गया और गुरुदेव का स्मरण होने लगा। तभी एक बस हमारे सामने आई और निकल गई, और जब बस निकल गई तो मैं सोचता रहा कि मेरा रुग्णाल कहाँ था, जो मैं उस बस में बैठा नहीं। उसके बाद फिर दूसरी में बैठ कर गया। लगभग बीमा किलोमीटर ही गये दे कि इमने देखा कि एक बस का बड़े पैड से टकराकर एकसीहेट हो गया है और अन्दर बैठे सभी यात्रियों को चोटें लगी हैं। यह वही बस थी, जो मेरे सामने से निकल गई थी और मैं बैठ नहीं सका था।

मेरा मानना है, कि उस दिन गुरुदेव ने ही अन्नात प्रेरणा देकर उस बस में बैठने से रोका था। निश्चय ही गुरुदेव अपने शिष्यों की अपरोक्ष रूप से भी निरन्तर रक्षा करते हैं।

— अर्जुन एल. सुधा, भगवती निवास, सरस्वती बाल मंदिर के पीछे, मोड़ासा, (गुजरात)

ऋ 'जनवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '५४' रु

## सद्गुरुदेव में काल भैरव के दर्शन

दिनांक १६.१३.१९ को मुम्बई में एक विवसीय

साधना शिविर में उपस्थित होकर मैंने पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी से 'चैतन्य दीक्षा' प्राप्त की थी। तभी से मेरे ऊंदर कुछ अलग सा महसूस हो रहा था। शिविर में दीक्षा लेने के बाद घर लौटने पर सबा लाख गुरु मंत्र जपने का संकल्प लिया। साधना का अंतिम दिन था, मैंने जप शुरू ही किया था, तभी एकबारगी मेरे शरीर में भव्यकर गर्मी बढ़ने लगी, साधना में बैठना बड़ा मुश्किल लगने लगा, परन्तु यह परीक्षा थी। योद्धा देर में साधना कक्ष अष्टांग से भर उठा, मैं चौक गया क्योंकि यह मेरा पहला साक्षात् अनुभव था और ऐसा लगा कि मैं अपने शरीर से बाहर निकल रहा हूं और ऊंचे आसमान में पक्षी की तरह उड़ रहा हूं।

उड़ते-उड़ते मैं अपने आफिस के बाहर एक चाय की तुकान के पास बाले बट बृक्ष पर पहुंच गया। इस तुकान पर ही मैं पिंत्रों के साथ नित्य चाय पीता हूं। वहाँ पर यों ही ध्यान गया तो देखा कि पूज्यपाद सद्गुरुदेव परमहंस निखिलेश्वरानन्द जी बैठे हैं, मैं उनके पास भरती पर उत्तरा, उन्हें दण्डवत प्रणाम किया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। संन्यासी रूप में बैठे सद्गुरुदेव जी ने जैसे ही मेरी आँखों में देखा तो भय के मारे मेरे शरीर के रोगटे खड़े हो गये। मेरे सामने साक्षात् पैरव जी ही बैठे थे और उनकी आँखों से आकाश के रंग की बिल्कुल रेडियम जैसी किरणें निकल रही थीं और वे किरणें निकलकर मेरी आँखों में जा रही थीं। सच में मेरी हँड़ा थी जीवन में कभी मेरे आरत्य देव काल भैरव के दर्शन हों, और भले ही कोई माने या नहीं परन्तु सद्गुरुदेव जी ने मुझ पर कृपा कर साक्षात् काल भैरव के रूप में दर्शन दिये।

— विजय नाशयण आयरे, गार्डन डिपा.,  
टी.आई.एफ.आर., नेवीनगर, कुलाबा, मुम्बई-५.

## गुरुधाम की प्रत्येक सामग्री, वित्र दैतन्य है

आप द्वारा मैंनी गई साधना सामग्री (विद्वाल माला और बांडा) प्राप्त हुई, जिससे मैंने साधना प्रारम्भ की और असर यह हुआ कि सद्गुरु जी के चित्र में मैं साक्षात् शिव स्वरूप में गुरुजी के दर्शन होते हैं।

— संजय बाजपेयी, बी/३८५, इंदिरा नगर, लखनऊ

बुध क्रियाशील ग्रह है। विद्या, बन्धुत्व, विवेक, व्यवसाय, मित्र, वाणी और कार्य क्षमता – इन सौभाग्य द्वारों को जीवन में खोलने की आवश्यक साधना –

# बुध ग्रह साधना



नुष्य के जीवन में समय अर्थात् काल का सर्वाधिक महत्व होता है। समय के चक्र के ३६० अंश होते हैं, इसके बारह भागों के प्रत्येक भाग को ३० अंश प्राप्त होते हैं और ऐसे प्रत्येक अंश को राशि नाम दिया गया है। इन बारह राशियों में ग्रहों के अलग-अलग गति से गतिमान रहने से मानव जाति और संसार पर के घटना क्रम पर अलग अलग असर होता है। जिस पथ पर ये ग्रह और नक्षत्र गतिमान रहते हैं, उसे नक्षत्र पथ कहा जाता है और इस नक्षत्र पथ पर ग्रहों की अलग-अलग स्थिति सदैव होती है। इन्हीं विभिन्न स्थितियों का आकलन कर ज्योतिष शास्त्र भविष्य की घटनाओं को रेखांकित कर संसार को यह बताता है कि इन्हें किस समय कौन सा कार्य करने अथवा न कर पाने का क्या शुभ या अशुभ परिणाम हो सकता है। यहीं ज्योतिष का विषय है।

यह विडब्ल्युना ही है कि बुध ग्रह को एक किशोर या 'राजकुमार' अथवा 'नपुंसक' ग्रह होने से उसे अन्य ग्रहों की तुलना में कुछ कम ही महत्व दिया जाता है।

बुध ग्रह की यह विशेषता है कि यह अन्य ग्रहों के साथ सम्बन्ध बनाकर घटनाओं अथवा व्यक्ति के जीवन में गजब ढा देता है। वर्तमान शताब्दी के प्रथम और द्वितीय महायुद्धों के समय, अथवा ६ और ८ अगस्त १९४५ को हिरोशिमा और नागासाकी में बरसाये गये मण्डु बमों और उनसे उन नगरों में हुए ऐतिहासिक मानवीय विनाश की बात को ध्यान कर आज भी रोगटे खड़े हो जाते हैं। अभी हाल में ही उड़ीसा में महाचक्रवात (Supercyclone) से हुआ मृद्याविनाश

जिससे एक करोड़ जनसंख्या के सामने दुर्भाग्य मूर्तिमान होकर खड़ा हो गया। यह सब मूलतः बुध ग्रह की विशिष्ट स्थिति और अन्य ग्रहों से उसके सम्बन्धों का ही परिणाम है।

यह भी उल्लेखनीय है कि वर्तमान समय जिस मुद्रा और बैंकिंग प्रणाली पर निर्भर है, इनकी गतिविधियों का भी मूल आधारमूल ग्रह बुध ही है। यही कारण है कि अमेरिका देश और भारत का मुख्य शहर मूलतः बुध ग्रह से ही विशेष प्रभावित होते हैं। आज जिनकी आयु पचास वर्ष से ऊपर होनी, उन्हें वर्ष १९६९-१९७० की राजनीतिक घटनाएं अच्छी तरह याद होंगी जब सत्ताधारी दल कांग्रेस में ऐसा भूचाल आया था कि स्वयं तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने अपने ही दल के राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी का विरोध कर न केवल एक दूसरे प्रतिद्वन्द्वी प्रत्याशी को खुदा कर दिया बल्कि अपने दम खम पर विजय श्री दिलाकर श्रीवाराहगिरी वेंकटगिरी को राष्ट्रपति बना दिया।

यह आज तक रहस्य ही है कि उस समय विशिष्ट राजनीतिक हस्ती (नाम नहीं दिया जा रहा है) का हस्ताक्षरित पत्र जब एक विशेष दूत के हाथों परम पूज्य गुरुदेव दर्शन नारायण दत्त श्रीमाली जी के समक्ष उपस्थित हुआ, तब जिस विशेष ग्रह के सूक्ष्म प्रभाव को परम पूज्य गुरुदेव ने रेखांकित करते हुए नये दल के गठन का न केवल सुझाव, समय, दिन और नाम ही निर्धारित किया बल्कि चुनाव चिन्ह भी 'हाथ का पंजा' रखे जाने की सलाह दी।

आज बाले समय में यह तथ्य कितना सही प्रमाणित हुआ, यह सभी जानते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है, कि

'प' अधार कन्या राशि का आधार है, जहाँ बुध उच्च का माना जाता है। और यही पंजा भावी भारत की १९६९ की राजनीति का और उस दल विशेष के राजनीतियों का भाग्यनिधान बन गया। इतना ही नहीं यहाँ यह भी विशेष उल्लेखनीय है कि श्रीमति इंदिरा गांधी ने दल का विभाजन कर नये दल के गठन के बाद जो सबसे प्रभावशाली कदम उठाया वह भारत के सबसे बड़े गोदह बैंकों के राष्ट्रीयकरण का था। और बैंकों की गतिविधियों का आधार भी बुध ग्रह ही होता है।

इतना ही नहीं संख्या १४ का मूलांक '३' भी यहाँ बुध के प्रभाव में ही था। इसी तरह संसार में जहाँ कहीं भी किसी देश को मुद्रा उत्तरा बाजार, शेयर बाजार आदि में सम्बन्धित विशेष घटनाएँ घटती हैं अथवा विशिष्ट राजनीतियों के सेक्स कैफियतों को मीडिया के द्वारा महसूस दिया जाता है, उनमें भी इसी बुध ग्रह के अन्यान्य ग्रहों के साथ विशिष्ट सम्बन्धों के बमाल को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया जा सकता है।

इतना ही नहीं किकेट के प्रसिद्ध गेंदबाज कपिल देव की प्रसिद्धि, किरण बेदी के मैगेसेसे पुरस्कार, श्री अमरन्थ सेन को अर्थ शुस्त्र का नोबल पुरस्कार के द्वारा विश्व सम्मान — ये सभी बुध ग्रह के विशेष प्रभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं। बुध ग्रह जब सूर्य, बृहस्पति और चन्द्रमा की शुभ स्थितियों से अनुकूल रूप से प्रभावित होता है, तभी कोई व्यक्ति श्रेष्ठ बक्ता, प्रवचनकर्ता अथवा श्रेष्ठ संत अन पाता है। और ऐसी ही अनुकूल स्थिति में संत नुलसीदास ने श्रीरामचरित मानस की रचना प्रारम्भ की थी, जिसका शुभ परिणाम सर्वीवित है।

यह स्पष्ट है कि संसार की विशिष्ट घटनाओं अथवा दुर्घटनाओं में बुध के स्वयं के प्रभाव का मूल्यांकन करना हो, तो यह विशेष ध्यान रखना होता है कि उसका सम्बन्ध अन्य ग्रहों से किस प्रकार है। उदाहरण के लिये किसी व्यक्ति विशेष के आर्थिक अथवा राजनीतिक उत्कर्ष को जनने के लिये बुध की महादेवा, अंतर्देशा के साथ ही उस व्यक्ति विशेष के जन्मक्रम के उन ग्रहों की दशा, अंतर्देशादि और गोचर में उन ग्रहों की

स्थिति जो कि उस व्यक्ति के जन्म के समय बुध से विशेष सम्बन्ध रखते हैं का भी अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। यहीं बुध ग्रह की अपनी विशेषता स्पष्ट हो जाती है कि बुध ग्रह स्वयं में अपनी मति या गोचर की स्थिति में जो प्रभाव ढालता है, उससे ज्यादा उससे बूसरे ग्रहों का सम्बन्ध प्रभाव ढालता है। और हम प्रायः यह भूल जाते हैं कि इन घटनाओं का आधार वस्तुतः परदे के पीछे बुध का ही कमाल है।

### बुध साधना कौन करे?

१. व्यापार, का कारक ग्रह

बुध है, अतः व्यापार, लेन-देन,

व्यवसाय, संग्रह, ट्रांसपोर्ट, वित्तीय

प्रशासन के साथ साथ जिन कार्यों में वाणी का उपयोग विशेष रूप से होता है, जैसे ग्रान, संगीत एवं अध्यापन (अर्थात् वाक् शक्ति को प्रभावकारी बनाना हो) आदि में बुध की साधना भास्योदय कारक सिद्ध होती है।

२. उपरोक्त क्षेत्रों में प्रवेश करने के इच्छुक व्यक्ति, अथवा उनमें सफलता प्राप्त करने के अभिलाषियों तथा उपरोक्त केन्द्रिय के आकोसी युवक भी इस साधना को सम्पन्न कर उन क्षेत्रों में रोजगार पथ प्रगति प्राप्त कर सकते हैं।

३. अन्य ग्रहों की महादेवा में जब जब गोचर में बुध गुजरेगा, उन्हें प्रभावित करेगा ही और इस प्रकार यदि कहे तो बुध साधना तो प्रत्येक व्यक्ति को करनी चाहिए।

४. विशेष रूप से जिनका मूलांक या भास्यांक १, ४, ५, ६ है, जाने वाले वर्ष में उन पर बुध का विशेष रूप से असर होगा। जाने वाले साल में ही राहु ग्रह के राशि से मिथुन राशि में और केतु भक्त से धन राशि में गतिशील होगा। अतः इन राशियों में होने वाली घटनाओं से सम्बन्धित व्यक्तियों को भी यह साधना अनियार्थ रूप से करनी चाहिए।

५. किसी भी प्रकार का लेन-देन, स्वारीकरण-बेचना या ऐश्वर्य के साधन प्राप्त करने के पूर्व बुध साधना सम्पन्न करनी उपयोगी रहती है। बुध की साधना से व्यक्ति में संशय प्रवृत्ति जायत होती है, अतः अनावश्यक व्यय में बचत होती है।

६. मस्तिष्क सम्बन्धी रोग जैसे मानसिक अपेक्षा, मनोरोग, मति भ्रष्टा, मानसिक चिन्ता, बुखिहानता एवं

कफङ्गों, नेत्र, कान व चर्य रोगों तथा गृणेपन में भी बुध ग्रह का प्रभाव होता है। इन रोगियों के लिये बुध साधना लाभप्रद है।

### साधना के विशेष लाभ

प्रत्येक व्यक्ति को हर ग्रह प्रभावित करता है, कोई ग्रह अधिक प्रभावित करता है तो कोई न्यून रूप से। किंतु भी बुध ग्रह की साधनाओं को कोई भी व्यक्ति सम्पन्न कर शास्त्रों में निर्दिष्ट अनेकों लाभों को प्राप्त कर सकता है। इनमें से निम्नलिखित यद्यपि लाभ विशेष महत्वपूर्ण हैं—

१. बुध की साधना से व्यक्ति का विषेष जाग्रत होता है, अच्छे भुजे का सही विर्णव लेना सम्भव हो जाता है।

२. आर्थिक अनुकूलता इस साधना की विशेषता है अर्थात् लाभ के अवसर बनते हैं।

३. व्यवस्था का दूसरा नाम भाष्योदय है, और यह व्यवस्था बुध के अनुकूल होने से भाष्योदयकारक हो सकती है।

४. व्यापार में बाटा कोई नहीं उठाना चाहता, घटे से बचने के लिये यह रामबाण साधना है।

५. पति-पत्नी के सम्बन्धों में मधुरता लाने अथवा संतान को सुमारा पर लाने के लिये यह साधना श्रेष्ठ है।

६. तनावसुक्त नीवन के लिये बुध की साधना किसी भी राशि के व्यक्ति के लिये सफलतादायक है।

७. कोई भी व्यक्ति वहि इस साधना को करे, तो उसे शत्रु की चालों का पूर्वानुपान लग सकता है।

८. शत्रुओं पर विजय भी इस साधना से हो सकती है।

९. राज्य बाधा अथवा आयकर के झगड़ों से निपटने के लिये यह साधना सर्वोपरि है।

१०. वर्तमान युग में व्यापारिक घरनों की गतिविधि का व्यापक प्रभाव पड़ता है, इसमें सम्बन्धित हासिलियों को तो इस साधना को करना ही चाहिये या कराने रहना चाहिये।

११. राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये अन्य उपाय इस साधना की तुलना में श्रेष्ठ नहीं हो सकते अतएव यह साधना करना/करा लेना चाहिये।

१२. अन्त-प्रेरणा का आधार बुध होने से जहां जहां आप अन्त-प्रेरणा का उपयोग करना चाहते हैं, वहां बुध की साधना अनिवार्य है।

१३. पुत्र-पुत्रियों विशेष रूप से कन्याओं के विवाह और भाष्योदय गता पिता के लिये इस साधना से ही सम्भव है।

१४. छवि सुधारने के लिये यह रामबाण साधना है।

१५. सभी प्रकार की संतुष्टि और पूर्व नन्म सुधारने और पितरों की तुल्यि इस साधना से ही सम्भव है।

### बुध ग्रह साधना विधान

इस साधना को किसी बुधवार के दिन से ही प्रारम्भ करना चाहिये। इसके लिये प्रातः शुद्ध वस्त्र धारण कर, ईशान दिशा (पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा) की ओर मुख कर, हरे रंग के आचन पर बैठ जाएं, सामने धूमि पर कुंकुम से निम्न प्रकार

१	४	११
१०	८	६
५	१२	७

से यंत्र का अंकन करें, किंतु उसके ऊपर एक हरा वस्त्र बिछा दें (बुध का वर्ण हरा है)। वस्त्र पर गुरु चित्र का स्थापन कर

अक्षत में बड़े आकार का एक नीर ( ) बनाएं। उस पर 'बुध यंत्र' को निम्न स्थापन मंत्र बोलते हुए स्थापित करें—

#### बुध स्थापन मंत्र

ईशाने बुधं स्थापयामि । अ॒ शूर्भुवः स्यः बुध  
इहागच्छ इहातिष्ठ । बुधाय नमः ।

यंत्र पर कुंकुम, अक्षत अपित कर दोनों हाथ जोड़कर बुध देव का स्मारण करते हुए निम्न इलोक का उच्चारण करें—

प्रियंगु कलिका श्यामं ऋषेणाप्रतिमं बुधम् ।

सौम्यं सौम्यं गुणोपेतं बुधं ते प्रणमाम्यहम् ॥

इसके बाद फिर निम्न मंत्र की 'सफेद इकीक भाला' से ६ माला प्रति दिन १५ दिन तक जप बरें—

#### बुध ग्रह यंत्र

// ३५ ग्रां ब्रीं ब्रीं सः बुधाय नमः //

Om Brahm Bream Broom Sab Budhaya Namah

मित्य मंत्र नप के पश्चात नीचे दिये बुध यंत्र विशेषि नाम स्तोत्र को बोलकर यंत्र की दीपक से आरती करें—

#### भी बुध पंच विशेषि नाम स्तोत्र

बुधो बुद्धिमतां शेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः ।

प्रियहू कलि श्यामः कं जलेत्रो मनोहरः ॥१॥

व होपमो रोहिणेयो नक्षत्रेशो दद्याकरः ।

विरुद्ध कार्य हन्ता च सौम्यो बुद्धि विवर्धनः ॥२॥

चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञानिनायकः ।

वहपीडाहरो दारा-पुत्र-द्यान्यपशुप्रदः ॥३॥

लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदा गुणिवत्सलः ।

पंचविशेषि नामानि बुधस्वैतानि यः पठेत् ॥४॥

स्मृत्या बुधं सदा तस्य पीढा सर्वा विनश्यति ।

तद्विने वा पठेद्यस्तु लक्ष्यते स मनोवत्सलः ॥५॥

साधना समाप्ति पर यंत्र माला जल में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री पैकेट - 340/-

# जीवन

जीवन पर बहुत उद्देश्य वाचक, पधरीला, कठोर और दुर्लभ है। जीवन पर पर इतना उत्तम चढ़ाव है कि विश्राम करने को क्षण पर को लिये भी कोई स्थान नहीं मिल पाता। जीवन के इस रस्ते पर अत्यन्त परीदी पगड़पिंडियाँ हैं, जिन पर आदमी चलकर के अपने आप को उलझा हुआ हो सहस्र करता है... और इसलिए हम सही दूर से देखे तो पूरे जीवन में कोई रस नहीं होता, कोई आनन्द नहीं होता, कोई चेतना नहीं होती, कोई फुलार नहीं होती।

जीवन का एक विशेष उद्देश्य ठीक है, और यह यह कि व्यक्ति उस ज्ञान को प्राप्त करे कि मैं यह जन्म क्यों हुआ है? यह चिन्तन पशु-पशी, शीट पशुग में नहीं हो सकता। जन्म लेने के लिये तो देवताओं में भी नहीं है। इसलिए भनुष्य जन्म को ब्रह्माण्ड की एक सर्वभैषण किया कहा गया है। परन्तु जन्म के पहले ही क्षण से तुम्हारी किया रमणीय की ओर जाने की किया हो जाती है। उस-जैसे एक-एक पशु बोलता जाता है, तुम भूत्यु के और अधिक निकट ठीके जाते हो, और भूत्यु की यह किया पशुओं में भी होती है। परन्तु पिर तुम्हें और पशुओं में क्या अतर है? अतर यह है कि तुम इस रहस्य को जान कर सकते हो कि पशु ने तुम्हें जीवन क्यों दिया है, जीवन का उद्दय क्या है? जीवन का लक्ष्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता है और जीवन में जीवन की ओर अग्रसर होने की क्रिया करता है, सोचता है, चिन्तन करता है, उसी का जीवन सार्थक है। और यह सर्वकाल अपने जीवन में पूर्णता की ओर अग्रसर होने की क्रिया करता है, तब जीवन में पृथ्वी का उदय हो और श्रेष्ठ गुरु मिल सकें। यदि जीवन में रेता कोई क्षण आये और हम गुरु को पहियान लें, उनके चरणों को पकड़ लें — यह जीवन है। गुरु ने जन्म लिया है और जन्म लेकर पूर्णता प्राप्त की है, वे ही समझ सकते हैं, कि जीवन को केसे पूर्णता दी जा सकती है।

जीवन की श्रेष्ठता तो आखी में, जीवन में, रोम-रोम में और प्रत्येक अणु-अणु में एक आनन्द, एक भिलोर भर देना है, इसलिए मैं तुम्हें उस रागर में हिंदूकोले खाने की किया भिलोर हह हूं जहाँ श्रेष्ठता है, जहाँ सुख है। और जीवन की इह व्याका का प्रारम्भ जहाँ भनुष्य जन्म ले है, वहीं अत ईट से साक्षात्कार में है। यह रास्ता आनन्दप्रद है, यह रास्ता भवुतता का है, अच्छता का है, यह रास्ता जीवन की प्रकृत्यता का है और सबसे बड़ी बात यह है कि प्रेम के माध्यम से जीवन के अणु-अणु जीवन है, श्रेष्ठता का है, यह रास्ता जीवन की प्रकृत्यता का है और अग्रसर होता है। और यह सर्वकाल के काग-कण और जीवन के रोम-रोम, जीवन के प्रत्येक काग्ये ने आनन्द का अहसास आ जाता है, एक सुनाथ और तप्पा आ जाती है।

अभी तक जो तुम्हारे जीवन था, वह हाढ़-मास से बना जीवन था, अभी तक तुम्हारे जीवन में कवल दासनाएँ थीं, स्वार्थ था, लालच था... तुम्हारे जीवन में ऐसा कुछ नहीं था, जिस पर गर्व किया जा सके। तुम बोह—बाया में ललड़ा, स्त्री-और-वन के पीछे लालच था... तुम्हारे जीवन में ऐसा कुछ नहीं था, जिस पर गर्व किया जा सके। तुम भोह—बाया में ललड़ा, स्त्री-और-वन के पीछे लालच था। गुरु तुम्हें एक क्षण रुक कर सोचने के लिये बाष्प करता है कि तुम मेरे शिष्य हो और हुश्वर ने तुम्हारा जन्म एक विशेष घासल था। गुरु तुम्हें एक क्षण रुक कर सोचने के लिये बाष्प करता है कि तुम मेरे शिष्य हो और हुश्वर ने तुम्हारा जन्म एक विशेष उद्देश्य के लिये किया है। और जब वह दीक्षा प्रदान करता है, तो वह क्षण शिष्य के जीवन का रवर्णित प्रभाव होता है, वहीं से जीवन का याताविक प्रारम्भ होता है। तब जीवन मृत्यु की ओर नहीं अमृत्यु की ओर अग्रसर होता है, पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

मैं तुम्हें जीवन का नया पाठ पढ़ाने आया हूं, मैं बढ़ाने आया हूं कि जीवन छलछलता हुआ झारना है, इसे तालाब की शक्ति में न बोर्ड, क्षणिक तालाब का पानी गंदला, भट्टेला और बदबूदार हो जाता है। तुम नुडासे लीदों कि जीवन का भ्रातृक देख को नृथ में कौसे परिवर्तित किया जा सकता है। उदासी, गम और रोना तो कान्द में जाने के बाद भी कर सकते हो। आओ भेरे रास्त जीवन नृथ में तल्लीन होकर पूर्णता प्राप्त करो।

और जीवन की पूर्णता तो विसर्जन में है, उसी प्रकार जैसे नदी रमुद में विसर्जित हो जाती है तुम नहीं हो और मैं समुद्र हूं, क्योंकि मैं तुम्हारा गुरु हूं। इसलिये मैं कह रहा हूं कि तुम्हें बहुत हेजी से आगे बढ़ना है और जिस समय तुम मुझमें... अपने आप को विसर्जित कर सकोगे, तापने आप को आत्मसंत कर सकोगे, वापस मेरे अश से पैदा होकर, वापस मेरे अश में पूर्णता प्राप्त कर सकोगे, तभी जीवन ने उच्चता प्राप्त कर सकोगे, यहीं जीवन का उद्दय है, वहीं जीवन का आनन्द है, और वहीं जीवन की चेतना और पूर्णता है।

— पूज्यपाद सदवृक्षदै�



‘जनवरी’ 2010 मंत्र-नश-यत्र विज्ञान ५२

# निर्भयता

तुम्हारे जीवन में दबराहट और परशानी क्यों हैं? लगा है थहरे पर उदासी की छल? आँखों के नीचे स्पष्ट धब्बे क्यों हैं? और क्यों हैं सारा शरीर निमुज्जा हुआ, थका हुआ बैजन सा? तुम्हारे जीवन में यह का कागजन ही क्यों?

मैं बैठा हूं तुम्हारे पास आवज तो दो, एक पुलाइ कर देवो तो सही, यह अपने आप तिरोहित हो जाएगा। क्योंकि जहा मैं बहां भए नहीं हो सकता, वहा चिन्ना, आधा, उरेशानियां और अड़दाने वहीं हो सकती, उदासी नहीं हो सकती। क्यों व्यर्थ परशान होते हैं जब तुम्हारे जीवन का रखबला मैं तुम्हारे हृदय में बैठा हुआ हर पल तुम्हें ताक रहा हूं।

आज तक विश्व भयातुर ही रहा डर हुआ शक्ति विनियोग द्वारा राखा हुआ। अगु-प्रभाणु के लाघे में संसार होने वाला, अपने ही मन की विश्वत में छटपटाता हुआ रीसकता हुआ। उसे उपने जीवन से अपने आप पास के परिवेश से, और अपने आप से भय लगने अग रहा है। पर मैं तुम्हें निर्भय करने के लिए आया हूं, तुम्हारे द्वाक हुए शिर को गर्व से ऊथा उठाने के लिये आया हूं।

मैंने जाईना के सूर्य उगा दिये हैं, अधियरा छठने लगा है, काली स्पष्ट रात समाप्त होने लगी है, मन में साहस का संचार होने लगा है। और मेरे जाईकों ने हिन्मत और हीसला आया है, कि मौत तो आँखों को ज्ञापद्धा नार वर नोय साले, काल के गाल पर थप्पड़ उड़ सके और निर्भय होकर अँगिंग खड़े रह सकें। क्योंकि इन विषाओं को ज्ञात है कि मैं इनके पीछे रहा हूं।

तुम्हारे आप पास के द्वादशण ने तुम्हारे मन को जमजेर बना दिया है, तुम्हें हतोत्साहित बना दिया है, मन ने एक भय और डर भर दिया है, इसलिए तुम्हारे बाजू थकने लगे हैं, इसलिए तुमने समझौता कर लिया है। वर ऐसी कायरत, ऐसी दुजदिली तुम्हारे छन्दर आई कैसे? तुम्हारे पास तो ऐसी जबनी होनी चाहिये, जो अपने सीन के ऊर से हिनालय को पीछे धकेल दे, तुम्हारी ढोकर में वह ताकत होनी चाहिये, जो ब्रह्मापूर्व को गंद ली तरह उछाल दे, तुम्हारी आँखों में तो आग की लफट होनी चाहिये।

तुम अज्ञन नम कवरों की सूक्ष्म में नहीं लिख आगे, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं, क्योंकि शक्ति का

पुज तुम्हारे साथ है। यही शक्ति प्रदान करने के लिए मैं तुम्हें डुला रहा हूं, जिससे मैं तुम्हारे बाजुओं

में ताकत वर रखूँ। मैं तुम्हें आवज दे रहा हूं, जिससे कैमे मैं तुम्हारे सीने में हीसला और हिन्मत

वर सबू। घरी पर पांव रखना, और इन तूफानों से टक्कर लेकर लक्ष्य पर पहुंच जाना मर्दानगी

है और मैं तुम्हें मर्दानगी का पाठ पढ़ाने के लिये निमत्रेत वर रहा हूं। मार्कण्डेय ने भी मृत्यु के

गाल पर थप्पड़ लगाकर वह स्पष्ट किया कि यदि शस्ते प्राप्त हैं तो निश्चय ही जीवन में असम्भव

को भी रम्भ किया जा सकता है, मौत तो मामूली ली जात है, ब्रह्मापूर्व को भी हिलाया जा

सकता है, और मर्माण्डेय ने यह सब कुछ किया। और जब तुम अपने आपको मुझे विसर्जित

कर रखोगे, जब तुम्हारा कोई अस्तित्व ही नहीं रहेगा, तो फिर काल किसके स्विराहने खड़

होगा? किर मृत्यु किसके द्विर को थप्पथपायेनी? क्योंकि उसके सम्मेलो मैं चट्टान की

तरह खड़ा मिलूगा और उस काल को, उस मृत्यु को मेरे सामने से लौटने के लिये विवश

होना ही चाहेगा।

- पूज्यपाद सद्गुरुदेव

"जलवरी" 2000 मंत्र-तंत्र-चत्र विज्ञान '३५'

# श्री विद्यावीक्षा

## और श्री यंत्र वेदों तेरे भाष्य को ही बदल दिया



स्व

नेत्रता के ५३ वर्षों बाद भारत के जनजीवन स्तर में काफ़ी प्रगति हुई है, परन्तु फिर भी यह प्रगति नमरों में ही अधिक घटित हुई, शामीण अचल हृपसे कम ही स्पर्शित हो सका है। आज भी गांवों में लोप गरीबी की सीमा रेखा से नीचे का जीवन जी रहे हैं, दिन भर कठोर परिवार के उपरान्त भी किसी प्रकार मात्र अन्न-जल की ही ल्पवस्था कर पाते हैं।

मेरा परिवार मी ऐसी ही कुछ स्थिति में था, पिता ब्राह्मण थे, पुरोहिताई ही जीविका का एकमात्र साधन थी, घर की हालत क्यानी थी। बड़ी मुश्किल से गांव की पाठशाला में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की, हालांकि मेरी आगे पढ़ने की इच्छा थी, लेकिन घर की तंगी के कारण मुझे किसी प्रकार की सहायता मिलना सम्भव नहीं था। पिता मुझे ज्यादा पढ़ाने लिखाने की झापेका उसी पैदॄक पुरोहिताई में लगाना चाहते थे, परन्तु मुझे इस काम से आतंरिक घृणा होती थी, मुझे लगता था कि इस नरह में जीवन भर दरिद्र ही बना रहूँगा। किसी प्रकार मुझे घर से शहर जाकर स्वयं कमाकर पढ़ने की अनुमति मिला।

गांव से मैं शहर आया तो काम पाने का काफ़ी प्रयास किया परन्तु काम नहीं मिला। दो-तीन दिन तक बिना कुछ खाए धूपता रहा, फिर एक जगह भवन निर्माण होता देख मैं वहां जा पहुँचा। वहां मुझे मजदूरी मिल गई, नित्य के पांच रूपये पारिश्रमिक के रूप में मिलते थे। शोध ही मैं एक अन्य मजदूर के साथ उसके छोटे से कमरे में रहने लगा और कौलेज में दायिता भी ले लिया। प्रातः कौलेज जाकर फिर दोपहर से मजदूरी करता। परन्तु इस नरह मैं दिन भर घक्कर निढ़ाल हो जाता था, कुछ समय बाद मेरा स्वास्थ्य गिरने लगा और मेरी पक्काई पर विपरीत असर होने लगा।

उग्रेजी द्वा महंगी थी, अतः मैं एक वैद्य से उपचार कराने लगा। वे कुछ पुड़ियों देने और मात्र २० पैसे लेने थे। वे अकेले ही सब कार्य करते थे, और समाज सेवा के रूप में ही

ऋग्वेद 'जनवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '३६' ४

जीवधिकान को जीवित रखे हुए थे, लगत मूल्य ही लेते थे। धीरे-धीरे आने जाने से उनसे अपनत्व ही मया और मैंने अपनी सारी राम कहानी कह सुनाई। वैद्य जी बोले — “इस प्रकार तुम नहीं पढ़ पाओगे, तुम्हारा पढ़ना जरूरी है, ऐसा क्यों नहीं करते कि तुम मेरे बहां ही रह जाओ, जो छोटे-मोटे काम मैं कहूँ उन्हें कर दो, और मुझसे रोज के पांच रूपये ले लिया करो।”

उस दिन से मैं वैद्य जी के पास ही रहने लगा, वे जड़ी-बूटी आदि जाने भेजते, उन्हें कूट-पीस कर अके बनाने को कहते। धीरे-धीरे मेरे कार्य से वे बहुत संतुष्ट हो गये, अब उनके महत्वपूर्ण कार्यों की भी जिम्मेदारी मैं ही सम्मालने लगा था। मैं उनका विश्वासपात्र बन चुका था, वे अपने आंतरिक जीवन की गोपनीय बताते थे मुझे बताने लगे थे।

एक दिन उन्होंने बताया कि वे परमहंस स्वामी निखिलश्वराजन्द जी के शिष्य हैं और आज से ३० वर्ष पूर्व सद्गुरुदेव से ही उन्हें आयुर्वेद वीक्षा प्राप्त हुई थी। तब से आज तक आयुर्वेद की ही सेवा में लगे हैं, यही गुरुदेव की आशा थी। उन्होंने यह भी बताया कि गुरुदेव अपने गृहस्थ रूप में इस समय जोधपुर (राज.) में है, जिन्हें डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी के नाम से जाना जाता है। मेरे पूछने पर कि क्या आप बाद मैं उनसे कभी मिले, वैद्य जी ने कहा — “गुरुदेव ने वहां आने को मना किया है। कहा है कि समय आने पर मैं तुम्हें बुलाऊंगा, तब मैं उनके बुलाने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, क्या मालूम कब समय आए, परन्तु तुम तो वहां जा सकते हो। तुम शीघ्र जाकर उनसे मिलो, वे अत्यत कृपालु हैं, उनकी कृपा प्राप्त कर जीवन को धन्य किया जा सकता है। जीवन में गुरु की आवश्यकता होती ही है, तुम उन्हें अपना गुरु मानकर उनसे कुछ प्राप्त करो।”

मैं शोध ही जोधपुर के लिये रवाना हुआ, वहां गुरुदेव के दर्शन हुए — विश्व व्यक्तित्व, न जाने कितनी रहस्यमय सम्भावनाओं को अपने मैं समेटे हुए विश्व व्यक्तित्व! उन्होंने

इतारा  
मया औ  
केसे अ  
स्वर मे  
“तेरे भ  
वीक्षा द  
करनी ह  
कुछ औ  
श्री यं

हे, तो उ  
अपने उ  
मे 'श्री  
विश्व  
जी ज  
चतु

जागरण  
बना कि  
उसके ब  
आष्टकोण  
होता है  
राशियों  
वरुणानि  
करने व

के विपि  
के न वि  
जाता है  
बोडशाव  
की सम्प  
वहां हर  
नहीं होत

पत्रि  
मान  
साध  
आपच  
पांच-  
आपल

झारा कर मुझे अपने पास बुलाया, मैं उनके चरणों में हुक गया और सारा वृत्तांत कह सुनाया कि मुझे हरिहरानन्द जी ने कैसे आपके पास आने की सलाह दी। गुरुदेव से मैंने भीमे स्वर में कहा — आप मेरे गुरु हैं, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

गुरुदेव वो क्षण मध्ये मुस्कान बिखुरते रहे, बोले — ‘तेरे भाव सुन्दर हैं, आज पूर्णिमा है, आज ही मैं तुझे गुरु दीक्षा दूंगा और श्री विद्या की दीक्षा भी दूंगा। तुझे साधना भी करनी होगी।’ पूर्ण गुरुदेव ने बाबू में श्री विद्या के सम्बन्ध में कुछ और भी तथ्य बताये, जो संधेष्प में इस प्रकार हैं —

### श्री यंत्र

श्री विद्या को पुंजीशूल कर जब आकार दिया जाता है, तो उसे ‘श्री यंत्र’ कहते हैं। इस यंत्र का निर्माण करना ही अपने आप में अत्यंत जटिल कार्य है। इसकी संरचना के बारे में ‘श्री विद्या रत्नाकर’ में उल्लेख है —

विन्दु चक्रे स्तूपतोकः, त्रिकोणे तपोतोकः, अष्टकोणे जनतोकः, अन्तर्दशपरे महातोकः, बहिर्दशारे स्तूपतोकः, चतुर्भुजारे मुद्रतोकः, प्रथमद्वाते भूतोकः।

श्री यंत्र में मनुष्य के सातों सूक्ष्म शरीरों की शक्ति जागरण की सम्भावना निहित होती है। श्री यंत्र के केन्द्र में बना विन्दु मनुष्य के सातवें सूक्ष्म शरीर का निरूपण होता है। उसके बाहर बाला त्रिकोण तप लोक को दर्शाता है, इस प्रकार अष्टकोण से लेकर बाहर तक के वृत्त में सातों शरीर का निरूपण होता है। इसी यंत्र में सूर्य, चन्द्रदि ग्रहों, २७ नक्षत्रों, १२ राशियों, इन्द्र के ऐरावत हाथी, उच्चैर श्रवा घोड़ा, सर्व समुद्र, वसुणादि देवता, मन्वार वृक्ष आदि धन-धान्य वैभव प्रदान करने वाली सकल सम्पदाओं की स्थापना होती है।

इस यंत्र की विभिन्न रेखाओं से साधक के ही शरीर के विभिन्न ऊंचों का सम्पर्क सिद्ध किया जाता है। मध्य के केन्द्र विन्दु का सम्पर्क साधक के ब्रह्मरन्ध से सिद्ध किया जाता है, त्रिकोण का ललाट से . . . आदि। इसी यंत्र के षोडशवल, कलमदल आदि में कुण्डलिनी नक्षों के शक्ति विकास की सम्भावना निहित होती है। इस प्रकार नहाँ श्री यंत्र होता है वहों हर प्रकार का भौतिक ऐश्वर्य और आर्थिक सम्पदा ही नहीं होती, अपिनु ज्ञान की वृष्टि से भी पूर्णना प्रवान करने में

**पत्रिका प्राप्त बही होती है** — आपकी शिकायत बाजिब है। पत्रिका कायालय में नित्य प्रति पत्र प्राप्त होते हैं, कि उन्हें पत्रिका प्राप्त नहीं हुई, इस सम्बन्ध में आपका पत्र आने पर तुरन्त दूसरी पत्रिका भेज दी जाती है। वास्तविकता यह है कि सभी सत्त्वस्यों को एक साथ पत्रिका भेजी जाती है, लेकिन इक विद्या की गडबडी के कारण कई बार पत्रिकाएं बीच में ही गायब हो जाती हैं। यदि आप अपने आपको समर्पित विषय मानते हैं, तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उस तहसील के प्रत्येक सदस्य विषय को पत्रिका प्राप्त हो जाये। हो सकता है, कि इसमें आपको दो-चार विन का समय देना पड़े लेकिन वही सद्गुरु के शब्द — सेवा धर्म जाति कठोरा।

### श्री यंत्र साधना

दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत ‘मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठित श्री यंत्र’ को अपने घर के पूजा स्थान या दुकान में स्थापित कर दें। नित्य इस यंत्र के सामने धूप, अश्रवस्ती दिखाकर निम्न मंत्र का मात्र एक बार उच्चारण कर दें —

श्री ह्रीम क्लीम त्रिशक्ति लक्ष्यम्बादी नमः ।

Shreem Hreem Kleem Trishakti Lakshyambua Shree Namah

मात्र इतनी साधना ही पर्याप्त है।

यह श्री यंत्र पूर्ण सहायक है।

इस यंत्र के बारे में कहा गया है, कि जिस घर में इस यंत्र का स्थापन नहीं होता है, वहाँ लक्ष्मी की ज्येष्ठा अर्थात् बड़ी बहन अलक्ष्मी का वास होता है। फलस्वरूप दरिद्रा जीवन अलग पूर्ण, अविद्या पूर्ण जीवन का ही वर्चस्व रहना है।

त्रियुरेशीमद्वायंत्रं विष्टुत्तमकमीश्वरि,

थो जावराति स योगीन्द्रः स शम्भुः स हरिविद्यः ।

विष्ट ब्रह्माण्डवर्जान्नं श्रीचक्र स्व विशेषतः ॥

(योगीनी इवय)

तीनों लोकों में श्री यंत्र के समान यंत्र नहीं है, यह ईश्वर का साकार रूप है, जो इस यंत्र को जानता है, इसकी पूजा करता है, इसकी साधना करता है, उसे ब्रह्मा, विष्णु और शिव की कृपा प्राप्त होती है, उसे ब्रह्माण्ड का समस्त ज्ञान प्राप्त होता है।

### श्री विद्या दीक्षा

श्री विद्या की दीक्षा का अर्थ है कि साधक का जो शरीर है, उसे ही श्रीयुक्त बना दिया जाये, साधक के शरीर को ही श्री यंत्र बना दिया जाये — यही श्री विद्या दीक्षा का सार है। और ‘श्री’ का तात्पर्य है — जीवन की पूर्णता, यश, वैभव, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, धन-धान्य, और वह सब कुछ जो हमारे जीवन की आवश्यकता है। वह सब कुछ हमें प्राप्त हो, उसे ‘श्री’ कहते हैं। दरिद्रता युक्त जीवन को ‘श्री’ नहीं कहते हैं। जीवन की सभी गतिविधियों के हम संचालक हों, हम निर्धारिक हों, हमारा उन पर नियंत्रण हो सके, हम परिस्थितियों का नियंत्रण कर सकें, यही श्रीयुक्त जीवन है। और यह तभी प्राप्त हो सकता

है जब साधक को गुरु द्वारा 'श्री विद्या दीक्षा' प्राप्त हो सके।

इस दीक्षा को प्राप्त करने के बाद साधक का शरीर श्री श्री यंत्र के तत्व समाहित हो जायेगे तो सर्वस्व, हर प्रकार की उत्तमि, नेतृत्व स्वतः, ही प्राप्त हो जायेगी। जीवन के सार, उसकी मठता और रहस्य को केवल श्री यंत्र का शरीर में स्थापन कर ही समझा जा सकता है, ऐसा श्री विद्या दीक्षा से ही संभव है।

पूर्णिमा के दिन साधकाल को शुभ मुहूर्त में पूज्य गुरुदेव ने विद्वित गुरु दीक्षा एवं श्रीविद्या दीक्षा प्रदान की। दीक्षा प्राप्त करने ही शरीर एकदम हल्का हो गया, मुझे जैसे भिखारी आभ्यांस की भी ऐसा लगा जैसे विश्व की समस्त सम्पद का मैं स्वामी हूँ। किसी भी प्रकार का कोई अभाव या न्यूनता मेरे जीवन में अब है ही नहीं, एक पूर्णता का, संतुष्टि का आभास हो रहा है। उसके बाद ऐसा लगने लगा है कि मैं किसी भी

विषय पर बोल सकता हूँ, ज्ञान की वृष्टि से भी मुझे पूर्णता अनुभव होती है। दीक्षा प्राप्त करने के बाद मैं हरिहरानन्द जी के औषधालय में लौट आया।

कुछ दिनों पश्चात स्वामी हरिहरानन्द जी (वैद्य जी) को हिमालय प्रस्थान की आज्ञा प्राप्त हुई, गुरुदेव की आज्ञा मानकर वे अपनी सर्वस्व सम्पत्ति मुझे सौंप कर हिमालय की ओर प्रस्थान कर गये। मुझे अनायास ही इनी बड़ी सम्पत्ति प्राप्त हो गई, अच्छा खासा चलता व्यवसाय मिल गया, जो गुरुदेव द्वारा दी गई श्री विद्या दीक्षा का ही परिणाम था। गुरुदेव की आज्ञानुसार आयुर्वेद और रसायन के क्षेत्र में आज मैं समर्पित भाव से संलग्न हूँ। आज मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि 'श्री विद्या दीक्षा' को गुरु द्वारा प्राप्त कर घर में श्री यंत्र की स्थापना, साधना करना ही सकल सम्पदा और जान दोनों को प्राप्त करने का उपाय है।

## इक्कीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ कब?

य

ह प्रश्न बना ही है, कि क्या सन् २००० को इक्कीसवीं शताब्दी का प्रथम वर्ष मानना चाहिए अथवा परन्तु साधक के लिये वह चिन्तन का विषय नहीं हो सकता। उसे तो वह स्पष्ट होता ही है, कि नव वर्ष का प्रारम्भ ही, या नव शताब्दी का प्रारम्भ ही, या किसी नए विवर का प्रारम्भ हो ये तो वे दिवस मात्र ही होते हैं जब गुरु अपने शिष्य को कुछ प्रवान करने का मानस बनाते हैं। और गुरु का कार्य होता है चेतना प्रदान करना और सही कहा जाये तो जिस दिन साधक के जीवन में चेतना का यह सूर्योदय होता है, वही दिन उसके लिए नवीन शताब्दी का प्रारम्भिक दिवस भी होता है।

शताब्दी का प्रारम्भ कभी भी हो, यह कोई महत्वपूर्ण नहीं हो। आवश्यक यह नहीं है कि हम इस बात को जानें कि कब प्रारम्भ हो रही है नई शताब्दी, अपितु सार्वतो तो इस बात में है कि हम नवीन शताब्दी में क्या करने जा रहे हैं, इस पर मनन करें। और यदि हम यह संकल्प सन् २००० में लेते हैं, तो वह हमारे लिये नवीन शताब्दी है, यदि हम वह संकल्प अगले वर्ष लेंगे तो अगले वर्ष ही नवीन शताब्दी होगी। और यदि अभी भी संकल्प शक्ति नहीं आ पायेगी तो वह इक्कीसवीं शताब्दी समाप्त भी हो जायेगी और नव भी इक्कीसवीं शताब्दी का हम प्रारम्भ ही ढूँढ़ते रहेंगे।

किसी भी पुस्तक में कई अध्याय होते हैं, और उनके पूर्व भी एक भूमिका होती है, जिसमें पूरी पुस्तक का परिचय होता है। यदि यह मनन करें कि पुस्तक का प्रारम्भ प्रथम अध्याय से है अथवा भूमिका से तो इसमें कठिनाई अवश्य होगी, क्लृतुविद्या अवश्य अनुग्रह होगी, क्योंकि भूमिका में भी काफी सूक्ष्म ज्ञान निहित होता है। वर्ष २००० को तथाकथित इक्कीसवीं शताब्दी का प्रथम वर्ष न भी कहा जाये, तो भी उस शताब्दी का भूमिका वर्ष तो है ही। और यही वह वर्ष है जब साधकों को नीन मजबूत करनी है इक्कीसवीं शताब्दी की, यह नीन प्रशस्ति का वर्ष है, भूमिका निर्माण का वर्ष है, जगरण का वर्ष है, इसलिए पूरी इक्कीसवीं शताब्दी का यह सबसे महत्वपूर्ण वर्ष है।

और समय तो निकलता जायेगा, बहता जायेगा, हम दिवसों को, वर्षों को नवीन नाम से, नवीन संज्ञा से सम्बोधित करते रहेंगे, परन्तु जीवन में वह सूर्योदय कब होगा, जिसकी हमें प्रतीक्षा है, विचार का विषय तो यह है, चिन्तन का विन्दु तो यह है। हमें ठान लेना है पूर्ण संकल्प के साथ, पूर्ण क्षमता के साथ उठ खड़े होना है और अपने अन्दर शक्ति को पहिचानना है! नीन-हीन बने रहने से कैसे कार्य चल सकता है? इस दीनदा की स्थिति से जब निकल सकेंगे तभी अपना विकास भी हो सकेगा, तभी गुरु के कार्यों को ठोस रूप दे सकेंगे। साधकों के लिये तो इक्कीसवीं शताब्दी प्रारम्भ हो ही चुकी है।

पार्वती  
जीरीश  
पर्वत के  
लिये जि  
या तथा  
आनन्द  
दरकर  
जा रहा  
आइचर  
भील क  
फल आ  
पहुंचा रे

दत्तत्रिव  
करने के  
प्रवाट है  
समर्पण  
स्मरण  
विशेष प्र  
अभिक्षि



# दिव्य दत्तात्रेय स्तोत्र

स्तोत्र वस्तुतः, हृदय के धारों को स्तुति या काल्प रूप में अपने आराध्य को अर्पित करने की प्रक्रिया है। इसमें अन्य किसी कर्मकाण्ड या तंत्र विधान की आवश्यकता नहीं होती। स्तोत्र तो मात्र हृदय से पूर्ण भावमय होकर पढ़े जाते हैं। हृदय के भाव और स्तोत्र की शब्द संरचना, इन्हीं दोनों का सम्मिलित प्रभाव साधक या स्तुतिकर्ता को अभीष्ट सिद्धि प्रदान करता है। मात्र स्तोत्र पाठ से ही जीवन में कई प्रकार की अनुकूलताएं प्राप्त हो जाती हैं।



**S**बार भगवती पार्वती की भूमण्डल पर विचरण करने की विशेष इच्छा हुई, तब उनके दृश्य आग्रह पर भगवान शिव नन्दी बैल की सवारी पर विराजते हुए पार्वती के साथ भूमण्डल के दृश्यों का अवलोकन करने के लिये गौरीशंकर पर्वत से निकल पड़े। विचरण करते हुए वे लोग विन्ध्याचल पर्वत के एक दुर्गम बन प्रान्त में पहुंचे, जहाँ एक भील छात्र में फरमा लिये शिकार के लिए धूम रहा था। उसका शारीर बड़ के समान कठोर था तथा वह एक ऐसे पंछी वाले बाघ की मारने में प्रवृत्त था। भील वह आनन्द और निश्चिन्तता से खड़ा था। बाघ एक भूम को देख कर उड़कर भागने लगा और उसके पांछे पांछे फिरन भी उसे खुदेहता हुआ जा रहा था।

इस अद्भुत दृश्य को देखकर पार्वती ने शंकर जी से धोर अप्तन्य व्यक्त किया, तब भगवान शंकर बोले - 'हे पार्वती! इस भील का नाथ अत्यन्त धर्मतिथा है, नित्य बन से लकड़ी, कन्द-मूल-फल आदि लेकर विना कुछ पारिश्रमिक लिये ही मुनियों के आपमों में पहुंच देता है।'

वहीं दलाक्षा मुनि निवास करते हैं, जिन्होंने एक बार भगवान दत्तात्रेय की स्पर्शनगमिता (जो स्परण करते ही पहुंच जाये) की परीक्षा करने के लिये उनकी स्तुति (स्तोत्र) की थी। फिर क्या तत्काल दत्तात्रेय प्रवट हो गये। मुनि ने छात्र लोड कर कहा कि 'मैंने तो आपकी स्पर्शनगमिता की परीक्षा भाज के लिये सामान्य रूप से ही आपका स्परण किया था, आप मेरे स्परण करते ही उपस्थित हो गये, मेरा कोई विशेष प्रयोगन तो नहीं था, इसलिए मेरे अपराध को शमा करें।'

इस पर दत्तात्रेय बोले - 'मुझे कोई भाव-कुभाव, शक्ति या अभक्ति से तत्त्वीयतापूर्वक स्परण करे तो मैं उसके पास पहुंच जाता

हूं और उसकी अभीष्ट वस्तु उसे प्रदान करता हूं। तुम युक्तमें जो मामना चाहो, मैं तुम्हें वह प्रदान करूँगा।'

**स्तोत्र से जाग :** इस स्तोत्र के पाठ से शत्रु परास्त होते हैं, चाहे वे बाह्य शत्रु हों या आंतरिक शत्रु जैसे काम, क्रोध, मोहादि। स्तोत्र के नियमित पाठ से मोक्ष मार्ग अवश्य मिलता है। ऐसा वेवर्षि नारद ने स्वयं कहा है, कि इससे समस्त रास्ता जान तथा मध्यात्म जान प्राप्त होता है, स्वास्थ्य लाभ होता है, तथा लक्ष्यों का भी विशेष अनुयुक्त प्राप्त होता है।

**स्तोत्र सिद्धि विधि :** किसी भी दिन से इस स्तोत्र साधना को प्रारम्भ करें, अपने सामग्रे गुस्से चित्र यवं भगवान दत्तात्रेय का चित्र (यवि द्वी) रखलें, गुरुपूजन (दैनिक साधना विधि 'गुस्ताक' के अनुभाव) के बाद दोनों विद्रों पर चन्दन का लिलक, अक्षत और पुष्प अर्पित करें, अगरबत्ती जलावें। दोनों हाथ जोड़कर दत्तात्रेय का ध्यान करें -

जटधरं परायु रंभं शूलहस्तं कृपाविधिम् ।

सर्वरोगहरं देवं दत्तात्रेयमहं भजे ॥

फिर दाढ़िने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग बोलें -

अस्य श्रीदत्तात्रेय स्तोत्र मंत्ररथ भगवान नारद ऋषि:  
अनुष्टुप छन्दः, श्रीदत्तः परमात्मा देवता, श्रीदत्त प्रीत्यर्था जपे  
विनियोगः ।

फिर अपनी कायना को मन में बोलते हुए जल छोड़ दें और स्तोत्र पाठ प्रारम्भ करें। श्लोकपूर्वक दो माह तक यदि एक पाठ (श्लोक के अर्थ सहित, शी नित्य किया जाये, तो जिस कामना से अनुष्टुप प्रारम्भ किया गया है, उसके परिणाम सामने आने लगते हैं। आधिक उड़ाति, स्वास्थ्य लाभ, तथा मन में निर्मलता स्पष्ट गोचर होती है।

जगदुत्पति कत्रें च स्थिति संहार हेतवे ।

भवपाश विमुक्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१॥

जरा जन्म विनाशाय देह शुद्धि कराय च ।

विगम्बर वयामृते दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥२॥

कर्पूर कान्ति देहाय ब्रह्मपूर्तिधराय च ।

वेद शास्त्र परिज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥३॥

हस्त दीर्घ कृश स्थूल नाम गोत्र विवर्जित ।

पञ्च भूतेक दीप्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥४॥

यज्ञ भोक्त्रै च यज्ञाय यज्ञ रूप धराय च ।

यज्ञ प्रियाय सिद्धाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥५॥

आदी ब्रह्म मध्ये विष्णुरन्ते देवः सदाशिवः ।

मूर्तित्रय स्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥६॥

भोगालयाय भोगाय योग्य योग्याय धारिणे ।

जितेन्द्रिय जितज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥७॥

दिगम्बराय दिव्याय विष्णु रूप धराय च ।

सदोदित परब्रह्म दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥८॥

जम्बूदीपे भ्रष्टाक्षेत्रे मातापुर निवासिने ।

जयमानः सतां देव दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥९॥

भिक्षाटनं गृहे ग्रामे पात्रं हेमयं करे ।

नाना स्वादमयी भिक्षा कत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१०॥

ब्रह्मज्ञानमयी मुद्रा वस्त्रे चाकाश भूतले ।

प्रज्ञानधन बोधाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥११॥

अवधृत सदानन्दं परब्रह्म स्वरूपिणे ।

विदेह देह रूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१२॥

सत्य रूप सदाचार सत्यं धर्मं परायण ।

सत्याश्रय परोक्षाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१३॥

शूलहस्तं गदापाणे बनमाला सुकन्धर ।

यज्ञसूत्रधर ब्रह्मन् दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१४॥

क्षराक्षर स्वरूपाय परात्पर तराय च ।

दत्त मुक्ति पर स्तोत्र दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१५॥

दत्तविद्याय लक्ष्मीश दत्त स्वात्म स्वरूपिणे ।

गुण निर्गुण रूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१६॥

शत्रु नाश करं स्तोत्रं ज्ञान विज्ञान दायकम् ।

सर्वधाप शमं याति दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥१७॥

इदं स्तोत्रं महाद्विष्ट दत्त प्रत्यक्ष कारकम् ।

दत्तात्रेय प्रसादाच्च नारदेन प्रकीर्तितम् ॥१८॥

इस संसार की उत्पत्ति और संहार तथा पालन करने वाले, भव संसार के कर्म बंधन की दूर करने वाले भगवान दत्तात्रेय के श्री चरणों में मेरा आवपूर्ण नमन हो ॥१॥

जन्म और मृत्यु के चक्र को समाप्त करने वाले, मानव देह को पावन बनाने वाले, आकाश द्वा जिनका वस्त्र है, ऐसे दयापूर्ति भगवान दत्तात्रेय को नमन हो ॥२॥

कपूर के समान ध्वनि देह वाले, साक्षात ब्रह्म स्वरूप, समस्त वेद शास्त्रों के ज्ञान से परिपूर्ण भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन स्वीकार हो ॥३॥

हस्त दीर्घ, कृश स्थूल, नाम गोत्र से रहित, पृथ्वी आकाश आदि पृथ्वीभूतों में जिनका दीप्त द्वारा रहा है, ऐसे भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन हो ॥४॥

यज्ञ भाग की यज्ञा करने वाले, यज्ञ के रहस्य को जानने वाले, साक्षात यज्ञ स्वरूप, यज्ञ को चाहने वाले, परमसिद्ध भगवान दत्तात्रेय को नमन हो ॥५॥

सृष्टि के अद्वितीय में जो ब्रह्म स्वरूप है, मध्य में विष्णु स्वरूप और अंत में साक्षात शिव स्वरूप, इस त्रिपूर्ति स्वरूप भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन हो ॥६॥

समस्त संसारिक भोगों को देने वाले, समस्त ऐश्वर्य का भोग करने वाले, समस्त योग्यता को द्याया करने वाले, जिनेन्द्रिय, समस्त शत्रुओं पर विनाशप्राप्त करने वाले भगवान दत्तात्रेय को नमन हो ॥७॥

आकाश के समान निर्भज, दीप्तिमय, विष्णु स्वरूप वाले, सैवेन उचिति प्रदान करने वाले, ब्रह्म स्वरूप भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन हो ॥८॥

जम्बूदीप में महासिंह के मातापुर, इस स्थान विशेष में प्रकट हुए द्वन्द्वाधिदेव भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन स्वीकार हो ॥९॥

अपने हृष्ट में स्वर्णमय पात्र लेकर प्रचेक याम में और प्रत्येक घर में भिक्षाटन करने वाले, अनेक स्वाविष्ट भिक्षात्र ग्रहण करने वाले भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन स्वीकार हो ॥१०॥

ब्रह्म ज्ञानमयी मुद्रा से दुर्ल, आकाश और भूतल ही जिनके वस्त्र हैं, समस्त ज्ञान से परिपूर्ण भगवान दत्तात्रेय को नमन प्राप्त हो ॥११॥

स्वक आनन्द में भ्रे हृष, चिन्ताओं से रहित, परब्रह्म स्वरूप, देह के द्वन्द्वों से रहित, दवित देह वाले भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन प्राप्त हो ॥१२॥

सत्य स्वरूप, सदाकाश से युक्त, ज्ञानात्म धर्मगग, सत्य का आश्रय लेने वाले, परोक्ष स्वरूप भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन हो ॥१३॥

अपने हाथों में चिन्हालू और गदा धारण किए हृष, काष्ठ में बनमाला पहने हुए, यज्ञोपवीत धारी भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन स्वीकार हो ॥१४॥

कर और अकर स्वरूप, निर्गुण और समाकर रूप धारी, अपने स्तोत्र के माध्यम से साधकों को मुक्तिप्रदान करने वाले भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन प्राप्त हो ॥१५॥

साधकों को विद्या प्रदान करने वाले, ऐश्वर्यशाली, अपने उपासकों को अपना स्वरूप प्रदान करने वाले, निर्गुण और संगुण दोनों रूप धारी भगवान दत्तात्रेय को मेरा नमन स्वीकार हो ॥१६॥

यह स्तोत्र जम्बुओं का नाश करने वाले, ज्ञान और विज्ञान को प्रदान करने वाले, और पाणों का शमन करने वाले भगवान दत्तात्रेय का है, ऐसे द्वन्द्वाधिदेव भगवान दत्तात्रेय को मैं सावपूर्ण नमन करता हूं ॥१७॥

प्रत्यक्ष पत्न प्रदान करने वाले इस विष्णु स्तोत्र को भगवान दत्तात्रेय की कृपा से नारद मुनि ने उपासकों के कल्पाण छेत्रु उच्चरित किया ॥१८॥

# अनुभूति

मैले संशय भरे होठो पर  
आकर यह शब्द अपना अर्थ खो  
वैदा है। अनुभूति आँखों से नहीं,  
प्राणों से होती है। और तुम्हारे प्राणों पर सन्देह, स्वार्थ और अविश्वास  
के हजार—हजार काले, मोटे पटे टांगे हैं। आवश्यकता है इन्हें हटाने की  
और गुरु रूपी सूर्य की तेजस्वी किरणों को अन्दर पहुँचाने की, जिससे  
मन का अधियारा छट सके, सीलन और बदबूदार हृदय कथा में उजली  
धूप पहुँच राके और तुम आँखों का अर्थ लेकर गुरु चरणों को  
प्रशालित कर सको। और ऐसा करके जब तुम सिर ऊंचा उठाओगे तो  
सभी देवी—देवता साकात् साशरीर सामने स्पष्ट दिखाई देंगे।

अनुभूति शब्द बना है अनुभव से और अनुभव का तत्पर्य है  
चेतना, जीवन्ताता, सप्राणता। और तुम्हारे चेतना नहीं है, नावनामक शब्दों  
में तुम चलते—फिरते 'मृत' व्यक्ति हो, जिसमें कोई हिलोर नहीं, तरंग नहीं,  
रछाह या उत्साह नहीं।

तुम्हारा जीवन भी हद्दे हुए लालाब की तरह है, तालाब में कोई लहर  
नहीं उठती, वह निर्जीव सा बड़ा होता है और उसका पानी एक दिन सूख जाता  
है। पर समुद्र सूखता नहीं है, क्योंकि उसमें तरंग है।

और आवश्यकता है तुम्हारे सरेंदर को समुद्र में समावेश करने की, उसे धारा  
की तरह बहने दो, रोको मत . . . गुरु रूपी समुद्र तुम्हें आवाज दे रहा है, वह तो हर क्षण नदी  
को अपने वक्ष रथल में समेटने के लिये आतुर है, अपने में आत्मसात करने के लिये प्रयत्नशील है। पर वह नदी बहे तो भी,  
धारा बढ़े तो भी, ये ग के साथ आगे बढ़े तो सही, ये ग के साथ समुद्र में निले तो रुही . . . और जिस दिन शिष्य रूपी नदी  
गुरु रूपी समुद्र में विसर्जित हो सकेगी, उस दिन अपने आप तुम्हें अनुभूति हो जायेगी। निश्चय ही, क्योंकि तभी तुम जीवन्ता  
हो सकोगे, सप्राण हो सकोगे, विसर्जित हो सकोगे, और यह विसर्जन ही अनुभूति के द्वारा खोल देगा।

तुम मेरे पास आओ, मेरे स्नेह की वर्षा में अपने आपको भीगने दो, मेरे चार की फुहार में अपने आपको तरंगित होने  
दो, मेरा स्पर्श कर शरीर को पुलकिता होने दो, तब तुम्हें आनन्द की अनुभूति होगी, तब तुम्हारा शरीर मेरी सुगन्ध से सुवासित  
हो सकेगा आर तुम सही अर्थों में धूप हो सकोगे।

एक बार प्रथम तो करके देखो, निश्चय ही तुम्हारे आँखों की शिलमिलाहट में पूर्ण अनुभूति हो सकेगी विशाट  
विस्मयकारक . . . रोमांचयुक्त . . . धिरकनमय नृत्य के साथ।

- पूज्यपाद सद्गुरुदेव ■

**सामार्या**

जीवन के हिए आदर्शक किसी भी कार्य के लिए, चाहे वह ध्यान से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो,  
 घर में शुभ उत्तम से सम्बन्धित हो अथवा अच्छी भी नार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का  
 उपयोग कर सकते हों और सफलता का प्रतिशत 99.9% अपने भाग में अंकित हो जाएगा। यदि किसी  
 लाभवाला आप ऐसा समय का उपयोग नहीं कर सकते तो मध्यम समय का प्रयोग कर सकते हों उन  
 काल में भी कार्य पूर्ण होता है कार्य पूर्ण होने में विनम्र होता है, लिन्दु सफलता निलटी है। निम्न  
 समय में किसी भी प्रकार का कार्य का प्रारम्भ न करें।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निम्न समय
रविवार (2, 9, 16 जनवरी)	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 12.24 से 2.48 तक सायं 4.24 से 4.30 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 10.00 से 12.24 तक दोपहर 2.48 से 4.24 तक रात्रि 9.12 से 11.36 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 8.00 से 7.36 तक सायं 4.30 से 7.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक
सोमवार (3, 10, 17 जनवरी)	प्रातः 6.00 से 10.48 तक दोपहर 1.12 से 6.00 तक सायं 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक सायं 6.00 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	प्रातः 10.48 से 1.12 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
मंगलवार (4, 11, 18 जनवरी)	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 10.00 से 10.48 तक दोपहर 12.24 से 2.48 तक सायं 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक सायं 5.12 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	प्रातः 10.48 से 12.24 तक दोपहर 2.48 से 5.12 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
बुधवार (5, 12, 19 जनवरी)	प्रातः 6.00 से 11.36 तक सायं 6.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 11.36 से 12.00 तक दोपहर 1.30 से 2.00 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 10.48 से 2.00 तक	प्रातः 6.00 से 6.48 तक दोपहर 12.00 से 1.30 तक दोपहर 2.00 से 5.12 तक सायं 6.00 से 6.48 तक
गुरुवार (6, 13, 20 जनवरी)	प्रातः 6.00 से 6.48 तक प्रातः 10.48 से 12.24 तक दोपहर 3.00 से 6.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक	प्रातः 5.12 से 6.00 तक प्रातः 8.24 से 10.48 तक दोपहर 1.12 से 1.30 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 5.12 तक प्रातः 6.48 से 8.24 तक दोपहर 12.24 से 1.12 तक दोपहर 1.30 से 3.00 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 9.12 से 10.00 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक
शुक्रवार (7, 14, 21 जनवरी)	प्रातः 9.12 से 10.30 तक प्रातः 12.00 से 12.24 तक दोपहर 2.00 से 6.00 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 2.00 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 9.12 तक दोपहर 12.24 से 2.00 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 10.30 से 12.00 तक सायं 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक रात्रि 2.00 से 2.48 तक
शनिवार (1, 8, 15 जनवरी)	प्रातः 10.48 से 2.00 तक प्रातः 5.12 से 8.00 तक सायं 5.12 से 6.00 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 9.00 तक दोपहर 2.48 से 4.24 तक सायं 6.48 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 9.00 से 10.48 तक दोपहर 2.00 से 2.48 तक सायं 4.24 से 5.12 तक सायं 6.00 से 6.48 तक

\* विशेष: 22 जनवरी से 23 जनवरी 2000 तक के श्रेष्ठतम गुहातों का विवरण अन्तर्गत निम्न तालिका में प्रस्तुत है-

22, 23 जन., 5, 12 वार्ष.	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00, प्रातः 9.12 से 9.30, दोपहर 3.36 से 5.12, रात्रि 8.24 से 10.48
23, 30 जन., 6, 13 वार्ष.	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 10.00, सायं 6.48 से 7.36, रात्रि 8.24 से 10.00, रात्रि 3.36 से ब्रह्मघूर्त 4.24
24, 31 जन., 7, 14 वार्ष.	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 7.30, प्रातः 10.48 से दोपहर 1.12, दोपहर 3.36 से 5.12, सायं 7.36 से 10.00
25 जन., 1, 10 वार्ष.	प्रातः 8.00 से 8.24, प्रातः 10.00 से 12.24, सायं 4.30 से 5.12, सायं 7.36 से 10.00, रात्रि 3.36 से 4.24
26 जन., 2, 9 वार्ष.	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00, प्रातः 7.36 से 9.12, दोपहर 3.36 से 6.00, सायं 6.48 से 10.48
27 जन., 3, 10 वार्ष.	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 8.24, प्रातः 10.48 से 1.12, सायं 4.24 से 6.00, रात्रि 9.12 से 10.00
28 जन., 4, 11 वार्ष.	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00, प्रातः 6.48 से 10.30, सायं 4.24 से 5.12, रात्रि 8.24 से 10.48

लग्न 'जनवरी' 2000 मंत्र-लंब-यन्त्र विज्ञान '62' ४

# यह हमारी बढ़ी विद्याहरिति कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह सर्व को तबाहहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आवश्यक युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समझ प्रस्तुत हैं, जो विद्याहरिति के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित बायें से संकलित हैं, जिन्हें वहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया जाया है तथा जिन्हें संख्याएँ करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

- |  |  |
|--|--|
| <p><b>15 जनवरी</b> प्रातः 'विद्य वत्तानेय स्तोत्र' (जन.-२००० अंक) का पाठ करें, मन में विद्य आनन्द अनुभव होंगा।</p> <p><b>16 जनवरी</b> 'क्लीं ए हीं कूं फट्' (Kleem Ayeim Hreem Om Phat्) का ११ बार उच्चारण का कार्य पर जायें।</p> <p><b>17 जनवरी</b> आज पूर्वाएकावशी है, सत्तान के मंगल-कल्पणा के लिये आज एक मिखारी को घोनन करायें। अनन्ददान है।</p> <p><b>18 जनवरी</b> एक गिलास पानी लेकर पूर्व दिवा की ओर खड़े होकर, 'ऐ' (Ayeim) बीज का ११ बार उच्चारण कर, जल को अमिग्रित कर पीले, फिर कार्य हेतु जाए।</p> <p><b>19 जनवरी</b> तुलसी के बूझ में जल डालकर उसकी ३ बार प्रवशिष्या करें, कार्य में सफलता की सम्भावना बढ़ेगी।</p> <p><b>20 जनवरी</b> प्रातः काल मगवारी दुग्ध का स्मरण कर घर से बाहर निकलें, प्रसज्जन बनी रहेंगी।</p> <p><b>21 जनवरी</b> गुरु नन्द दिवस के स्वप्न में प्रातः 'निखिलेश्वरानन्द स्तोत्र' का पूर्ण पाठ करें, दिवस पर्वन्त गुरु चिन्तन करें तथा गुरु कार्य करने का सकल्प लें।</p> <p><b>22 जनवरी</b> आज शनिवार है, अपने घर की बीखट के बाहर जाकर एक चम्पच सरनी को नेल और नमक भूमि पर डिला दें, अमरगल टल जायें।</p> <p><b>23 जनवरी</b> आज गुरु पूजन के बाद 'ॐ नमः शिवाय' की एक माला लप करें। दिन भर शान्ति रहेगी।</p> <p><b>24 जनवरी</b> 'हनुमान बाण' (प्रत्यक्ष हनुमान शिल्प पुस्तक से) का १ पाठ कर कार्य पर जायें, कार्यों में अद्वित न आयें।</p> <p><b>25 जनवरी</b> दस महाविद्या के ध्यान मन का ११ बार उच्चारण करके घर से बाहर कार्य हेतु जायें -<br/><b>ध्यान - 'शार्कि नमापि वस वस्त्र गीताम्'</b></p> <p><b>26 जनवरी</b> मगवान शिव का स्मरण कर 'शिव तार्ह्य स्तोत्र' (दिल्ली-९३ अंक), जो लल्य के साथ एक पाठ करें, पूरा दिन आनन्द से ओत-प्रोत बना रहेगा।</p> <p><b>27 जनवरी</b> प्रातः काल गुरु पूजन में श्रीई फल अवश्य चढ़ायें।</p> <p><b>28 जनवरी</b> बाहर जाने से पूर्व चुटकी सर नमक की एक कांगन में बोध कर उसे किसी निवन्न स्थान में डालें, कार्य में सफलता की सम्भावना बढ़ जाएगी।</p> <p><b>29 जनवरी</b> 'सीन्दर्य लहरी' कैसेट का प्रातः कम से कम १५ मिनट</p> | <p>तक अवश्य श्रवण करें, दिन शान्तिपूर्ण रहेगा।</p> <p><b>30 जनवरी</b> प्रातः मद्गुरुदेव की संचासी आरनी अवश्य करें।</p> <p><b>31 जनवरी</b> गायत्री मंत्र बोलने हेतु प्रातः सूर्योदय होने पर सुर्य को एक कलश लल्य अर्पित करें।</p> <p><b>1 फरवरी</b> आज षट्टिनाला एकादशी है, प्रातः तिल से बने मिष्ठान या लड्डू का गुरु पूजन के समय धोग अर्पित करें और घर में सबको प्रसाद वितरित करें, सुख-चैन रहेगा। घर में बाहर किसी कार्य हेतु जाने समय कुछ स्फैद पृथ्य इव काले तिल किसी वृक्ष की जड़ में रख दें। पांच लौंग को एकत्र कर एक कांगन में बोध कर अपने कार्य की सफलता के लिये प्रार्थना करें, फिर उस कांगन की लौंग बहिन किसी मंदिर में चढ़ा दें।</p> <p><b>2 फरवरी</b> नियमित स्वप्न में जितनी माला गुरु मंत्र की जगते हैं, उससे बार माला अधिक जप करें, किर कही जाए।</p> <p><b>3 फरवरी</b> आज यीनी अमावस्या है, दिन मर में अधिक से अधिक नितना हो सके। यीन रहें, मानसिक शक्ति में बढ़ि होंगी। घने और गुड़ का बान करके किसी कार्य को प्रारम्भ करें, तो सफलता की सम्भावना बढ़ सकती है।</p> <p><b>4 फरवरी</b> प्रातः काल गुरु पूजन के बाद हनुमान चालोसा का विद्य आज पाठ कर ले तो सम्भावी सुरा हा नहीं होगा।</p> <p><b>5 फरवरी</b> आज रात्रि में चन्द्रमा का दर्शन करने के बाद सोयें, स्वप्न में कोई शुभ सकेन प्राप्त होगा।</p> <p><b>6 फरवरी</b> प्रातः काल सूर्य नमरकार कर एक लोटा कलश से सर्व को जल का अवश्य दें, चैतन्यना में बढ़ि होंगी।</p> <p><b>7 फरवरी</b> दिवस पर्वन्त गुरुसंवित अथवा लाकेठ अपने साथ स्वें, अनिष्ट टल जायेगा।</p> <p><b>8 फरवरी</b> तीन बिल्व पत्तों की शिवलिंग पर चढ़ाकर जायें, कार्य में सफलता की सम्भावनाएं बढ़ जायेंगी।</p> <p><b>9 फरवरी</b> आज प्रातः धी का दीपक अवश्य जलाएं और दीपक में एक इनगत्री अवश्य रखें, स्वास्थ्य उसम रहेगा।</p> <p><b>10 फरवरी</b> 'शब रक्षा स्तोत्र' (नववर-१५ अंक) का प्रातः पाठ कर जायें, कार्यों में सफलता की सम्भावना बढ़ जायेगी।</p> <p><b>11 फरवरी</b> प्रातः एक नेल का दीपक जलाकर घर के द्वार पर रख दें, इसके बाद पूजा यज्ञ में आकर ऐनिक पूजन करें।</p> <p><b>12 फरवरी</b></p> <p><b>13 फरवरी</b></p> <p><b>14 फरवरी</b></p> |
|--|--|

अ 'जनवरी' 2000 मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान '63' ४

# MEN OF THIS AGE

*Yadaa Yadaa Hi  
Dharmasya ...*

**यदा यदा हि धर्मस्य...**

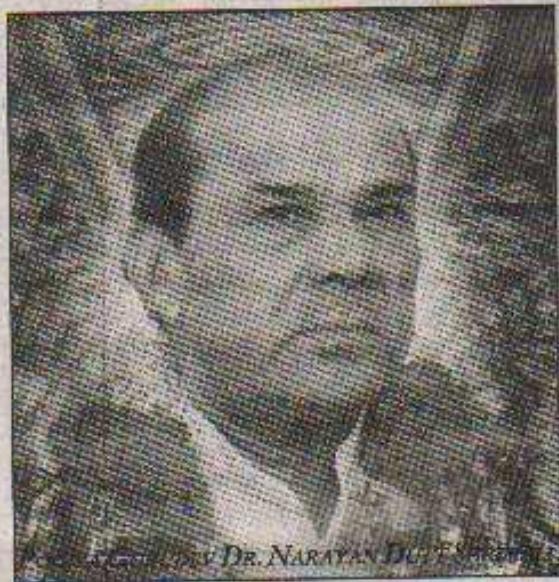
**T**hus goes a famous shlok of Gita encompassing within its deep meaning the timely appearance of great souls, Avatars and Yug Purushs in different ages on this earth. Ages sure have differed but not the aim of these enlightened beings who by their benign presence make a herculean attempt to propel humankind to higher states of mental and spiritual evolution, by making them break free of their dogmas and false beliefs and by reintroducing them to the real science of life which is as ancient as it seems to be now every time it is rediscovered.

On 21st April 1933 in a remote village of Rajasthan divinity descended to the mortal planes in a surprisingly inconspicuous manner – an element which would later mark all his achievements. His every success would be beyond belief, yet it never robbed him of his simplicity, easy ways and frankness. Years later disciples, followers and those who knew him would wonder how he remained so unassuming and unpretentious in spite of the laurels and fame bestowed upon him.

Struggle was his constant companion on the path of life, yet no problem or obstacle could match his resilience and perseverance, as he took on the challenges of life, rising from poverty to gain the best education, a job as a lecturer and then as a professor in university, by the dint of sheer courage and hard efforts.

Such worldly success he no doubt viewed as indispensable, however he never made it the sole purpose of his life. Even as the household was celebrating his marriage at just eleven, to Ma Bhagwati Devi, who later was to be his most helpful companion and a loving mother to millions of Sadhaks, he announced his decision to leave home to explore the Himalayas for the lost sciences of ancient India.

Love and filial duty sure had a place in his heart, yet these never infatuated him or diluted his strong resolution, and ultimately he had his way. Many decades later, the Himalayas continue to echo his footsteps, his divine rendition of Vedic verses and his clarion calls as he challenged Pseudo-gurus and Sanyasis. His inquisitive spirit led him to hundreds of Masters many of whom proved



COURTESY DR. NARAYAN DIKSHITAR

to be foxes in sheep-skin. Yet he did discover scores of precious pearls, from whom he gleaned wonderful pieces of divine knowledge, which could transform the miseries and sorrows of mankind into joy of total fulfilment.

Even though bestowed with amazing powers these Yogis felt content to repose peacefully in the seclusion of mountains and jungles. But to him this was a waste of divine talent and he worked hard to gain from them all that they had. His honesty, sincerity easily won their hearts and they felt delighted to impart to him the secrets of Sadhanas, Mantras, astrology, Surya Vigyan, Paarad Vigyan and many more sciences.

They gave him much, yet it is an inviolable rule of Guru-Shishya Parampara that knowledge cannot be had free. In return Guru Dakshina is a must – in the form of service to the Guru, money or knowledge. Serve he did many masters, yet he always declared that he had limited time and he did not want to spend years mastering just one single Mantra or Sadhana. He wished for total success and he got it. Also these Yogis had no use for money, hence what he gave to them is as much a secret as his true identity which continues to baffle even the closest of his disciples till today.

However one of these very savants once exclaimed, "What could I have given him? To the world it seems, and he makes it seem so, that I gave him Dikshas

and Sadhanas, but I know the truth. He has very kindly bestowed upon me spiritual success which I might never have achieved even after thousands of years of Sadhanas. I know who he is, for he very kindly revealed it to me, but I cannot tell ..... Time shall do it and then the men and women of this world shall realise who had been with them and what they missed."

Mystery continues to shroud his divine persona. He never spent years at a stretch in the Himalayas, rather he returned home from time to time to complete his education and fulfil his duties towards the family. How he alternated these roles, struck a balance between them and succeeded in both is really amazing.

Having achieved the highest level of success in the spiritual world when he finally returned to his family for good, millions came into contact with him and benefited a lot by consulting him as a Spiritual Guru, astrologer par excellence. Vedic scholar, expert of *Karma Kaand* and a Bestower of fruitful blessings. However none could claim to fully know him, even though he wilfully introduced himself as *Paramhans Swami Nikhileshwaraanand* – the most revered of Masters of the divine land of Siddhaashram who had appeared in simple human form to bring about a spiritual transformation in the social circles, not just in India but all over the world.

But this introduction deepens the mystery rather than clarify it, and so do the introductory books about his life as Nikhileshwaraanand penned by his ascetic disciples who themselves are renowned for their divine powers. The mind boggles on reading about his spiritual achievements. And I believe that so depressed we are today, so much inferiority complex has been built into us by the so called modern education that it is hard to believe that all this can be true, for it seems more a description out of pages of some fantasy like Superman and one wonders if all this is mere hype.

Could be, for these are just printed words. But one is forced to withdraw one's scepticism when one meets the common men and women who have accepted him as a Guru and also when one is thrown by destiny into his benign presence and made to experience amazing things. Guru? Seems a familiar, oft-repeated title, which one feels like rejecting with disdain having read and heard of the infamous exploits of so many pseudo-spiritualists.

Yet ask these disciples and Sadhaks and before they could speak their eyes, their facial expressions tell all. The tears which well up with the mere utterance of the word *Guru* reflect genuine love, adoration and regard. "He is a father to us," says a disciple bringing to the mind the ageless incantation imprinted on every Indian mind –

*Tvamev Maataa Cha Pitaa Tvamev.....*

"He is the best friend, my saviour, my deity," sobs another in a deluge of emotions.

IS? But he is no more there! Hasn't he left his

mortal frame? For the world which views everything through the glasses of gross materialism he sure has, but how can you explain the hundreds of letters from Sadhaks and disciples pouring in every day thanking Gurudev for making a timely appearance (in physical) and saving them from danger and even death?

Thousands continue to rush to Sadhana camps which go on uninterrupted by virtue of his blessings. His words, spoken years back, suddenly flash back to the mind. "If people find it difficult to come to me, I shall go to them. I have very less time and much to achieve."

Thus was initiated a chain of Sadhana camps all over India and even abroad to which thousands were drawn by his magnetic persona to take a dip in the holy ocean of Sadhanas. And when he felt that even Sadhanas and Mantra chanting were proving too much for the weak willed, frustrated people of the world, he started doling out his own divine energy in form of Diksha which incinerated their problems, ailments, worries and brought them wealth, success, prosperity and even spiritual upliftment.

"Devotion for the deity is important, but I don't want my disciples to beg even before the gods. I want them to be masters of Tantra and capable of demanding and getting what they want from the gods and goddesses and even other human beings. But know it that once I am your Guru I won't allow misuse of these powers, you simply won't be able to. I don't want to prepare Padampaads," he said not once but on many occasions.

Preparing Sadhaks and disciples who could ring in a new phase of spiritual enlightenment was his aim and he started this mission by first reintroducing India to the ancient science of astrology, which had lost its foothold due the wave of false education and propaganda of Mughals and the British. He authored no less than 120 books on astrology, a record of sorts, which brought this complex science to the reading table of the common man in a simple form. His uncanny on the mark predictions made him world famous and revived belief of millions in this predictive science. Had fame and recognition been his aim he could have continued to bask in the glory of his success as an astrologer. But no, his work was done, people once again had faith in astrology and quietly he withdrew from the limelight and Presidency of World Astrology Conference in spite of vehement protests of admirers.

Next he aimed at regenerating a similar faith in the masses for the sciences of Mantra, Tantra and Sadhanas, which had become much maligned over the ages due to the greed of corrupt priests and pseudo-Tantriks. When he set about this task people feared and despised the word Tantra which had unfortunately become linked to vile practices like money spinning and satiation of carnal desires at the expense of the gullible and ignorant common folk.

"Tantra," he said, "is the beauty of life. It is harmonising with nature, it is seeking the aid of spiritual,

divine forces to make life prosperous, pure and better. It has nothing to do with the wrong beliefs attributed to it."

This message he propagated through the illustrious Hindi monthly *Mantra Tantra Yantra Vigyan* which not just dispelled fear and doubt regarding these sciences through the publication of veritable extracts from Shastras, Vedas and Upanishads, but also through Sadhana experiences of his disciples who had gained amazingly much with their help. Simultaneously was launched the *Siddhaashram Sadhak Parivaar* whose aim is to carry the torch of true Sadhana knowledge to each and every corner of not just India but the whole world through the medium of Sadhana camps graced and managed by Gurudev, and which today has branches all over India and in major cities globally.

Yet this path to success was not paved with just roses. Criticisms, verbal attacks, denigrating campaigns, vile plots however never daunted him and accepting all challenges he had roared, "This torch lit by me cannot be extinguished. It shall continue to light new lamps and to illuminate millions of lives lost in darkness of ignorance, poverty and problems. Those who are against this mission are either ignorant or have their own axes to grind or have selfish interest in leaving the people unenlightened. I accept their challenge, for in Rajasthan they say - *Maal Edaa Poot Jan, Dushman Hoi Hajaar* ie O mother bear a son who has a thousand foes at least and who could attain to fame by fighting and defeating them.

"I want my disciples too to be fearless. I want them to have problems and enemies galore, for I have equipped them with the divine powers of Nikhilashwaraanand and they must now have the guts to face all adversities and emerge victorious. I want to show the world that with Mantras, Sadhanas and spiritual powers even the worst of adversities can be overcome."

Almost 20 years after he started on this mission, today Indian subcontinent is redolent with the fragrance of his success. Parched, desert like lives have been transformed into green heavens. His books on spiritualism, Sadhanas and other ancient sciences (again no less than 150) are proving to be guiding beacons for millions. His voice recorded in cassettes continues to soothe disturbed lives.

"I have nothing against modern science," he once said, "but their knowledge is limited. Spiritualism is much deeper and greater than any science and the scientists have yet to realise this. Till they do I want this ancient knowledge to be preserved, and here science alone can help. I want the Shlokas, Mantras and Sadhanas which I speak or

perform to be recorded and saved for the future generations, otherwise all this will be lost forever. You may not realise it but the later generations on listening to my cassettes and reading my words shall wonder who it was who assimilated so much knowledge in such a short life span."

How true are proving his words! His recorded and printed words continue to draw thousands of new Sadhaks to the folds of the Parivaar, whose only aim is propagation of true knowledge and not fanatic belief in some set dogmas. All his life he laboured day and night to fulfill his dream of making every man and woman self dependent in the use of Mantras and Sadhanas so that they could be free of the clutches of corrupt priests and capable of solving their problems themselves with the blessings of the Guru.

"I am right behind every Sadhak, who bestows faith in me, on the path of life. Whenever you face a problem and feel worried you just look over your back and you shall find me there guiding your footsteps."

No wonder millions continue to experience his strength and his presence. A devotional, feeblest of prayers, or even just the desperate call "Gurudev" and he is there to help. He continues moulding misshapen lives into perfect shape and guiding lost souls. And know it for sure that this feeling germinates not by listening to or reading about experiences of others but by own personal feelings - the gentle, elating tingle in the spine when he is subtly around or the gust of *Ashigandha* fragrance broadcasting his presence or the sudden tears not just of sweet remembrance but of elation and joy which spring out without rhyme or reason. It's love! Love with one who knows the art of turning a desert into an oasis and one who can remotely control the affairs big and small of millions even from the portals of Siddhaashram. And it's this love that bonds one to the Man of this Age, who worked selflessly to make us humans truly independent. And we know that he continues his work of making us realise the true essence of the words: *ham Brahmanam!*

It's this very goal that keeps us moving onwards and each moment we feel the blessings, love and kindness of one whom we have known as Gurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali, showering in our lives from the unending source of divinity Paramhans Swami Nikhilashwaraanand.

"Buddha when leaving his mortal frame had said to his disciples - *Apa Deepo Bhavaah* - be a self enlightened lamp." Gurudev had once addressed his loved children during the last days of his Avatar as a family man,

"but I don't want you to be mere lamps so I say - *Apa Suryo Bhavaah* - be a sun unto yourself!"

- श्रद्धा, विवेक का सूजन तथा सन्देह

का विसर्जन तो

# मणिपुर चक्र

को जाग्रत  
करने से ही हो सकता है।



डॉक्टरी के साथ जागरण शब्द प्रयुक्त हुआ है, परन्तु क्यों 'जागरण' शब्द का ही प्रयोग हुआ?

**वीद से जानवा ही होना**

जागरण उपरी का किया जाता है, जो सोया हुआ हो। और मनुष्य बास्तव में उठते बैठते, चलते-फिरते एक नीद में ही चल रहा है, वह जो पी कर रहा है एक नीद में ही कर रहा है। उसका कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है, जैसा परिस्थितियाँ उसे बहा ले जाएं वह बह जाता है, बातबरण जिस प्रकार का उस पर प्रभाव ढाल दे वह बदल जाता है, उसके बिनार बदल जाते हैं। ऐसे व्यक्ति में स्थिरता नहीं होती, जागरण नहीं होती, चेतना नहीं होती, उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

और विश्वास इसलिए नहीं किया जा सकता क्योंकि वह सोया हुआ है। वह पत्ती से कहना है कि जीवन भर प्रेम करूँगा परन्तु वह कभी क्रोध आ जाए, तो हो सकता है वह उसका गला पी घोट दे। इसलिये उसके कहे हुए शब्दों का कोई विशेष अर्थ नहीं होता, निद्रा में मग्न व्यक्ति के कथनों का अर्थ हो भा वया सकता है?

वह मात्र एक सोया हुआ मनुष्य भर ही तो है...

और जब तक व्यक्ति अपनी कुण्डलिनी शक्ति की इस सुखावस्था से बाहर निकलने का प्रयास नहीं करेगा, तब तक वह स्वर्यं गी अपने ऊपर विश्वास नहीं कर सकता। और तब वह जीवन भर मटकला हो रहता है, किंतु किसी से किसी समस्या का समाप्ति पूछता है, कभी किसी से किसी प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयास करता है, दो विस सन्तुष्टि अनुश्रव करता है और पुनः किरबही मटकल, फिर वही संशय, फिर

वही असंविधाता, फिर वही प्रश्न और अज्ञान।

इसी अज्ञानता में प्राप्त निवृप्रति के अनुभवों को योगी जन स्वप्न कहते हैं। इस स्वप्न से बाहर निकलने के बाद ही नगत में प्रवेश सम्भव है, एक चैतन्य जाग्रत व्यक्ति के रूप में... इसे ही कुण्डलिनी जागरण साधना कहते हैं।

**मणिपुर चक्र : श्रद्धा का जन्म,**  
**सन्देह का विसर्जन**

आध्यात्म के क्षेत्र में चाहे वह शिष्य हो या भक्त या साधक, अपने गुरु या बड़े गे अद्धा, समर्पण, विश्वास हो आधार है, विवेकशोल मस्तिष्क ही अलंकार है। यदि ऐसा होता है, तो उसे पूर्णता प्राप्त करने से और पूर्ण प्रज्ञापूर्वक बनने से कोई नहीं रोक सकता। परन्तु जहाँ होनी चाहिए अद्धा और विवेक, वहाँ होता है तर्क, और होता है सन्देह या संशय, जिसके लिए गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है – 'संशयात्मा विनश्यति' अर्थात् संशय व्यक्ति को विनाश के कागार पर लाकर खड़ा कर दता है।

और जब तक इस संशय को समाप्त नहीं किया जा सकता, तब तक आध्यात्मिक उपलब्धियों की प्राप्ति नहीं हो सकती, जब तक मन में उठते विचारों के आवेग को विवेक में रूपांतरित नहीं कर लिया जाता तब तक साधक अपने किसी भी उद्देश्य में विजयी नहीं हो सकता।

जब तक संशय को दूर नहीं किया जाता, तब तक मन-मस्तिष्क पर एक बोझ बना रहता है, उसके मन और मस्तिष्क में सामंजस्य नहीं रहता। यह सामंजस्यहीनता उसकी किया शक्ति को उवरुद्ध कर देती है, विचारों के आवेग

को किया रूप में परिणीत करने के मार्ग में मुख्य बाधा संशय या सन्देह ही है। संशय, सन्देह होना एक स्वामाविक क्रिया है, यहाँ को स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं —

१. प्रश्न संशय को दबा दिया जाय और नवरदस्ती विश्वास उत्पन्न करने का प्रयास करें, लेकिन इस स्थिति में जो क्रिया उत्पन्न होगी, वह थोपा हुआ विश्वास या अधिविश्वास ही कहलायेगी। जबरदस्ती से बलपूर्वक विश्वास पैदा नहीं किया जा सकता, यथ से थोपा हुआ

विश्वास होगा, इसकी भीतरी पत्ती में कहीं न कहीं किर भी अविश्वास छिपा ही होगा और इसलिए तब भी सच्ची अद्वा नहीं पैदा हो सकती। जब तक सच्ची अद्वा उत्पन्न नहीं हो जाती तब तक योग की उच्च भावभूमि पर स्थित होना सम्भव नहीं है।

२. दूसरी स्थिति में तक द्वारा, अपनी जान शक्ति का विकास कर संशय का, निवारण कर ऐसी भाव-भूमि बनाई जाये जहाँ सत्युक्त संशयहीनता की स्थिति बन जाये। यही स्थिति तो अद्वा की भाव भूमि है। अद्वा स्वयं के जान से संशय का निरूपण करने की योग शक्ति क्रिया है। शास्त्रों में कथन है —

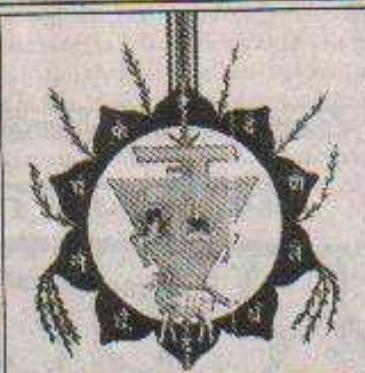
तीर्थं द्विजे भेषजे, युरु... मंत्र...

अर्थात् यहाँ छ. व्यक्तियों को अद्वा और विश्वास का आधार माना गया है — देवता, तीर्थ, सुयोग्य ब्राह्मण, वैद्य, गुरु और मंत्र। ये विश्वास करने पर ही फलदायी होते हैं।

मन को बलपूर्वक सन्देह को छोड़ने के लिए विवश नहीं करना है। बल के साथ कुछ भी सम्भव नहीं है। यदि मन में सन्देह है, तो सन्देह के साथ ही साधना पथ पर गतिशील हो, अवश्य ही एक दिन आएगा, ऐसे अनुभव होंगे जब स्वतः ही अपने सन्देह पर भी सन्देह होने लग जायेगा, तक समाप्त हो जाएगा, और जब ऐसा हो सकेगा, तब सन्देह का विसर्जन होगा और वह सन्देह सच्ची अद्वा में परिवर्तित हो जाएगा।

**विचारों के तूफान शुद्ध विवेक और बदल जाते हैं**

मणिपुर चक्र जब जाग्रत होता है, तब साधक के विचार भी धीरे-धीरे कम होने लगते हैं। जिस एकाग्रता के मध्य इष्ट दर्शन होते हैं, ध्यान लग जाता है या समाधि लाभ प्राप्त होता है, वह विचारों के विलक्षण कम अथवा शून्य हो जाने पर ही होती है। इसका अर्थ यह नहीं कि मस्तिष्क की कार्य क्षमता ही



मणिपुर चक्र

समाप्त हो जाए, अपितु इसका अर्थ तो यह है कि विचारों का जमघट विवेक या ज्ञान में बदल जाए।

कोई प्रश्न है, या कोई परिस्थिति है, और उस पर व्यक्ति विचार कर रहा है, तो कहा जा सकता है, कि चिन्ता न करो या मत सोचो, छोड़ो जाने वो, मत विचार करो, दिमाग को शान्त रखो, परन्तु कह देने मात्र से विचार समाप्त नहीं हो सकते। कह देने मात्र से चिन्ता समाप्त नहीं हो जाती। विचार

विवेक में बदल सके और चिन्ता चिन्तन में बदल सके, ऐसा मणिपुर के जाग्रत होने पर ही होता है। और विचार करना कोई छोड़ देगा तो एक अनिर्णय की स्थिति में ही पहुँचेगा, अविश्वास को ही प्राप्त करेगा। विचार की सूक्ष्मतर शृंखलाओं से गुजर कर ही कोई विवेक को प्राप्त कर सकता है। विवेक और विचार में मूलभूत अंतर है — विचार में जहाँ सबै ही जूद होता है, वही विवेक में सन्देह नहीं होता, वहाँ सत्यबोध की स्थिति होती है, भटकन, संशय अथवा भ्रम नहीं होता है विवेक में।

इसलिए अक्सर बहुत विचारखान व्यक्ति निर्णय नहीं ले पाते, वे दुविधा में ही बने रहते हैं, छन्द में ही रहते हैं, कि क्या सही है, क्या गलत है? दोनों तरह के विचार होते हैं — पाजीटिव भी और नेगेटिव भी परन्तु दोनों में से सही किसे माने इसका निर्णय वे नहीं ले पाते, अधिक विचारशील होने के कारण वे निरन्तर अनिर्णय की स्थिति में ही बने रहते हैं, विचार होते हैं, परन्तु हर विचार में संशय का स्पर्श बना ही रहता है।

दूसरी ओर ऐसे भी लोग होते हैं, जो विचारहीन होते हैं, वे आगे-पीछे का नहीं सोचते, हठी होते हैं जो एक बार सोच लिया करना है तो सौ लोगों को मौत के घाट उतारने में ही भी संकोच नहीं करते, उनके लिये सही-गलत का अर्थ नहीं होता, बस सोचा और तुरन्त कर लिया, उनमें अनिर्णय की स्थिति नहीं होती। एक बार भी वे नहीं सोचते कि ऐसा करने से ऐसा हो सकता है..., ये ठीक भी है या ठीक नहीं है, ऐसे लोग दुरायही होते हैं, हठधर्मी होते हैं।

साधक के लिये विचारहीनता की स्थिति ठीक नहीं, श्रेष्ठता तो यह है कि विचारों की घुमड़न को पूर्ण विवेक में परिणीत कर लिया जाए। जब विचार करते करते व्यक्ति इतना

परियक  
चीज न  
विवेक  
होता है  
विचार  
है। तब  
जब मा  
देख सा  
मणि

और श्र  
जाता है  
उदय है  
ईर्ष्या,  
पाता।  
कर लेता  
जाता है  
प्रारम्भ

ओनसन  
शक्ति व  
में परिव  
और उ  
के जाग  
कह अन  
मणि।

अवस्थि  
वर्ण वा  
समान  
बीजाक्ष  
तेजस्वी  
स्वस्ति  
आरुद  
के ऊपर  
लाकिन  
वर और  
है, निम

परिपक्व हो जाता है, कि फिर उस विचार में संशय जैसी कोई बीज नहीं रहती, उविधा नहीं रहती, उस पूर्ण विचार को ही विवेक कहने हैं। तब वह व्यक्ति सौच नहीं रह जाता, उसे बोध होता है, पूर्ण विश्वास होता है, कि जो उसे ज्ञात है वह एक विचार नहीं है वरन् पूर्ण सत्य है, इस सत्य को ही बोध कहते हैं। तब छन्द नहीं रहता है, तब वह निर्णय कर पाता है, और जब मणिपुर चक्र के स्तर से निर्णय लिया जाता है, तो फिर ऐसे साधक को प्रत्येक संकल्प में विजयशी ही मिलती है।

### मणिपुर चक्र की अन्य उपलब्धियाँ

मणिपुर चक्र की भाग्यति के साथ साधक में जहां विवेक और श्रद्धा उपजाती है, वही उसके सभी पापों का शमन भी हो जाता है, उसके हृदय में दया, ममता, करुणा, सौहार्द का उदय होने लगता है। तब उस पर सांसारिक दोष - क्रोध, ईर्ष्या, अठ, व्यञ्जित्व आदि का कोई प्रभाव व्याप्त नहीं हो पाता। इस चक्र के जाग्रत होने पर व्यक्ति पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त कर लेता है और देवत्व की ओर कदम रखने को अग्रसर हो जाता है। इस चक्र के बाद ही उसमें दैवीय गुणों का प्रस्फुटन प्रारम्भ होता है।

चित्त निर्मल एवं बोधमुक्त हो जाने से उसकी वाणी ओजस्वी हो जाती है। उसके शरीर के चारों ओर की चुम्बकीय शक्ति बढ़ जाती है, उसके मुख से सत्य ही निकलता है। विचारों में परिवर्तन के कारण उसके हृदय में शान्ति व्याप्त हो जाती है और उसे ध्यान की प्रथमावस्था प्राप्त होती है। मणिपुर चक्र के जाग्रत होने से व्यक्ति को ध्यान, आद्युर्वेद तथा प्रकृति के कई अन्य रहस्यों का ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है।

### मणिपुर चक्र स्वरूप

मानव शरीर में नाभि स्थल पर इस चक्र की अवस्थिति होती है। यह अग्नि तत्व प्रधान चक्र है, जो नील वर्ण वाले दस बलों के एक कमल समान है, तथा मणि के समान चमकने वाला है। मणिपुर चक्र के प्रत्येक बल पर बीजाक्षर हैं। चक्र के मध्य में उगते सूर्य की प्रभा के समान तेजस्वी त्रिकोण रूप अग्नि देव है, जिसकी तीन भुजाओं पर स्वस्तिक है। इस अग्नि त्रिकोण, जो कि एक मेष (मेसे) पर आरूढ़ है, के बीच में चक्र का मूल बीज 'ॐ' स्थित है। त्रिकोण के ऊपर चक्र के देवता सिन्दुरी वर्ण में रुद्र एवं इयाम वर्ण देवी लाकिनी उत्तरित हैं। वृषभ पर आरूढ़ सद देव के दोनों हाथ वर और अभय मुद्रा प्रदर्शित कर रहे हैं। लाकिनी देवी त्रिनेत्री है, त्रिमुखी है, उनकी चार भुजाएं चार देवों के ज्ञान हैं, वे पीत

वस्त्रधारी हैं तथा साधक का कल्प्याण करने वाली हैं।

**मणिपुर चक्र के दश बलों में निहित शक्तियाँ**  
बल के बीजाक्षरों से संबंधित उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं -

इं - इस बल के जाग्रत होने पर नाभि प्रदेश की नाड़ियाँ चैतन्यता को प्राप्त होती हैं, जिससे पेट सम्बन्धी रोग समाप्त होते हैं, पाचन विद्या सुखुम होती है व पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होता है।

इं - नायि मानव शरीर के धौगिक बल का केन्द्र है, इस चक्र के द्वितीय बल के जाग्रत होने पर व्यक्ति को योज बल का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। वह लम्बे समय तक एक ही आसन पर बैठने लग जाता है, श्वास-प्रश्वास भर उसका नियंत्रण हो जाता है, कई दिनों तक बिना खोजन के रह सकता है, उसका अपने शरीर पर पूर्ण नियंत्रण हो जाता है।

इं - धू-तत्व का लोप होने से और इस बल के जाग्रण से वह आकाश मार्ग से गमन करने की क्षमता प्राप्त करता है।

इं - चतुर्थ बल के जाग्रत होने पर उसे जल गमन की क्षमता प्राप्त हो जाती है।

इं - इस बल के जाग्रत होने पर वह स्वयं को अदृश्य बना सकता है, और वापस पुनः वृष्टिगत हो सकता है।

इं - भूमि की स्थानह पर अत्यंत तीव्र गति से चलने की ओर मीलों लम्बा सफर क्षणों में तय कर लेने की क्षमता इस बल के जाग्रत होने से प्राप्त हो जाती है।

इं - पशु-पक्षी तथा पेड़ पीछों से वार्तालाप अर्थात् उनकी भाषा को समझने का ज्ञान इस बल से ही प्राप्त होता है।

इं - इस बल के जाग्रण से व्यक्ति सर्दी, गर्भी, वर्षा आदि से अप्रभावित रहता है, वह स्वेच्छानुसार प्रकृति को अपनी इच्छानुसार ढाल सकता है, प्राकृतिक विपदाओं एवं क्रुतुओं के प्रभाव में हस्तक्षेप कर सकता है।

फं - इस बल के जाग्रण से व्यक्ति में मानव कल्प्याण के गुण एवं कुशल मार्गदर्शक व नेतृत्व के गुण विकसित होते हैं। इस बल के जाग्रत होने पर ही विवेकानन्द विश्वविद्यालय तुष्ट थे।

फं - इस बल के जाग्रत होने पर ध्यान की किया प्राप्त हो जाती है, जिससे विद्य आनन्द की अनुभूति होती है और वह आध्यात्मिक उत्तरि के लिए तैयार हो जाता है।

### मणिपुर चक्र ज्ञानरूप साधना विधि



किसी भी दिन इस साधना को प्रातःकाल प्रारम्भ किया जा सकता है। अपने सामने एक वस्त्र पर गहरे नीले रंग से रंगे हुए अक्षत के बानों से दस बलों वाले कग़ल बाले

इस चित्र के अनुसार निर्मित करें। प्रत्येक दल पर सूखे कुंकुम से बीजासरों को अंकन करें। मध्य में हल्दी से एक गोल धेरा बनाकर उसे हल्दी से भर दें। इस अभि शेत्र में मणिपुर बीज 'रं' का कुंकुम से अंकन करें। इस बीजासर के ऊपर 'मणिपुर चक्र जागरण मंत्र' को स्थापित करें।

अपने आसन पर बैठ जाएं। आंख बंद कर लें और जोर जोर से ज्वास-प्रज्वास अन्वय लें और बाहर छोड़ें। इस प्रकार जल्दी जल्दी तीव्र गति से करें और कम से कम पांच मिनट तक करें। इस प्रक्रिया में अपना ध्यान नाभि पर केन्द्रित रहें। पांच मिनट की शस्त्रिका के बाद पांच मिनट शान्त रूप से जांख्य बंद किये बैठे रहें और पहले दिये विवरण के अनुसार मणिपुर चक्र के स्वरूप का नाम स्थल में अनुभव करें। फिर आंखें खोल लें, संधिन मुरु पूजन के पश्चात दोनों हाथों में पुष्प लेकर मणिपुर चक्र के देवता रुद्र का निम्न ध्यान करें—  
 द्यायेन्द्रधिरुदं नव तपनिभ्वं वेदब्रह्मज्वलांगम्,  
 तत्कोटे रुद्र मूर्ति निवसति शततं शुद्र रिन्दूर रागः।  
 भूष्मालिप्तांगं भूष्माभरणं सितवपुर्वद्व ऋषी प्रिणेत्रो,  
 त्वोकानामिष्ट दाताभ्य लसितकरः सृष्टि संहारकारी॥

इसके बाद हाथ में कुंकुम से रंगे अक्षत लेकर निम्न ध्यान मंत्र बोलते हुए चक्र की देवी लाकिनी का ध्यान करें—  
 अप्राप्ते लाकिनी मा सकल शुभकरी वेद ब्राह्म ज्वलांगी,  
 श्यामा पीताम्बरायै विविद्य विश्वनालंकृता मत वित्ता।  
 ध्यात्वैतन्नामि पद्म प्रभवति नितरा संहतीपालने वा,  
 वाणी तस्याननाक्षेत्रे निवसति सततं ज्ञान संदोह लक्ष्यी॥

पांच मिनट गुरु मंत्र का जप करें तथा उसके बाद 'प्राण संजीवित कृष्णलिनी जागरण माला' (जहाँ दो चक्र की साधनाओं (सर्वर्ष-प्रेत-तन-यत्र विलास, नववर, दिसंवर-१९ अंक) में प्रयुक्त माला का प्रयोग किया जा सकता है) से निम्न मंत्र की ७ माला १६ दिन तक जप करें—

**मणिपुर चक्र जागरण मंत्र**

// ॐ रं चक्र जागरणाद मणिपुराद रं उ३५ फट //  
 Om Ram Chakra Jagaranaad Massnipuray Ram Om Phat  
 साधना समाप्ति पर यत्र को पूजा स्थान में गुरु ध्यान  
 के समीप रख दें। माला को अगले चक्र की साधना के लिए  
 सुरक्षित रख दें। यत्र को साधना सम्पन्न होने के एक वर्ष बाद  
 जल में प्रवाहित कर दें।  
 मणिपुर चक्र - 150/- कृष्णलिनी जागरण माला - 180/-

## ● काल चक्र ●

**1.2.2000** माघ कुण्ड पक्ष की द्वादशी के दिन सायंकाल मूल नक्षत्र में हृषीय योग बन रहा है। इस दिन साथ काल ८.२४ से १०.०० के मध्य 'शनि गुटिका' (न्यौछावर, १००/-) के समक्ष तेल का दीपक लगाकर निम्न जप कर आप शनि के कुप्रभाव को समाप्त कर सकते हैं—  
**मंत्र**

// ॐ प्रां ग्रों शं शत्र्येष्वराद रवहा॥

Om Pream Preum Shum Shanchisheharay Swamkha  
 जप के बाद गुटिका को किसी मन्दिर में रख दाएं।

**7.2.2000** माघ शुक्ल की द्वितीया को प्रातः, पूर्वोभाद्रपद नक्षत्र में शिव योग बन रहा है। इस दिन आर्थिक उन्नति के लिये श्रेष्ठ मुहूर्त घटित हो रहा है। प्रातः ६.३८ से ८.२४ तक 'कमलान्तक' (न्यौछावर, ६०/-) के समक्ष निम्न मंत्र का जप करें—  
**मंत्र**

// ॐ एत्तों एत्तों श्री हौं फट॥

Om Eettoo Eettoo Shreem Hreem Phat

सात दिन तक कमलान्तक को घर में ही स्थापित

रहने दें। बाद में उसे जल में विसर्जित कर दें।

ज्ञानपरी 2000 मध्य-तत्र-यंत्र पिताम 70

**13.2.2000** माघ शुक्ल की अष्टमी को कृतिका नक्षत्र में ब्रह्म योग निर्मित हो रहा है। इस दिन यदि पुत्र विवाह अथवा पुत्री के शीघ्र पवे शुभ अनुकूल विवाह के लिये प्रयोग करना चाहिये। 'सौधार्य गुटिका' (न्यौछावर, ८०/-) के समक्ष प्रातः ७.३६ से ८.४८ तक निम्न मंत्र का जप करें—  
**मंत्र**

// ॐ श्रीं सौधार्यं देहि उ३५ //

Om Shreem Soudharyam Dehi Om

जप के बाद गुटिका को शिव मंदिर में चढ़ा दें।

**17.2.2000** माघ शुक्ल की अयोद्धशी को पुनर्वसु नक्षत्र में आयुष्मान योग निर्मित हो रहा है। इस दिन शत्रुओं पर विजय की कामना से प्रयोग करना अनुकूल है। याहिने हाथ में जल लेकर संकल्प बोल दें, फिर प्रातः ६.३० से ८.२४ के बीच 'क्रत्वा' (न्यौछावर, ६०/-) के समक्ष निम्न मंत्र का जप करें—  
**मंत्र**

// ॐ हौं हौं फट॥

Om Hreem Hreem Phat

बाद में तीनों कृत्वा को घर के बाहर कहीं फेक दें।

नार में है  
 बदल आ  
 जप  
 परिवृ  
 जाइ ति

जब तक  
 भी प्रेम ही

ही प्रेम है  
 तुम एक ही  
 जन्म है त

हो सकती  
 और प्रेम ही  
 आज किर  
 बर किर  
 आया हूँ त  
 सहज सम

मजबूर का  
 नुझे अपने  
 कुछ भी र  
 हो जाता

तुम शिष्यता की उगड़णी पर बढ़ रहे हो, एक साधन या उपासना की पगड़णी पर बढ़ रहे हो, और मैं तुम्हें एक ध्यान रुक कर सोचने के लिये आधा कर रहा हूँ और तुम्हें यह स्पष्ट कर रहा हूँ कि जब आख्य सूद कर ज्वान करना और निरन्तर मन्त्र जप करना ही जीवन की पूर्णता नहीं है, केवल गुरु जप करना और केवल राम-राम करना ही जीवन की भेदता नहीं है। जीवन की भेदता तो जीवन परिवृत्ति कर देने में है।

और यह आनन्द, यह मरती जीवन की यह पूर्णता और जीवन का यह सौन्दर्य देन में है, इसलिए मैं कहता हूँ कि प्रेम कोई प्रिया नहीं होती, प्रेम में किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध या असम्बन्ध नहीं होता, प्रेम तो किसी भी राम हो सकता है।

प्रेम तो प्रभु और मनुष्य के साथ हो सकता है।

प्रेम तो एक ब्राह्मी और गुलाब के पुष्प में भी हो सकता है।

प्रेम तो बहने हुए झरने से भी हो सकता है, कलकल करती नदी से भी हो सकता है, घनप्रांत से भी हो सकता है।

और प्रनु के उस नित्य जीलामय स्वल्पा से भी हो सकता है।

इसलिए मैं तुम्हें आज प्रेम के सामग्र में हिथकोले खिलाने से जा रहा हूँ। जीवन की यात्रा का सम्पूर्ण उभ प्रेम में ही है। और उब तक जीवन में प्रेम नहीं होता तब तक मनुष्यत प्राप्त नहीं हो सकती, जीवन की यात्रा का प्रथम चरण प्रेम है और अन्तिम चरण भी प्रेम ही है।

प्रेम छाहता है मैं सब कुछ प्रदान कर दूँ दे दूँ अपने आप मैं उत्सर्ग कर दूँ न्यौपाकर कर दूँ। यह कहा कर देने की क्षिया ही प्रेम है। और प्रेम के समुद्र में कूदने के लिए सोचने की जरूरत नहीं होती। जब तुम अपने आप को पूरी तरह से दुश्म सकोगे, तब तुम एक चिन्तन, एक विचार, एक धारणा में उत्तम सक्षमता, तब तुम इस समुद्र में तैर सकोगे — उस अनन्त समुद्र में जिसका एक किनारा जान है वो दूसरा किनारा भी है, गुरु से आत्मसाक्षात्कार है, इष्ट में अपने आप को लीन लगने वी किया है।

इसलिए जब तुम इष्ट राश्त्रात्कार की बात करते हो तो मैं तुमसे एक ही आत्म पूछता हूँ —

ज्या तुम प्रेम करना जानते हो? क्या तुमने कभी प्रेम किया है? या कभी तुम्हारे हृदय में प्रेम का अंकुर पूटा है?

और मैंने उस देन के आनन्द को चखा है। बिना प्रेम के शिष्यता भी नहीं आ सकती, और न ही किसी साधना में रिदिप्राप्त हो सकती है। दिना हृदय कमल खिले, बिना हृदय पश्च जाग्रत हुर कुष सम्बय ही नहीं है।

प्रेम जीवन का अद्वितीय वरदान है भानव को, पर तुम्हारे लिए पर वासना की इतनी अधिक पर्ते जन गई है, कि तुम वासना और प्रेम का अनन्त ही भूला बैठे हो। हजारी दर्वाजे बाहर कृष्ण ने प्रेम तत्त्व को धरती पर उतारा, और ते अद्वितीय युग पुराज बने। और आज फिर मैं तुम्हें देन का वसन्त भेट करने आया हूँ। मैं एक बार फिर तुम्हारे हौठों पर गुनगुनाहट बिखरने के लिये आया हूँ मैं एक बार फिर तुम्हारे अवरो पर प्रेम का नृथ सम्बन्ध कराने के लिये आया हूँ। और यह बताने के लिये आया हूँ लि देन द्वारा कुण्डलियों जागरण, अनुभूति, साधना एवं इष्ट के साथात जाज्वल्यमान दर्शन लहज सम्बन्ध है।

और प्रेम की परिभाषा ही यही है कि मैं तुम्हें पन के लिये मजबूर हो जाऊं और मैं तुम्हें मजबूर कर दूँ कि तुम मेरे सामने आओ, मैं तुम्हें मजबूर कर दूँ कि तुम मुझे अपनी बाहों में लकड़ी दुड़ों अपने गले से लगाओ। प्रेम तो केवल और केवल गात्र गुरु से ही हो जाता है, क्योंकि उसे कुछ भी सम्बन्ध न होते हुए भी वह हमारे लिये स्वयं कुछ होता है। और जब गुरु से सही रूप में प्रेम हो जाता है तो तुम्हारे का ब्राह्मर्णव हो जाता है।

पृष्ठपाद सद्गुरुकृदेव

# बक्षतों की वाणी

## मेष

(कु, वृ, घो, ली, लू, लो, आ)  
किसी बाहरी व्यक्ति को लेकर घर में विवाद हो सकता है। तथा मित्रों के साथ छोड़ जाने से मानसिक तनाव भी हो सकता है। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में संयम एवं चूझबूझ में ही काम ले। संतान पक्ष की ओर से किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। ग्रामिक वर्ग आर्थिक लाभ की विश्वासी एवं रहेंगे तथा नौकरी एवं इंटरव्यू के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। घर में सुख सुविधा के साधनों में वृद्धि होगी तथा जमीन जायदाद में विस्तार होगा। आपने जो भी कार्य नोचा था उसके अब पूर्ण होने का समय आ गया है, आपके कार्य बनेगा। पूर्ण अनुकूलता के लिये 'महाकाली साधना' सम्पन्न करें। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं—७, ११, १८, २२, २६, ३० तथा २७ अग्रहम है।

## वृष

(झ, झ, झु, झो, झी, झू, झे, झो)  
यह माह आपके लिये विशेष साधनानी बरतने वाला रहेगा। अदालती मामलों को लेकर खिजता रहेगी तथा मित्रों के असहयोगी व्यवहार से मन में उदासी बढ़ेगी। जीवनसाधी का सहयोग अनुकूल रहेगा। प्रेम विवाह के मामलों को लेकर जल्दबाजी न करें। कारोबारी मामलों में सुधि लेकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नई भूमि, बाहन के जल्द-विक्रय का योग बनेगा। स्वास्थ्य को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। शार्मिक एवं मानसिक प्रसंग सामान्य ही रहेंगे। विधार्थी वर्ग के लिये यह माह बहुत ही अच्छा है। मेहनत रण लायेंगे। व्यापारियों के लिये भी यह माह अच्छा है, धन का आगमन होगा। इस मास की पूर्ण अनुकूलता के लिये 'अश्व यात्रा साधना' करनी अनुकूल होगी। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं—८, ११, १६, २१, २४, २९, तथा ३ व १३ प्रतिकूल हैं।

## मिथुन

(क्ष, की, कू, य, ल, को, ला)  
किसी के बहकावे में जाकर कोइ गलत कार्य न करें तथा मानसिक संतुलन बनाकर बलें। राजकार्य को लेकर परेशानी होगी तथा मित्रों का सहयोग सामान्य रहेगा। कारोबारी मामलों में जो भी कार्य करें, ऐतिहासिक सूझबूझ के आधार पर ही करें। आपके सहयोग में किसी मित्र का रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। रुका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। यात्रा में विशेष सावधानी बरतें। घर में सुख-सुविधा के साधनों में वृद्धि होगी। प्रेम प्रसंगों को लेकर सावधानी बरतें तथा समान में मान-सम्मान की स्थिति बनाए रखें। नौकरी पेशा वर्ग के व्यक्ति अधिकारियों से मध्यर तालमेल बनाकर बरतें। संतानपक्ष की ओर किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। पूर्ण अनुकूलता के लिए 'महाकाली साधना' सम्पन्न करें। इस माह की अनुकूल तिथियाँ—७, ११, १४, १८, २४, २८, २६, ३१।

१०

ज 'जबरदी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '72'

## कठक

(ठी, ठू, ठै, ठौ, ठी, ठै, ठौ, ठौ)  
आपसी सहयोग एवं सुझबूझ की भावना आपके जीवन में श्रेयस्कर रहेगी। प्रत्येक प्रकार की परिस्थिति में आप अविचलित होकर मुकाबला करने में सक्षम हैं, आपकी यह गृही आपको जीवन में उत्तरानि के अवसर प्रदान करवाती है। धार्मिक एवं मानसिक प्रसंगों को लेकर घर व्यय एवं व्यवहार रहेगी तथा यात्रा योग भी बनेंगे। जीवनसाधी से वैचारिक मतभेद की दशा में संयम से काम लें। यात्रा में किसी भी प्रकार की जलवायाजी न करें। कला जगत के व्यक्ति प्रेम प्रसंगों को लेकर मानसिक तनाव प्राप्त करेंगे। इस मास की पूर्ण अनुकूलता के लिये नियम 'शिव ताण्डव स्तोत्र' का पाठ करें। शुभ तिथियाँ—४, १४, २०, २३।

## सिंह

(मा, मी, मू, मे, औ, ठा, ठी, ठू, ठा)  
यह समय आपके लिये सभी दृष्टियों से अनुकूल एवं प्रसन्नतावायक कहा जा सकता है। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति नये कारोबारी नामलों में उत्साह पूर्वक सुचि ले सकते हैं। किसी से भी व्यर्थ का बाव विवाद न करें, विशेष रूप से जीवन साधी से मधुर व्ययोगपूर्ण व्यवहार बनाकर रखें। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें। कारोबारी मामलों को लेकर यात्रा के योग बनेंगे। साधनात्मक वृद्धि से यह समय आपके लिये विशेष सफलता प्रदान करने वाला होगा। आप यहि कोई साधना सम्पन्न करते हैं, तो उसमें सफलता की सम्भावनाएं प्रवल हैं। अनुकूल तिथियाँ—७, ११, १८, २२, २७।

## कठन्या

(ठो, ठा, ठी, पू, य, ण, ठ, ये, पे)

यह समय आपको अपनी मावनाओं पर कानून रखने का है। व्यर्थ की उलझनों से अपने आपको दूर रखें। किसी धार्मिक स्थल की यात्रा पर जाएं, शान्ति व अनुकूलता प्राप्त होगी। मित्रों के साथ छोड़ जाने से तथा पारिवारिक असतुलन से मन में खिजता रहेगी। दो लाभ, चार गुरुं की स्थिति बनी रहेंगी, परन्तु सका दुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। संतान पक्ष की ओर से अनुकूलता व सुखद समाचार प्राप्त होने गे। श्रमिक वर्ग के व्यक्ति व्यर्थ के धन व्यव से बचें। नौकरी पेशा व्यक्ति उत्पादित होंगे। हर कार्य में लोग आपकी सराहना करेंगे। इस मास कन्या राशि के विधार्थियों के लिए 'सरस्वती यंत्र' धारण करना श्रेयस्कर है। अनुकूल तिथियाँ—११, २०, २१, २८ हैं तथा १६ व २४ प्रतिकूल हैं।

## दुला

(ज, सी, रू, ता, ती, तू, ते)

किसी भी जालो का तथा व्यर्थ के विवाद से दूर रहें। जमीन जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें। राजकार्य आसानी से पूरे होंगे। जीवनसाधी से वैचारिक मतभेद की दशा में संयम एवं शान्ति से काम

## वृद्धिषद

साजेवारी से मृदुली होने करें। राज अनुकूलता हानि पहुंच स्थितियों से साधना करने लगेंगे।

## धनु

प्रयासों से से सावधान की ओरिशा को लेकर होगा। बेरोजगार करके बला होना उनका मान समय साधना अ

## मकर

वाला होगा अधिकारिय

सर्वार्थी, अमृत, रवि, पुष्प, द्विपुष्पकर, शिखि योग
इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।
1 जनवरी - सर्वार्थि शिखि योग
3 जनवरी - सर्वार्थि शिखि योग
8 जनवरी - द्विपुष्पकर योग
14 जनवरी - अमृत शिखि योग
16 जनवरी - रवि योग
18 जनवरी - द्विपुष्पकर योग
19 जनवरी - रवि योग
20 जनवरी - सर्वार्थि शिखि योग
21 जनवरी - अमृत शिखि योग
27 जनवरी - रवि योग

तें। अधिक बर्ग अपनी आर्थिक अनुकूलता के लिये 'अष्ट लक्ष्मी साधना' सम्पन्न करें। कारोबार एवं धर्म सम्बन्धी यात्राएं अनुकूल एवं शुभ रहेंगी। आर्थिक व्यापार में वृद्धि होगी। संतान पक्ष की ओर से चिन्ताजनक समाचार प्राप्त होंगे। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग अनुकूल रहेगा तथा सका हुआ क्रम लीटाना पड़ेगा। घर में नये सुख-सुविधाओं के साधनों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अनुकूल नहीं है, अतः लापरवाही न बरतें। अनुकूल तिथियाँ - ४, ७, ११, २३, २५ हैं।

### वृद्धिचक्र

(तो, ला, ली, दू, गे, गो, वा, वी, दू)  
किसी भी प्रकार के व्यार्थ धन के लेन-देन से बचें, साधेवारी के प्रसंगों को लेकर विवाद हो सकता है। यात्रा व्यवधार में वृद्धि होगी। किसी के बहकावे में आकर कोई भी गलत कार्य न करें। राज कार्य आसानी से पूरे होंगे तथा यद्यपि मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। किसी के बहकावे में न आएं, शत्रु आपको हानि पहुंचा सकते हैं। व्यार्थ के बाद विवाद एवं विश्वासघात की स्थितियों को लेकर सावधानी बरतें। आपके लिये 'बगलामुखी साधना' फलप्रद एवं अनुकूल सिद्ध होगी और आपके विगड़े कार्य बनें लगेंगे, बाधाएं समाप्त होंगी। अनुकूल तिथि - ११, १९, २३.

### धनु

(वे, यो, आ, भी, या, छा, दा, अे)  
यह माह आपके लिये बहुत ही सफलतादायक है, आपके प्रयासों से ही आपके कार्यों में आपको सफलता प्राप्त होगी। मित्रों से सावधानी बरतें, आपके मित्र ही आपके हर कार्य में बाधा पहुंचाने की कोशिश करेंगे, राजकार्य आसानी से पूरे होंगे, कारोबारी मामलों को लेकर प्रसन्नता होगी तथा नये एवं पुराने अनुबंधों पर जाग्रत्त होगा। बेरोजगार व्यक्ति नये कारोबार के विषय में विचार कर कार्य आरम्भ कर सकते हैं। घर परिवार में प्रसन्नता का बातावरण रहेगा, कला जगत के व्यक्तियों के लिये यह समय उत्तरियायक सिद्ध होगा, उनका मान-सम्मान होगा। भड़क पर तेजगति के बाहर चलाते समय सावधान रहें, दुर्घटना की सम्भावना है। 'महामृतसूजय साधना' आपके लिये अनुकूल है। अनुकूल तिथियाँ - २०, २५, २८.

### मकर

(ओ, जा, जी, झू, झे, झो, आ, वी)  
यह समय आपके लिये विशेष अनुकूलता प्रदान करने वाला होगा। किसी के बहकावे में आकर कोई गलत निर्णय न लें। अधिकारियों से मधुर सम्बन्ध एवं तालमेल बनाकर बले। कार्य

### ज्योतिषीय दृष्टि से यह माह

मेष राशि के शनि का सूर्य के साथ दृष्टि संबंध एवं राहु से सम्बन्धित योग होने के कारण भारत के पश्चिमी राज्य, पाकिस्तान आदि देशों में तथा चीन एवं जापान में भी अशांति या प्राकृतिक दुर्घटनाओं के योग बन रहे हैं। धार्मिक उन्माद का जन्म ही सकता है। पश्चिमी भू भाग में तनाकपूर्ण स्थिति बनी रह सकती है।

देश के उत्तरी अंचल में शीत ऋतु का प्रकार रहेगा।

परिवर्तन एवं स्थान परिवर्तन के योग होंगे। कारोबारी प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बनेगा। धार्मिक तथा मांगलिक प्रसंगों को लेकर व्यवस्था रहेगी। स्वास्थ्य को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। संतान की ओर से चिंताजनक समाचार प्राप्त होंगे। प्रेम प्रसंगों को लेकर उत्साह रहेगा तथा प्रेम विवाह के मामलों को लेकर जल्दबाजी न करें। यात्रा योग अनुकूल एवं प्रसन्नतादायक रहेगा। जीवन साधी के सहयोग से रुका दुमा काय आरम्भ होगा। मित्रों का नदयोग प्राप्त होगा। नित्य 'गुरु पूजन' करें। अनुकूल तिथियाँ - १, १७, २२, २६.

### कुदम्ब

(बू, गे, गो, सा, सी, सू, से, लो, दा)  
किसी बाहरी व्यक्ति को लेकर धर में विवाद होगा तथा मित्रों के साथ छोड़ जाने से मानसिक तनाव होगा। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में संयम एवं सूझबूझ से ही काम लें। संतान पक्ष की ओर से किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। अधिक वर्ष आर्थिक लाभ की स्थिति में रहेंगे तथा नौकरी एवं इंटरव्यू के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। घर में सुख-सुविधा के साथों में वृद्धि होगी तथा जीवन जायदाद में विस्तार होगा। आपने जो भी कार्य सोचा था वह अब पूर्ण होने का समय आ गया है, अपनपके कार्य बनेंगे। पूर्ण अनुकूलता के लिये 'भाग्योदय साधना' सम्पन्न करें।

### मीठा

(ली, दू, व, ज, वे, दो, या, थी)  
अदालती एवं कार्यालय सम्बन्धी मामलों को लेकर खिलाता रहेगी। विश्वासघात की स्थितियों में सावधानी बरतें। कुछ मित्रों के साथ छोड़ जाने से परेशानी होगी। जीवनसाधी की ओर से अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा तथा स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। संतान की ओर से प्रसन्नतादायक समाचार मिलेगा। बाहर प्रयोग के समय सावधानी बरतें, आकस्मिक दुर्घटना के योग प्रबल हैं। किसी को दिया हुआ धन प्राप्त होगा, परंतु जल्दबाजी न करें। अनुकूल तिथि - ११, २१, २७।

### इस मास के त्रैत, पर्व एवं त्यौहार

1 जनवरी - पौष कृष्ण ३०	तृतीय सहशान्दी प्रारम्भ
2 जनवरी - पौष कृष्ण ३१	प्रवीष
13 जनवरी - पौष शुक्ल ०६	लोहड़ी
14 जनवरी - पौष शुक्ल ०७	षष्ठीर संकाशनि
17 जनवरी - पौष शुक्ल ११	पुनर्वा एकादशी
18 जनवरी - पौष शुक्ल १२	भीम प्रवीष त्रैत
21 जनवरी - पौष शुक्ल १५	सदगुरु जन्म विवास,
24 जनवरी - पौष कृष्ण ०४	माघ स्नान प्रारम्भ
26 जनवरी - पौष कृष्ण ०५	गणेश संकाशी चतुर्थी
	भारतीय मणितंत्र विवास

Any Month

# Amazing Mantras for new Millennium

## 1. Magnetize your persona

Outshining everyone in one's field is an achievement easily wished for but hard to attain. Yet one knows well that if one has magnetism in one's voice, eyes, face or personality others could be easily left overawed. Would you like to be equipped thus?

Yes? Then there's no better time than the new millennium to possess such attributes which you thought to be the birthright of only national and international luminaries. Know it that one is never born with them, rather they have to be brought to the surface and there couldn't be a better way than this short but powerful Mantra ritual.

On a Sunday morning wear fresh clothes and light a ghee lamp. Seated on a yellow mat chant thus continuously for 15 minutes with a *Sammohan rosary* (सम्मोहन माला) while staring unblinkingly at the flame.

*Om Hreem Hreem Om*

// ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ //

Do this regularly for 15 days and see the result for yourself

Sadhana Articles : 150/-

## 2. Snub ailments thus

Today no one can claim to be totally fit, although everyone shall agree that the natural state of the body is perfect health. Diseases not just bring pain and suffering but also loss of money and even longevity. Best medical help is a must, yet along with it one could try a wondrous Mantra whose efficacy for curing even the worst ailments and even stalling death remains unparalleled since the Vedic age!

Start from any Monday or still better from the coming *Stivratra* (4.3.2000). Early morning have a bath. Wear yellow robes. Sit on a yellow mat and placing a *Paarad Shivaling* (पारद शिवलिंग) before yourself in a copper plate chant 5 rounds of the following *Maha-mrityunjaya* Mantra with white *Hakeek rosary* (सफेद हकीक माला).

*Om Troyambakam Yujamahe Sugandhim  
Pushtivardhanam Urvaarukmiv Bandhnaan-  
mrityormukshye Maumritoad*

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुरजनिधि पुष्टिवर्धनं  
उर्वारुक्मिण वन्धनान् मृत्योमुक्षीय मामृतात् ।

Do this for 11 days. On the 11th day drop the rosary in a river or pond. Place the *Paarad Shivaling* in your worship place at home.

Sadhana Articles : 350/-

## 3. Easing mental tension

The fast pace of life today has left the whole of mankind struggling to somehow maintain poise and mental balance. Outwardly one might look perfectly in control, yet the inner turmoil could assume threatening proportions and burst forth in form of heart failure, indigestion and even insanity.

If one realised that there dwells within a power which could steer one clear of all problems, one would choose to tap into it rather than worry oneself to death. To ease tensions try this simple ritual.

Early morning or any time you feel fresh have a bath and put a *Cheetanya rosary* (चेतन्य माला) around your neck. Sit in a relaxed manner in any posture. One can even lie down. Then forgetting all your problems chant the following Mantra for 10 minutes.

*Om Hreem Hreem Hreem Shreem Hreem Hreem*  
॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥

Whenever you feel mentally fatigued try it. You might even have a flash of intuition suggesting a way out of your current problem.

Sadhana Articles : 150/-

## 4. Wealth galore

Progress in life without wealth is not impossible or unheard of, yet it is a fact that money does ease many problems of life. Poverty on the other hand means toiling day and night to make two ends meet leaving no time or enthusiasm for entertainment, travel or making an attempt to raise one's living standard.

*Indraanni Prayog* is an amazing ritual which promises new sources of income and wealth. For this start on any Wednesday morning. Wear yellow robes. Sit facing North on a yellow mat. In a plate shower some flower petals. On them place an *Indraanni rosary* (इन्द्राणी माला). Light incense. Next pick the rosary and chant 5 rounds of the following Mantra.

*Om Shreem Shreem Indraannyei Shreem Shreem Om*  
॥ ॐ श्रीं श्रीं इन्द्राण्ये श्रीं श्रीं ॐ ॥

Do this regularly for 10 days. On the 11th day tie the rosary along with some fresh flower petals in a yellow cloth and drop it in a river or pond.

Sadhana Articles : 150/-

# कथा भगवान की भी भाषा होती है?

पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के ज्योतिषीय अनुभव से प्राप्त कुछ सूत्र ...



**स्व** जन कर्मों आते हैं, यह मनोवैज्ञानिकों का विषय रहा है, परन्तु इसपर ध्यान न देकर ज्योतिषीयों ने इस आत अधिक महत्व दिया है, कि स्वप्न का संकेत क्या है? ऊटपटांग स्वप्नों का हेतु भी उन्होंने हँडा है, और उन्होंने अपने अनुभव, ज्ञान तथा कविप्रिणीत ज्योतिष सूत्रों के माध्यम से जो निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं, वे सत्यता के निकट हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है। आदि काल से ही मनुष्य स्वप्नों के प्रति आकर्षण रखता आया है तथा व्यक्ति के वर्तमान संदर्भों को ध्यान में रखते हुए इसके फलितार्थों पर भी विचार करता आया है।

अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति लिंकन अपने कार्यों के फलत चिर समरणीय हैं, उनके नीचे लेखक वार्ड वैमन के शब्दों में —

“एक दिन प्रातःकाल ज्यों ही मैं ‘सुप्रभात’ कहने लिंकन के पास गया, तो वे और दिनों की अपेक्षा मुस्त और बुझेनुश्च से थे। वे हरे पर ओनस्प्रिटा में कुछ धूमिलता सी प्रतीत ही रही थी। बोले — बैठिये मिस्टर वार्ड! आज मैंने एक अदोखा स्वप्न देखा, मैंने देखा कि मैं ब्हाइट हाउस (राष्ट्रपति घर) में इधर-उधर धूम रहा हूं, चारों तरफ लोग हाथ बांधे खड़े हैं, चेहरों पर दुख और आँखों में आँसू हैं। मैं योढ़ा और आगे बढ़ता हूं कि मेरे कानों में शोकाकूल श्वनियां सुनाई पड़ती हैं, और मैं जल्दी से पूर्ण कक्ष की ओर चल पड़ता हूं। जैसे ही मैं आगे कदम बढ़ाता हूं कि एक कमरे में मुझे लाश रखी दिखाई देती है, जो सफेद चादर से ढकी हुई है। मैं अपने पास खड़े व्यक्ति से पूछता हूं कि यह लाश किसकी है? तो उत्तर मिलता है, हमारे राष्ट्रपति की . . . हमारे राष्ट्रपति की है नहीं है।”

वार्ड वैमन ने कहा — “सर, ऐसा होगा नहीं, प्रभु ऐसा नहीं करेगे।” पर आश्चर्य तब हुआ, जब कुछ ही दिनों बाद यह स्वप्न अक्षरण सत्य हो गया। राष्ट्रपति लिंकन की हत्या हो गई, और वार्ड वैमन ने कहा — “ठीक ऐसा ही दृश्य

अ ‘जलवरी’ २००० मंत्र-संत्र-यंत्र विज्ञान ‘७५’ ४

पूर्ण कक्ष की ओर नजर आ रहा था, जैसा लिंकन ने बर्णन किया था।” और यह घटना इनिहास का अमिट लेख बन गई।

इसीलिये चाहे स्वप्न ज्योतिष हो या ज्योतिष का कोई भी अंग हो उसे ज्योतिष विज्ञान कहा गया है, विज्ञान शब्द साथ में लगा हुआ है, क्योंकि विज्ञान सत्य को प्रकट करने के प्रयास का नाम है। जागे स्वप्न में दिखाई देने वाले कुछ घटनाओं, वृक्षों अथवा वस्तुओं के फलितार्थ दिये जा रहे हैं —

**अंक या संख्या** — यदि स्वप्न में अंक या कोई नंबर दिखाई दे, तो यह शुभ एवं विजय का प्रतीक है। लॉटरी या किसी अन्य प्रकार से मास्योदय का प्रतीक है।

**अंग शरीर का** — यदि स्वप्न में शरीर का कोई अंग अतिरिक्त जुड़ता हुआ किये तो यह रोग का संकेत है, निकट भविष्य में कोई बीमारी आएगी। यदि शरीर का कोई अंग कटकर अलग होता दिखाई दे तो घर में कोई नया प्राणी आयेगा, या पुत्र जन्म होगा, ऐसा विचारना चाहिये।

**आंडान** — यदि अपने घर का आंगन दिखे तो अशुभ है परन्तु यदि दूसरे के घर का आंगन दिखे तो शुभ होता है।

**अंग झंग** — स्वयं का अंगभंग होता दिखाई दे तो शोध ही अनुकूल एवं शुभ समाचार प्राप्त होने तथा इन दिनों जो विचार या योजना मस्तिष्क में है, वह पूर्ण होगी। पर यदि किसी अन्य व्यक्ति या परिचित का अंगभंग होता नजर आवे, तो यह एकसीडेंट अथवा दुर्घटना का सूचक है।

**अंगठी** — यह शीघ्र दिखाई या संगाई का सूचक है।

**अंत्येष्टि** — यदि व्यक्ति स्वप्न में अपने को मुर्दा देखे तथा श्वसनामें अन्त्येष्टि देखे, तो विशेष शुभ समशना चाहिये, शोध ही मनोवांछित कार्य की सिद्धि होगी या मुकदमा-चुनाव आदि में पूर्ण विजय प्राप्त होगी।

**अंथा कुंआ** — यदि ऐसा कुआ दिखाई दे जिसमें जल न हो, तो आर्थिक घाटा, परानय या दोष परेशानी होगी।

अंधा - जंधा व्यक्ति दिखे, तो कष्टप्रद स्थिति होगी, परन्तु यदि स्वयं को अंधा होता देखे तो विशेष शुभ होता है।

अकाल - यदि स्वप्न में अकाल या अकाल जैसी स्थिति दिखाई दे, तो इसके बारे में तात्पर्य होगे - प्रश्नतः उस क्षेत्र में निकट समय में अकाल पड़ेगा, दूसरा यह कि स्वप्न देखने वाले को आर्थिक न्यूनता का सामना करना पड़ेगा।

आज्ञि - स्वप्न में चारों तरफ आज लगी हुई दिखाई दे या अपना घर जलता हुआ दिखे, तो यह अशुभ है, घर में कोई बीमार पड़ेगा या धोर कष्ट भोगना पड़ेगा।

अविनेशाला - घर की रसोई में घोजन पकाने वाली चूल्हे की अन्नि दिखे तो कण मुक्ति एवं रोग मुक्ति होनी है।

उद्वाज - यदि स्वप्न में बढ़ा भाई दिखाई दे, तो प्रविष्ट्य में विवर चित्त वृत्ति का प्रतीक है। जिस कार्य की वजह से इन दिनों चिन्तित रहना पड़ रहा है, उसका समाधान शीघ्र ही निकल आयेगा, जैसा विचार करना चाहिये।

अचरज - स्वप्न में कोई आश्चर्यजनक घटना, वस्तु या व्यक्ति दिखे, तो वह चित्त की डांबाडोल प्रवृत्ति का झोलक है। भन में जो विचार इन दिनों उच्च हुए हैं, वे पूर्ण न होंगे।

अट्टालिका - यदि स्वप्न में एक से अधिक मंजिलों वाला ऊँची इमारत या हवेली दिखाई दे, तो यह शुभ एवं उत्तम का प्रतीक है, शीघ्र प्रमोशन अथवा धन लाभ होगा।

अणुब्रम - स्वप्न में अणुब्रम बनाते या उसका विस्फोट होते दिखे तो शत्रुओं पर विजय होगी।

अतिथि - स्वप्न में यदि मेहमान दिखाई दे या वे आकर भोजनादि करें, तो आकस्मिक विपस्ति का सूचक है।

अदालत - यदि स्वप्न में अदालत का दृश्य दिखाई दे तो मुकदमों में विजय अथवा शत्रु पर विजय प्राप्त होगी।

अधिकारी - उच्च अधिकारी या पानेदार आदि दिखाई दे तो समझना चाहिये, कि शीघ्र ही कुछ न कुछ घटित होगा, जो भी घटित होगा वह आकस्मिक रूप से, अप्रत्याशित।

अध्यापक - अध्यापक दिखे तो घर में मांगलिक कार्य होंगे या दूर किसी रिसेवर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

अज्ञ - अज्ञ के द्वेरा या द्वेरे खेत दिखाई दे, तो शीघ्र ही शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

अपमान - स्वप्न में यदि किसी के द्वारा अपमान हो जाय या वह भरे बाजार में गली दे, अथवा बप्पा मार दे या भला-बुरा कह दे तथा आप अपने को अपमानित अनुभव करें तो यह स्पष्ट है कि यदि आप का कोई मुकदमा चल रहा है, तो उसमें विजय होगी और पुरानी चिन्ता मिट जायेगी।

अपराधी - अपराधी दिखे, तो अनिष्ट हो सकता है, इनकम टैक्स आदि का छापा आदि भी हो सकता है।

अभिषेक - उसका फल अभिनन्दन की तरह ही है।

## कह देता कि स्वप्न अनुकूल नहीं है तो उनका हृदय टूट जाता।

अभिनन्दन - स्वप्न में अभिनन्दन होना अशुभ का प्रतीक है। मुकदमे में हार जाना, युद्ध में परास्त होना, चुनाव में असफल रहना आदि इससे सम्बन्धित हैं।

ज्योतिष तो पूज्यपाद सद्गुरुस्त्रेव के विराट स्वरूप का, अथाह ज्ञान सागर का एक बंद मात्र ही है। 'अभिनन्दन' विषय पर स्वप्न ज्योतिष के आधार पर अपने ज्योतिषीय अनुभव को एक नगह उन्होंने अपने शब्दों में व्यक्त किया है -

सन् १९७२ की घटना है, मैं एक एम.एल.ए. के घर पर ठहरा हुआ था। एक दिन का प्रवास था। वे चुनाव में व्यस्त थे और जीतने की शत प्रतिशत उम्मीद लेकर प्रयत्न कर रहे थे। प्रातः उठते ही अपने हाथों से चाय लेकर मेरे कमरे में उपस्थित हुए, बोले - 'गुरु जी! शुभ सन्देश दूं। आज प्रतः ही मुझे स्वप्न आया है कि मैं जीत गया हूं, चारों ओर जय-जयकार हो रही है और नगर पालिका मेरा अभिनन्दन कर रही है... प्रातः का स्वप्न तो सच होता है न?'

वे चहक रहे थे, आहलादित हो रहे थे। वे स्वप्न को शुभ समझ रहे थे, मैं स्वप्न के फलितार्थों पर विचार कर रहा था। सप्ताह भर में चुनाव परिणाम भी निकलने वाला था।

यह कह देता कि स्वप्न अनुकूल नहीं है तो उनका हृदय टूट जाता, उत्साह मारा जाता, और यदि वास्तविकता नहीं बताता तो मैं अपने कर्तव्य से चुनौत होता। अजीब तुविधा में पड़ गया। किर भी कर्तव्य ने भावनाओं पर विजय पाई। मैंने चुनाव में असफल होने की बात कागज पर जल्दी-जल्दी लिख लिफाफे में बंद करके उन्हें दे दी और कह दिया, चुनाव परिणाम निकलने से पहले खोले नहीं, प्रयत्न करने रहे।

परिणाम निकला, उनकी ज्ञानन जब्त हो गई, डार्ट एटक ऐसा हुआ कि लगभग भर्तीना भर अस्पताल में रहे।

# परमामा

योगीजब बिद्वत् शिवस्वरूप  
परमहंस बिश्वलेशवरामबद्ध जी

मुझे तो वे उच्चकोटि के योगी भी अत्यंत प्रिय हैं। उन संन्यासी शिष्यों को उच्चकोटि की साक्षना सिखानी पड़ती है, अपना एक प्रखर और भारदार रूप उनके सामने रखना पड़ता है और गृहस्थ शिष्यों के दीच बिलकुल बालक बनकर मी बात करता हूँ। . . . और नहीं समझ पाओगे तुम मुझे . . . ब्रह्म को कोई बांध भी नहीं पाया है, ब्रह्म को कोई समझ भी नहीं पाया है . . . और मैं ठीक कह रहा हूँ कि तुम मुझे समझ भी नहीं पाओगे। जिस दिन मैं चला जाऊँगा, उस दिन तुम्हारे हिस्से में आंसुओं के अलावा कुछ बाली नहीं रहेगा।

तुम मुझसे जुदाई सहन नहीं कर सकते, एक क्षण भी मुझसे अलग नहीं रह सकते, क्योंकि मेरी सुगम्य को तुमने एहसास किया है। मेरी सुगम्य तुम्हारे प्राणों में भरी है, दो मिनट ही सही, दो मिनट ही राही, दो महीने ही सही, दो साल ही सही — तुमने एक अपूर्व सुगम्य, आनन्द को अहसास किया है, आत्मसात किया है। वह सुगम्य जो अपने आप में एक ब्रह्मन्य सुगम्य है, साधारण मनुष्य की गंध नहीं है। जो क्षण तुमने मेरे साथ आतीत किये हैं, वे पूर्णता के क्षण हैं, वे ब्रह्म के क्षण हैं, ईश्वर के क्षण हैं।

ईश्वर अपने आप में कोई हवा बनकर नहीं आता, एक आकृति उसको लेनी ही पड़ती है। यह चाहे राम के रूप में पैदा हो, चाहे कृष्ण के रूप में पैदा हो, चाहे ईसा मसीह के रूप में पैदा हो — हाथ—पांव, नाक—कन, आदि तो

जब मैं पहली बार सिद्धाश्रम गया, तब सिद्धाश्रम एक शमशान की तरह था। वहाँ देखा — संन्यासी साधना कर रहे हैं . . . आखे बन्द किये हुए हुए बैठे हैं . . . कोई हसी नहीं . . . कोई खिलखिलाफट नहीं! मैंने पहली बार कहा कि ऐसा सिद्धाश्रम नहीं बल स्कन्द, इस सिद्धाश्रम में कुछ उमग होनी चाहिये, कुछ मस्ती होनी चाहिये। और वहाँ के शिष्य आज भी इन्तजार करते हैं कि कब निखिलश्वरानन्द जी आएं और यहाँ पांव रख दें। वहाँ की माटी को लैकर कब अन्दन की तरह ललाट पर लगाएं . . . इन्तजार करते रहते हैं। वे कह बार कहते हैं, कि आपके रास्ते को ताकते—ताकते तो हमारी आखों में झाइयाँ पड़ने लगी हैं, आप कब आएंगे?

वैसे ही बनाने पड़ते हैं। यह तुम्हारा सौन्दर्य है कि तुम अपना पिछला जीवन नहीं देख पाते, यह तुम्हारे लिये खुशी की बात है... और मेरे लिये वेदना की बात ही जाती है कि मैं तुम्हें पिछले जीवन से पहिचान लेता हूँ... मैं तुम्हारे प्रत्येक जीवन का साक्षी हूँ और हर जीवन में तुम्हें समझाना पड़ता है कि जीवन बरबाद हो जायेगा, यह सुन्दर जो तुम्हारे सामने है, पास से निकल जायेगी, किंतु तुम्हें दुर्गचयुक्त जीवन जीने के लिये मजबूर होना पड़ेगा।

वास्तव में मुझे आपने बारे में कुछ भी नहीं कहना चाहिये। तुम्हारे उपर जो माया का आवरण है, उसको मुझे तोड़ना नहीं चाहिये, क्योंकि जिस दिन तुम मुझे पहिचान लोगे, उस दिन तुम नहीं रह पाओगे... और रहते हो तो तुम्हारा जीवन व्यर्थ है। तुम्हारे शरीर में मल-मूत्र के अलावा कुछ नहीं है और मैं उसमें प्राण तत्त्व देने की कोशिश करता हूँ, किंतु तुम्हें अपने हृदय के पास बुलाता हूँ किंतु तुम्हें आवाज देता हूँ और पूरा जीवन ऐसे ही बीत जाता है। वे तुम्हारे और मेरे सम्बन्ध शरीर के सम्बन्ध नहीं हैं, प्राणों के सम्बन्ध हैं, आत्मा के सम्बन्ध हैं।

- जो प्रबन्धन दे रहा है वह कोई दूसरा है। जो हमसे बात कर रहा है वह कोई दूसरा है।

- एक व्यक्ति हजार जिन्दगियां नहीं जी सकता, हजार जिन्दगियां तो केवल ब्रह्म ही जी सकता है। कृष्ण हजार जिन्दगियां जी सके, गोपियां कह रही थीं कृष्ण मेरे हैं, यशोदा कह रही थीं कृष्ण मेरे हैं, अर्जुन उनको सारथी समझ रहा था, राधा के साथ वे बहुत प्रेममय थे देवकी कह रही थीं मेरा पुत्र है, गोप घाले, उद्धव सभी उनको याद कर रहे थे परन्तु अलग अलग रूप मे। और यही कसौटी है ब्रह्म की पहिचान करने की... यही कसौटी है उस व्यक्तित्व की समझने की।

जब श्रीकृष्ण गीता में अर्जुन को समझा रहे थे, कि मैं दिव्यात्मा हूँ मैं शोधश्वर हूँ मैं षोडश कला सम्पन्न तेजस्यी युग पुरुष हूँ, तो यह उनका अहंकार नहीं था। यह तो अहानी मूढ़, नासमझ अर्जुन को वास्तविकता समझाने का भाव था। और यही भाव मैं तुम्हारे सामने रख रहा हूँ। उस समय समाज ने कृष्ण की आलीबनाएँ की, बुद्ध को गालियां दी, इसके सूली पर टांगा..., समाज जीते जी किसी को पहिचानता ही नहीं है। पर मरने के बाद उसकी मृति, उसके कीर्तित्वम्, मन्दिर, चर्च बनाता है, पर इससे उस युग पुरुष का साहचर्य तो ग्रात नहीं होता न! किंतु तुम्हारे मूढ़त समाप्त होगी?

मैं कहता हूँ कि अगर मुझमें कुछ है, तो लोग अपने आप मुझे पहिचान लेंगे, आज नहीं पहिचानेंगे तो मरने के सौ साल बाद जारी पहिचानेंगे, एहसास करेंगे। मैं तुम्हें साफ, शुद्ध शब्दों में आवाज दे रहा हूँ... मैं तैयार हूँ तुम्हें अपने प्राणों में आत्मसात करने के लिये। अपने हृदय के दरवाजे खोलता हुआ आवाज दे रहा हूँ कि बहुत कम समय बचा है — ऐसा न हो कि तुम्हारे पाव थक जायें और पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जायें। और मुझे विश्वास है कि तुम मुझे मुला नहीं पाओगे, अपनी आद्यों से कोशिश करने के बायजूद भी ओझाल नहीं कर सकोगे।

वास्तव में ही वे सौभाग्यशाली होते हैं जो नेरी सानिध्यता अनुभव कर सकते हैं, जो मेरे सभी

आ सकते हैं, अपने हृदय में मुझे स्थापित कर सकते हैं।

तुम्हारे जीवन में वह क्षण आए, जब तुम में विरह पैदा हो, एक बेचैनी पैदा हो,

सको मस्ती में, तुम नाच सको, तुम धिरक सको, तुम्हारा तीसरा नेत्र

जायत हो सके और तुम सामने वाले के स्वरूप को पहिचान सको,

मैं तुम्हें ऐसा ही आशीर्वाद देता हूँ।

- पूज्यपाद सदगुरुदेव ■

# स्मर्तृगामी सद्गुरुदेव निखिल

**S**क बार किसी जबरार पर सद्गुरुदेव ने कहा था, — 'मेर-तज यज्ञ विज्ञान' की वह पवित्रिका मात्र कानून के बुद्धि पत्रों ही नहीं हैं अपितु स्वयं मैं ही हूँ।' विज्ञ प्रकार सद्गुरुदेव पवित्रिका की एक एक पौर्ण द्वारा भी अपने शिष्यों में भाव उत्पन्न करने हैं और उन्हाँस पैदा ही जाने पर प्रत्यक्ष वज्रांश लेकर उसे कृतार्थ कर देते हैं, आगे यही स्मरण किया जा रहा एक साधक एवं सम्बन्धित प्रश्न चाहता जाता जो कि सद्गुरुदेव के उपरोक्त वक्ता को ही पूछिए करता है—

वेदों के एक भवित्व ओं किंतु वचों के जीवन की सत्य घटना है, जिस उन्होंने पत्र द्वारा लिख कर भेजा है—

बात उस समय की है, जब मैंने नूलाई ५८ की पवित्रिका में शिष्यों के नाम गुरुदेव का गुरु पूर्णिमा के आवाहन पढ़ा—  
— 'तुम भी सो... लियमें निरता था— "मेरे कर्म संन्यास के क्षण समीप आ गये हैं, इसी से मैं तुम्ह आज गुरु पूर्णिमा के एक अन्य रहस्य को भी जाना चाहता हूँ और वह वह कि गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आसीन होकर अपने सभी शिष्यों का एकाकार करने वृण जो कुछ भी निवेदन समर्पण गुरु कष्टल में करते हैं, उनकी चैतन्यता ही विशिष्ट होती है। अंत में मैं पुनः तुम सभी को हृष्य से आशीर्वाद देता हुआ तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा में व्यथ हूँ। . . ."

मैं ये आख्ये, मेरे नेत्र आँखों से भर गये। गुरुदेव के दर्शन पाने की ललता से मैं व्याकुल हो गया और खुब रोया, सद्गुरुदेव की ललता मन में समाझड़ और मैंने मन में विचार आया कि अब आप भावास ले लेंगे, तो मुझे दोषा कीन देगा? मैं केसे आपसे मिल महुआ? मेरा जीवन अब तक दुखों से दी गुजरा है और आज मुझ में सद्गुरु मिल गया वरन्तु मैं दोषा नहीं जे पाया और अब केसे मैं जो संकेत बहत रात तक रोता रहा और मन-ही मन यद्गुरुदेव जो को धाद ललता रहा और सोचता रहा कि वह कहे... ? यहाँ शोकने रोने निराशा होकर सो गया... और फिर चमत्कार ही हो गया। ख्वाब पूज्य गुरुदेव जी मेरे सामने आपसान उपस्थित हो गये और मैं उनके सामने मिछ लुकाए, हाथ जोड़े तुपत्याप खड़ा रहा। अब एक गुरुदेव थोले—  
— 'क्या बात है बेटा?'

मैंने कहा— "... ३६ ... गुरुनी कोई बात नहीं है।"

फिर गुरुजी थोले— "नहीं नहीं क्या बात है, बोलो क्या चाहिये, मांगो क्या हूँ, बोलो?"

मेरी आँखें खो गईं, मैंने नतमरनक होकर कहा— "गुरुनी मुझे कुछ नहीं चाहिये, मुझे जो आपके चरण चमत्ता है, और कुछ नहीं चाहिये।" गुरुनी ने मुझे ढाटकर कहा— "यह चरण छुने का अवसर नहीं है, मैं तुम्हें जो देने जा रहा हूँ, वह सो। मैं जो दे रहा हूँ वह क्यों नहीं देते?"

मैं फिर हाथ बोटकान नतमरनक होकर थोला— "आपको जैसो हम्भा, आप जो देना चाहते हैं, दीजिये।"

इतना कह कर मैं तुपत्याप खड़ा रहा और पूज्य गुरुदेव जी ने कहा 'ठीक है' और मैं ललता के बीचोंबीच अपने दाहिने अंगूठे की तवाने हूप कुछ देर तक लगा तार मेरी जैमों में रेखते रहे और फिर अंगूठा इसी हूप थोल 'जाओ।' उसी छाफ मेरी लिद्दी दूर गई उस समय प्रातः, के ठोक ५.२० बजे रहे थे, यह धर्ता १ नूलाई ५८ जापान महाप्रयाण के ४८ घण्टे पूर्व की हो गई है।

पवित्रिका में सद्गुरुदेव की कही असला लिङ्गी कुछ प्रतीक्षाएँ को पढ़ने मात्र से भी साधकों को गुरुदेव को प्राणलेनना प्राप्त हो जाती है, और उन्हें विष्य अनुभूतियों जो नहीं हैं। उन्होंने जी कहा कि 'ये पवित्रिका नहीं स्वयं मैं हूँ' तो सत्य ही कहा है। ऐसी एक नहीं हृषीकेश विज्ञान-पूर्णिमा में वृद्धि हुई है। साधकों को होने वाली अंगीकार विज्ञान-पूर्णिमा में वृद्धि हुई है। स्वरथ करने मात्र से ही कई लोगों को सद्गुरुदेव की सूक्ष्म अथवा प्रत्यक्षानुभूति होने लगी है। निश्चय ही सद्गुरुदेव की कलणसभी कृपाद्विषय साधकों पर ही नहीं है और उनकी उपस्थिति स्मरण करने मात्र से ही अनुभव होने लगी है। स्वरथ करने साव से उपस्थिति होने वाले स्मर्तृगामी सद्गुरुदेव एक बार पुकारने पर ही जुन रहे हैं, जो दृढ़ व्यय को छोल कर एकार की मई हो तो।



# गुरुद्वारा किटबाजी

दिलाशूषित पर रोकड़ी प्रयोग और असहमती बाहर  
समझ हो गयी हैं। इस लिहे दैत्य दिव्य दूषि—  
पर तो दिव्य साधनात्मक प्रयोग

शास्त्रों साथकों एवं शिष्यों  
के लिए वह धौजना आरण्ह ठुकर है।  
इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर  
लिली छिद्रजड़ी में पूज्य गुरुदेव के  
निरहृशन में ये साधनाएँ पूर्ण  
विधि विधान के साथ सम्प्रकार होती हैं, जो कि उस दिन शब्द 5 से  
7 बजे के बीच सम्भव होती है और  
वहि ब्रह्म व विश्वास हो, तो उसी  
दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी  
होने लगता है।

साधना से शाग लेने वाले साधक  
को यह पूज्य शास्त्री आदि संस्था  
कारों द्वारा उपलब्ध होती है (योगी,  
दुर्गा और परमात्मा अपने साथ में लाते  
या न लाते तो यह से प्राप्त कर लें।)

इन दीनों दिनों एवं ऋणों में यह लेने वाले साधकों के लिए इस विषय में यह है—

1. आपने किसी दी निमों अथवा स्वर्गीयों को (जो परिका के सदस्य नहीं हैं) मत्र-तत्र-यत्र विज्ञान परिका का यार्थिक रादरय बनाकर दिली गुरुद्वारा ने  
साधन होने वाले किसी एक प्रयोग से भाग ले सकते हैं। परिका की सदस्यता का एक वर्णीय शुल्क ₹ 225/- है, परन्तु आपको मात्र ₹ 438/- ही जमा करने हैं। प्रयोग से सन्तुष्टि विशेष मत्र शिख प्राण-प्रतिष्ठित होगी (यत्र पुटिका आदि) आपको नि-शुल्क प्रदान की जाएगी।
2. यदि आप परिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक पित्र के लिए परिका यार्थिक रादरयों प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना से भाग ले सकते हैं।
3. परिका सदस्य बनाकर आप, किसी एक परिवार को जोहि परम्परा की इस ग्राहन राजनामक द्वान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पूज्यदारी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयोग से एक परिवार में अधिका कुछ प्राप्तियाँ में इश्वरीय विष्वास, साधनामक विज्ञान आ पाता है, तो यह आपके उपयन की राफजता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग से सरथा निरुक्त है और युक्त कृपा दात ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं एवं उपरोक्त की निरुक्त वर राशि का अर्थ के तराजू में नहीं तील सकते।

‘जनवरी’ 2000 मत्र-तत्र-यत्र विज्ञान ‘80’

## अप्रसंजिता साधना

मन को दृढ़जाता और कारण से व्यक्ति आज इतना अधिक प्रेशन हो गया है।  
मन में दृढ़ता न द्वारा के कारण ही व्यक्ति किसी भी सकलत्व को ले लो लेता है परन्तु बीच में  
हो घबरा जाता है, यदि वह मन में बाली हो तो परिस्थिति में को झुकाकर ही दम लेता है और  
विज्ञ छापिल करके रहता है। स्वभव में बीच विद्युतिज्ञान, खोज, निराशा, भय,  
अलगायतन, लक्षणहीनता, उच्चाटन — ये सब मन की निर्वाजता होते हैं। हर कोई जाप पर  
हाथी हो जाता है, घर के बातावरण व्यक्ति कायालय की बातों से आपको तनाव हो जाता है।  
नीचन में भोजित स्वप्न से उनार-चढ़ाव आने ही है, उथल-पुथल होती होती है, नदार-झगड़  
होती ही है, लाप-हानि होती होती है, अमोरी-मरीबी होती है, परन्तु स्फूर्त भनुभ्य होती है, जो  
हर स्थिति में सम हो, प्रसन्नतर सके, आनन्दित रह सके और इसके लिये आवश्यक है, कि  
वह मनश्चेतना के स्तर पर काफी ऊपर उठा दूआ व्यक्त हो। नमी वह जीवन का आनन्द  
प्राप्त कर सकता है, अप्यतो सकल सम्पद होते हुए भी भय व्यर्थ है। मन को पूर्ण  
निराशता, दुर्कां और अंतिमता प्रदान करने की ही यह साधना है, जो आज के युग में  
प्रत्येक व्यक्तिया व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो गा।

## फोटो द्वारा ‘कमला

### महाविद्वा दोक्षा’ केतल

२६ से २८ जलवटी को हो  
आप जाने तो निर्धारित विकास से पूर्व  
ही अपना केतल एवं नींदावर याजि  
का वैक द्वारा (‘मत्र तत्र यत्र विज्ञान’  
के नाम से) भेजकर भी इन दिवसों पर  
जाने वाली नींदा को प्राप्त कर सकते  
हैं। आपका केतो श्वे पाच सवस्यों के  
परे विनीती कायालय को स्वयं पर  
प्राप्त कर सके, इस लिए आप अपना पव  
स्पीद-पास द्वारा ही भेजें। पव विलम्ब  
से विलम्ब परवेश सम्पन्न न हो सकती।

साधना 4  
समस्त 4  
मनोकामा  
संकल्पन  
व्यक्तित्व  
भगवान् ।  
स्वतः ही  
तो समाप्त  
व्यवसायी  
साधन है  
मोक्ष मार्ग

\* दीक्षा आ  
उपायोगक  
कर लेने का  
अशुरेपन की  
अनुबोधी का  
प्राप्त कर ले  
प्राप्त कर ले  
♦ गुरु प्रदत्त  
कार्य द्वारा विद्युतान्त्रिका  
संकलन और  
पुक लघु उपा  
♦ दीक्षा में व  
का जल से  
उपरोक्ता विद्य  
जापुता। यह  
साथ उ बड़े  
के उपरोक्ता  
हित्या जापुता।

सम्पर्क

धूमावती साधना एक प्रचलित और अनुकूल साधना है, जिसे यदि सही सम्पन्न किया जाए तो उसका निशाना खाली नहीं जाता। शिवमुक्त होने के बावजूद साधना सौम्य रूप ले लेती है, परन्तु इसका प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता है। इस साधना के निम्न लाभ हैं— (१) यदि किसी प्रकार की आपके ऊपर कोई तंत्र बाधा है, अश्वा कीई तंत्र दोष हैं तो वह समाप्त होता है। (२) यदि शत् अधिक हाथी एवं बलग्रामी हो गये हों, तो वे परामर्श होते हैं और मात्रमें प्राप्त होता है। (३) यदि किसी भक्ति का कोई लम्बा रोग हो तो स्वास्थ्य लाग होता है और दूर्लभता समाप्त होती है। (४) घृत प्रेत आदि इतर योनियों का कोई प्रकोप हो, तो उसका शमन होता है। (५) धूमावती का विशेष सुखा चक्र प्राप्त होता है, जिससे किसी भी रुक्षति में साधक की अकाल मृत्यु या दुर्घटना नहीं हो सकती।

### २८.१.२००० शुक्रवार विष्णु ऐमत साधना

भगवान विष्णु सकल जगत को बलाने वाले भवितव्य हैं। उनकी साधना करने से साधक को हर कार्य में पूर्ण सफलता शिलनी है, वर्गों के समान्तर कार्य गति भगवान विष्णु की शक्ति से ही गतिशील है। किसी भी मनोकामना को लेकर सम्पन्न की गई इस साधना के गायत्रम से साधक के संकलिप्त कार्य पूर्ण होते ही हैं। इस साधना को सम्पन्न करने से साधक का व्यक्तित्व भी अवरुद्ध हो जाता है, जिसके कारण उसे अनेकों लाभ होते हैं। भगवान विष्णु यदि प्रसन्न हो जायें, तो उनकी सहवरी भगवनी लक्ष्मी तो स्वतः ही सिंह हो जाती है, और इस प्रकार साधक के जीवन में वरिद्रता का तो समाप्त ही हो जाता है, यदि व्यापार है तो उसमें वर्षकल होती है, यदि व्यवसायी है तो तरक्की होती है। यह साधना जहाँ पूर्ण भीतिक उच्चति का साधन है, बेरोजगार के लिये व्यवसाय का उपाय है, वही इस साधना से मोक्ष मार्ग भी प्राप्त होता है।

\* दीक्षा आज के युग में पुक्त प्राचीनिक उपर्युक्त साधनों के अवाक्षणों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अवाक्षण को दूर कर लेने, जीवन में अतुलनीय बल, साधन, पीड़िया एवं शोर प्राप्त कर लेने का, साधना भी सिंह मारने का।

\* तुम प्रबल शक्तिपूर्वक द्वारा विष्णु लिये कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है। उसके निष्पुणता प्राप्त कर लेता है, क्षीरिक वह सफलता और वेदात्मा प्राप्त करने का पुक्त लिया है...

\* दीक्षा में शाल लेने वाले सभी साधकों का जल से अमृत अविदेय करने के उपर्युक्त चिकित्सा लाभान्वयन प्रदान किया जाएता। यह दीक्षा इन तीनों दिवाहों की सभी छठे प्रकार की आधुनी। दीक्षा के उपर्युक्त एक उपयोगी मंत्र प्रदान जो वारसत्व में तंत्र के जानकार होते हैं, वे तो कमला दीक्षा ही लेने हैं, व्यायाक यह अपनी आप में महाविद्या है, शक्ति स्वरूप है, जिसके सामने दुर्मिय, वरिद्रना टिक ही नहीं सकते।

किन्तु पांच व्यक्तियों को वार्षिक स्वरूप बनाकर उनके भाव परे लिखना कर उपकार स्वरूप दे दीक्षा आय नि-शुल्क प्राप्त कर लकते हैं।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षाएं

**कमला महाविद्यादीक्षा**

225

-Rs. 11.25/-

यह आश्वर्य ही है कि कमला महाविद्या के नाम से तो सभी साधक परिचित होते हैं, परन्तु कमला महाविद्या की शक्ति से साधक प्राप्त अन्यजित ही है, और इसीलिए वे अन्य महाविद्या साधनाएं तो सम्पन्न करते हैं, परन्तु उनकी साधना की ओर ध्यान नहीं देते। नहीं वर्षी में कहा जाए तो कमला आदि शक्ति का वह स्वरूप है जो जीवन में अर्थ की अविद्यारी देती है। वरिद्रता को नदि से समाप्त कर धन का अक्षय सोन प्रदान करने में कमला दीक्षा अनुकूल है। इसके प्रभाव से व्यापार में चतुर्दिक वृद्धि होती है, बेरोजगार को रोजगार प्राप्त होता है, पदोन्नति होती है। महाविद्या की साधना जो प्रत्येक व्यक्ति कर ही लेना है, परन्तु जो वारसत्व में तंत्र के जानकार होते हैं, वे तो कमला दीक्षा ही लेने हैं, व्यायाक यह अपनी आप में महाविद्या है, शक्ति स्वरूप है, जिसके सामने दुर्मिय, वरिद्रना टिक ही नहीं सकते।

सम्पर्क : विद्यालय ३०८, कोहान एकलेव पीतमपुर, नई दिल्ली - ३४, फोन : ०११-७१८२२४४८, टेली फोन : ०११-७१९६७००

\* 'जनवरी' २०१० भृत्य-तंत्र-व्यव विज्ञान '४१'

### गुरुवार में दीक्षा एवं साधना का महात्म

शास्त्रों में उल्लिख आता है, कि गविन्द में भृत्य जप किया जाए तो अपि उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुष्पदायी होता है वादे तरी के किलारे करे, उससे भी अधिक समुत्तर, और उस में भी अधिक पर्वत में करे तो, और पर्वत में भी वह दिमालाय में किया जाए, तो भी और भी कई गुला बोट होता है। इन सबसे भी बोट होता है यदि साधक गुरु दररोग में बैठकर साधना समाप्त करे। और यदि गुरुजैव अपते आश्रम अद्यति गुरुद्याम न हो तर आश्रम प्रदान करें, तो इससे बड़ी दीक्षा और कुछ ही गुला होती है।

तुम ऐसे स्थान होने हैं, जहाँ दिव्य शतिशी का वास संवेद रहता ही है। जो संकुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से जीवन संशोधन प्रतिपल अपते यज्ञ में अवशिष्ट रहने हुए प्रतीक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से भवाल बनाते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुद्याम में पहुंच कर गुरु से साधन, भृत्य दुर्ब दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु दररोग का मुक्ति कर तत्की आश्रम से साधन प्राप्त करता है, तो उसके दीक्षात्मीये देवताएँ भी हीरां करते हैं।

तीर्थ स्थान पुरुषाद्य हैं यह शिष्य श्रथता साधन के लिए सभी दीक्षाएँ भी प्राप्त तीर्थ गुरुद्याम होता है। जिस धारा में संख्यालेख का लिवास स्थान रहा ही, ऐसे विल्व स्थान पर गुरु दररोग में उपस्थित दीक्षकर गुरु गुरु से गंगा प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब क्षप्त होती है, जब उसके साक्षर्म जागत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभी गुरुजैव की व्याप्तता के बातजूह भी दिल्ली गुरुद्याम से तीन दिवाहों को आश्रमात्मक प्रयोगों की श्रद्धा लिखारित की जाती है।

# अविरल यात्रा जारी है

२२-२३ अक्टूबर, संत्यात्र विद्या अष्टमकी यात्रा शिविर, वारपुर

चौथोरात्रि की दैनिकियत विद्या शिविर की तरफ से बोर्ड अविरल यात्रा जारी। विद्या भवन में यात्रकों का मिलन, गाँव-गाँव पिछाअम साथक परिवार की शाम्भा और हर कोड सेवा का मूलिमान लायकागिरी तो इसी द्वेष में सम्बद्ध है। संत्यात्र विद्या वह यात्रन दिवस है, जिसमें सद्गुरु ने साधना हेतु गठल्य कार्यालय का एवं अपनी गह द्विमालय की ओर स्थानित की थी। यह दिवस साधकों का बहुत प्रिय है, इसी निपिल रूप में हो वे प्रत्य प्रतिन दर्शन के उद्देश्य करते हैं।

शायपुर का यह अडिटोरीय आयोजन २२-२३ अक्टूबर की थी। लेकिन उसाह का मामास्त तो २५

नवम्बर की ही तारीख, जब महाराष्ट्र मन्त्रिमण्डल ने नुस्खा जला दिया है तभी यात्रा प्रारम्भ हुई। इस पर विजयमान रुक्मिणी के अन्त १३ महिलाएं विभिन्न नृत्य कल्पनालियों के रही थीं। नाशवधा विजयमान के यात्र साथक नुस्खाय हो रहे थे। तीन घण्टे तक अपार जम समझ आनन्द छिलारे जेता हुआ 'जय गुरुदेव' 'जय गुरुदेव' चारों ओर रुक्मिणी विजयमान साला प्रांगण में सायकालीन आरती के आधे ही २५ तारीख को अविरल यात्रा शुरू हो गई है।

२२ ता. की आवक संग्रहशाला का वह गंगा दूनका की सुन्दर यात्रा हुआ था। विशाल पट्टाल अवना भवन ने आकर्षक रूप दिया था। लेकिन २३ बजे पाँच शान्तिर्योग विषय से शास्त्री जी के द्वारा यापिष्ठ नृत्य युनन समाप्त हुआ। सभी व्यापक व्यवस्थाएँ ढंग से अपने आपने पर गति दोती महने, ऊपर गूह चाहर और कर्तव्य द्वारा द्वारा ऐसा लगा रहा था, मान विषयकालीन सारांश उत्तर आया हो। इसे अविरल का नहीं कहा गया। क्योंकि गुरु के वर्षों में बहुत ही अधिक कार्यालय हो सकता हो अनिवार्य है।

लेकिन २४ बजे गुरु विमुति श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी श्री कलाशबन्धु श्रीमाला जी एवं श्री अशविन्द श्रीमाला जी का मंत्र प्रदर्शन कुमार विश्वेष के ब्रह्म की प्रयत्न की यात्रा जारी हो गई। आयोजक आश्रम विषय में, उन्होंने इसी उपर्युक्त की संधारना की जड़ी थी। वे उन्निस लाख रुपया का प्रयात्र वर औरने का अन्य अनुबंध कर रहे थे। भगवत्पाद सत्यासुदृढ़ के चित्र पर गुरु विमुति ने दान्यांश किया। इस उपर्युक्त पर श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी वे आखों में कृतज्ञा के कुछ असु लगा उम्मी जावे थे क्योंकि दूजा पाद गणेश के खते हुए उद्देश्य वार गहा के विविर लिखने हुए, वाहार हाथ पर विश्व आश्रम में कई विद्यालयों और स्थानित हो गये। अब वे द्वारायांकी की इन विद्यालय उपस्थित तथा नामित श्रद्धा विद्यालयों से सम्बन्धित हैं। इनमें इनमें श्रीमाली जी का नाम



जलवरी 2000 में त्रिवेदी विद्यालय '82'

जलवरी  
त्रिवेदी  
साकार  
उनक स  
नन्दकिश  
इसके ५  
उठी है  
प्रज्ञवर्त  
नमस्क  
राजनाल  
तिवारी  
एन.के.  
संतोष व  
कल्याण  
उम्मी व  
गुरु विद  
प्राप्ति

संतोषी  
तमण अ  
साधकों  
है। प्रथम  
विपरीता  
ये तो उन  
आकर व  
लोगों से  
मरा आप

करना है।  
गाय गुल  
हुआ। उ  
विष्य— १

इसके बाह  
र है, मैं ऐस  
के पास व  
सकता है

— निष्ठिततया अद्विनीय आलोकने ते उनके द्वारा शोवाद से भूम्भ ढो पाया। उनकी सूर्यम् अपनि कह मान तो सबको ही रहा या भाई उनका केंद्रकाल के आवाहन गीत में उनको छोड़ बचाए कर किया, इसी भाव में सगो चीजों व उनके सम्मान में नाम हो गई। जब पूज्य गुरुदेव नन्दकिशोर जी ने दोष प्रज्ञनविलिम्ति किया तो इनके भूम्भ ही उनके लियों एक साथ बाज उठी उस आशा के साथ कि पूज्य गुरुदेव आरा प्रज्ञनविलिम्ति उन दोष वा प्रभाग हमारे उन्होंने को छोट करे।

उन शिविर में केके तिवारी, गणनाथस्थ द्विवेदी, बबल उपाध्याय, बबल तिवारी, विनश रानी, आरा सी.सिंह पृथके चिह्न, खेड़ाराय चर्चा, तीकोराम बाट, सेतोम सोनी, गणेशकृष्ण कुमारी, सीतामाम कल्याणी इत्याहुऽत उन्होंने परिषम में गदगद भूम्भ करते हुए प्रज्ञनित हो दी। उन्होंने उन्हें गुरुदिग्निकी की दुष्प्राप्ति वर्तने के लिये लालिया की गड़गड़ा हटाये जून रखा था।

डॉ. आनन्द मतावले, संतोष सोनी, संतोषी शुक्ला और निखिल प्रवार मण्डली के तस्मा सदस्यों के अध्यक्ष परिषम से प्रगदाल साधकों से मरता ही जारहा था। वे दिवस में प्रगदाल लोंगी-बार बड़नापड़ा, शिविर हर कोई गुरु के समान बैठ कर उन्हें निहालना ही चाहता है। प्रथम दिन के प्रथम सम्बोधन में पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी ने कहा — संन्यास और अनन्दनस्थी विषयोनाथक नहीं हैं, उनका सहा सभो जन ही शुभ जीवन का अधिक दब लकड़ा है; दगिष्ठ, विश्वामित्र, पात्रकल्पय महान कवि, सन्यासी थे तो उनका अस्थम भी अष्ट लक्ष्मी से परिपूर्ण था। निखिल के शिष्यों में किसी प्रकार की न्यूनता होनी ही नहीं चाहिए। आज आपके द्वारा आकर बहुत प्रसन्नता को उत्पन्न कर रहा हूँ। गिर्यता तो यही है, कि गुरु के काव्यों को गति वेत्ते हुए नोवन में पूर्णता की ओर अप्रशंसन हो। आप लोगोंसे में यही आशा करता हूँ कि मगावदाद सदगुरुदेव ने जिन कार्यों को करने के लिये लक्षित किया है, उन्हें पूर्ण करने में सहम हों, यहीं सेरा आशीर्वाद है।

सायकातीन ग्रन्थ में इन दोष का वर्णन ग्रामभुआ दोषों के लिये में अपने प्रवक्ता में उन्होंने कहा कि दोषों जीवन की परिवर्तन करता है। दोषों भांसारिक वा घनों से, चिन्ता से, विवारों से फैला हुआ कर उन्मुक्त जीवन वेन के ज्ञान गतिशील किया है, हुआ का के साथ गुरुदेव वा माकांडव वद्वेष प्राप्ति भवामृतुन्य दीप्ति दीप्ति भवन की। प्रथम दिन का तुरीय नम्र रहित वा उपर्युक्त जीव वाधे के साथ प्राप्त हुआ। उपनी उन्होंने कहा कि जीवन ये जीवना हो निष्ठ्य हास्त करने चाहिए। उन्होंने उपस्थित साधकों को सूत के रूप में नीन दिग्गत विदेश विदे — १. सदैव प्रसन्न रहना, २. प्रातः शीघ्र उठना, ३. अवकाश में साह्योग की भावना रखने हुए हस्तों के समानुकूल सामयिक रूपापित बतना। ४. उन्होंने वाद की कालिक पूर्णिमा योग, प्रातः पूज्य गुरुदेव के सामाजिक व्यवहारी जी ने पूर्ण नम्र बृत दोष निवारण दोषों प्रदान की। इसके बाद उन्होंने उपनी चार नमित प्रवक्तन में कहा — अप्यक्त एकमात्र भवन्नाथ सदगुरुदेव निष्ठित से होना चाहिए, गदेव आप उनके ही रहे, मैं ऐसा ही आशेषवाद दरत हूँ क्योंकि प्रत्येक के जीवन में वाधारे आती है परन्तु उन व्याधोंसे भूटकाला पाने का एक मात्र उदाय योग्य गुरु के शास नाकर जान प्राप्त करना है। आज का जीवन तो और भी कठिन है, उसे कबल साधन के माध्यम से तथा दीक्षा के द्वारा सुधारा जा सकता है।' उपर्युक्त वाद उन्होंने विषयकी दीक्षा न्याय उत्तमरूप दीक्षा प्रदान की।

शिविर संसरण न्याय, उन्होंने पूज्य गुरुदेव की उत्तम व्यवहारी जी भूम्भ प्रवक्तन के द्वारा। उन्होंने उन्होंने कहा — 'मात्र व नामान्य यही है, यह वह तो ही जीवान्य से प्राप्त होता है। त्रिमूर्ति जी जापको किसी उत्तम से भेजते हैं। आप जीवान में रहते हुए कृतज्ञता

## पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी



प्रभुज्ञान करना सके, विशेष व्यक्तिगत बना सके, मैं आप को यही आशीर्वाद देता हूँ कि आप नुक के हैं, जूँ का ही काढ़ एसा कार्य करे जिससे आप अद्वितीय बन सके। इसलिए मनोकामना दोषमा आवृत्ति पूर्णमा के अवश्यक पर वरदान ल्यो। यह चल है। आप मैं उन्होंने शक्तिपाल युक्त मनोकामना दीक्षा प्रदान की। उसके काढ़ अहलाइयों स्माधारा प्रयोग घटनाक्रम हुआ। आखिरी जीव करण्यात्मक देवद गति २ बजे शिविर का समापन हुआ। संख्यात्म विषय विषय लघुरुप थाला, निष्ठा और गमण जो जीवा जागता उठा हरहा है।

### २८ लघुरुप १९९६, जागीराजगढ़ी शारदीया शिविर भास्तुरी लघुरुप

डिल्यू लैब्स दीव, प्रातःसार का डाल पूर्ण गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी के शुभाभ्यास पर उनके स्वामीत के लिए दुर्दृश्य का नरह लगा हुआ था। जूँ का स्वामीन ही मैं भाष्य का प्रतीक माना जाता है। भूजन नमार श्री उपने लीभास पर प्रामुखिक जो रहा था। यही नमान नदी कलंकत लग रही है। उपरित ही बह रही है, इसी के किनारे धर शाहर रखा हुआ है।

प्रगवन पृथ्ये गुरुने वे जागिरे पूज्यों का विसर्जन यहाँ हुआ था, इसाने निष्ठाकाम साधक परिवार के साथकी

### पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी

और शिष्यों के लिए यह शहर एक तीर्थस्थल नेत्रा है और शिष्य अपनी जपस्थिति दर्ज करने के लिए खड़ा दीड़ चल आ रहे थे। तो, २८ बजे दीक्षा १, बजे पूर्ण गुरुदेव अरविन्द जी मैं च पर आसीन हुए। सूर्य वर्षायता बेटे हुए नाथक चकोर की तरह एकटक पृथ्ये गुरुदेव को निराह रहे थे। गुरुदेव पहले पृथ्ये गुरुदेव ने सदगुरुदेव के लिए का माल्यार्पण किया। इसके बाव शिविर के आशीर्वादों ने पृथ्ये डारों ले गुरुदेव का स्वामीन किया। श्री शिवाशुक्ला, देवन्द्र ज्याम, रमेश प्रनामिति, ब्रह्मन भट्ट चतुर, पी शास्त्री, प्रकाश राजपूत, रमेश पाठिल नदयारा इनमें गुरुदेव वे विद्वान इस शिविर को पूर्णता देने के लिए भी रात दिन एक किया था।

पृथ्ये गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी ने इन जायोंको को लगा उपरिधत स्थापकों को आशीर्वाद देते हुए कहा—“शिष्य वहों हैं जो गुरु के कार्यों को सतत पूरा करने के लिए प्रव्यान्तरीय हैं। गुरु के जान और चेतना को जन-जन तक पहुँ जाने के लिए निरन्तर प्रयत्नर्थी हैं। अनन्त इस पृथ्ये तीर्थ अस्त्र म शिविर के बहाने आप सभी को एक साथ देखकर बहुत ही प्रसन्न हूँ।”

महालक्ष्मी साधना के विषय में लक्ष्मी का गहरा जनने हुए उन्होंने कहा—“लक्ष्मीश्वर अपने लक्ष्मी के लिया जीवन की शाश्वत ही नहीं है, धन, यश, मातृ, प्रतिष्ठा भवन, बाह्य असौं ये सभी आज परिश्रम से नहीं मिलता। इनके लिए साधना और जूँ के आशीर्वाद की आवश्यकता रहती है, ये दोनों आज आपको प्रभु का से प्राप्त हैं, मैं आज सभी शिष्यों को आशीर्वाद देता हूँ कि अगली शताब्दी आप की है, आप यन्मधान्य से पूर्ण हों, ऐश्वर्यवान हो एसा ही आशीर्वाद देता हूँ।” इसके बाद गुरुदीशा, अष्ट महालक्ष्मी (का तात्त्व मनाश्वरीयन देखा दीड़) पृथ्ये गुरुदेव ने सभी साधकों से फिलकर उनकी समझदारी का भवाधान किया। गुरुरात में तो यानी हर साधक की इच्छा है कि उसके नगर में गुरुदेव का पदार्पण हो। इसी उल्ला ये पूर्ण जागरण में आगे अहमदाबाद, दुरुत आविनगरी में जायोंन की लघुरुपा निष्ठियों द्वाँ जामन भी गुरुदेव का सच्चा गिराव तो शिविर में ही प्रमह होता है।

### २९ लघुरुप १९९६, भास्तुरी साधना शिविर गुरुमार्ती, लिलाश्रुप, दीक्षा

गुरु अनेक विद्याओं से परिपूर्ण शक्ति लात्व है, जिसका प्रत्येक कार्य सार्थकता और विशिष्टताओं से आपूर्णित होता है। यन्म कर्म के लिये—गीता के इस वाक्य के अनुसार गुरु का प्रत्येक कार्य लोक कल्याणकारी एवं विष्वलम होता है। युनर्जी, जिस जीवनसाधन शिवाया का एक लोटा स्व तहसील है, वो देव के अंतिर की यही सभा बना तो थी ही नहीं, उनमें भी एक साध दोनों गुरुओं, पृथ्ये गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी एवं पृथ्ये गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी, का एवं साथ अगमन अस्त्रवर्य पूर्ण था। तारीख—१० लिप्तमव्र ज्योतिश्वर का भूल योग्यावत का साथ नगर प्रवेश हुआ। सभी साधक लगा उपर्युक्त उत्पाद एवं अनन्द में निष्ठा वे कर्मोंके इस नरह का वातावरण अभी तक बद्ध नहीं देखा। गया था।

अगले विनाटीक दृष्टि का धर्म गुरु पंजन के साथ नारेश हुआ, उसके बाद शास्त्री जी के विस्तृतवाचन के साथ साधकों के बीच उन्हें हुए गुरुदेव मध्ये गति से मध्ये पर वयोरे। आसामाणी दोनों में पूर्व भावतपाद गुरुदेव निखिल के प्राप्तन वित्र पर पूर्ण हार पहना अर्थात् उन्हें श्रद्धा सुमन स्मृति दिली। सम्पूर्ण वातावरण पूर्य गुरुदेव की जयकी मंगल ध्वनि से गुरुमय हो रहा था। गुरु गुरुदेव नन्दकिशोर जी १९४ के बाद वहाँ आर हिमाचल में पाकर स्वाधक आनन्द दिलें छो रहे थे। सभी हर्ष से कुछ नहीं समझ रहे थे। श्री ज्ञानधन्व रतन इनकेट, जगदाथ चड़ा, धर्मपाल फोटोग्राफर, लेखणग वर्मा के, डी. शर्मा, पै. एम. आर. विश्व एवं साक्षनाल आदि सत्यक भाईयों ने उन्हाँर पठनाकर गुरुदेव का नवागत किया, और अपने बहुमूल्य ग्रन्थ में से कुछ नमय देने के लिए आयास प्रकट किया।

अपने प्रवचन में गुरु गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी ने बहा— “सदगुर का आना सीधा भाव्य का प्रतीक होता है, मैं यहाँ जान और चेतना की दास प्रवाहित करने आया हूँ। यह पूर्ण शृंग, हिमाचल सदगुरव निखिल की विचरण स्थली रही है। विश्वर कवल प्रवचन के लिए नहीं ही, शिष्य के जीवन को साथक बनाना उसका मुख्य उद्देश होता है। निदाधम साधक परिवार कोई पूर्ण नहीं है, यह तो चेतना का प्रवाह है। निसमें समाहित होकर सभी हस्त से परमहेंस के स्तर को प्राप्त करते हैं। गुरु किसी स्थान विशेष का नहीं होता, गुरु का विशाल नहीं विद्या जा सकता, उन्हें विवश नहीं किया जा सकता, लक्षण नहीं जा सकता। शिष्य की निषा और प्रम भवस्य ही उन्हें कहे जाने के लिए नाध्य कर देते हैं। वहाँ गुरु को आना ही यहता है। इसीलिए आप लोगों के लिए नेम्हे प्रेरित किया। आज मैं आप लोगों की जाकर आनन्द अनुभव कर रहा हूँ।”

इसके पश्चात पूर्ण गुरुदेव अरविन्द जी साधकों की समन्वयी में के नमाख्यान के लिए मिले। वे तीक द बने दीक्षा देने के लिए गच पर पद्धति। भाई नवप्रकाश, श्री शिवा आदि जल्दी जारी के उन्मुक्त भजनों से परापर्दील आनन्द मय हो नहा। गुरुदेव ने पूरा भजने प्रवचन में कहा कि गुरु वही होता है जो शिष्य के जीवन की भावना दे। याच सो या पांच हजार साल बाद भी आपके, आपकी सन्नातों के एकमात्र गुरु गुरुगुरु निखिल व्यवरानन्द ही होंगे। दोषों का अर्थ कवल नव भजनों ही नहीं है। यह तो जीवन को उदात भजन के गुरु प्रविद्या है। आज इन नवार्थ शिष्यों द्वारा गुरु दीक्षा के माध्यम से मैं इतपका इस परिवार के माध्यम जोड़ रहा हूँ।

गविकालीन स्वर्म में उन्होंने विशेष नवार्थ दीक्षा व्रदन की, और कहा कि यहाँ मैं ग्रेम और भवधान का तत्त्व सम्मान है। आपस में जो भी गिरे शिकवे हैं, उन्हें दूर करें तथा परस्पर प्रेम भेरें, तभी मेरी उपस्थिति साधक हो सकेगी। इसके बाद असली दृष्टि तथा बाहरी भावना एवं रात्रि विश्राम हुआ। शिवाय दिक्षम वे प्रथम सब में पूर्ण गुरुदेव अरविन्द श्रीमानी जी ने कहा कि भावन जीवन का उद्देश कवल सुख ही नहीं है, सुख अपेक्षित होता है, पर वह सब कुछ नहीं है, इसके बाद भी और जीवन है, जिसे आध्यात्मिक जीवन कहते हैं। जीवन की उपलब्धि के बहुत गुरु दृष्टिन है, गुरुकृपा ने तीनों तापों का ज्ञान द्वाकर विष्णु तत्व का स्वरूप ही बनारण होता है, तबों लक्ष्मी नारद होता है। इसके बाद अष्ट लक्ष्मी दीक्षा, बग्नापुर्खी दीक्षा, विद्यमन्त्रा दीक्षा, भूक्लेश्वरी दीक्षा तथा मनोकामना दीक्षा एवं तथा मंडकाली नाधना सम्प्रत हुई, अरती और चरण भार्जा के बाद इंजवरी को नई शरीरदी में पुनर्मिलन के आवाहन के साथ आशीर्वाद द्वारा विदाई हुई।

## सेवा धर्म अति कठोर

जस्तो स्वरवलतारव सहस्रमुर्तये सहस्र परवर्तिति शिरोस्वराहवे सहस्र जामने पुरुषाद्य शाश्वते सहस्रकोटि वृज धारिणो नमः।

भगवान विष्णु के महसू दाश, सहस्र पैर, सहस्र अंग थे। ह्यारे सहगुरुदेव के तो लक्ष लक्ष हाथ हैं, लक्ष लक्ष मुख हैं, अक्षी लय अध्ययन की जाती है— लक्षं शिष्यं व्यायति निखिलेष्वर शश्वरं। इकीकालीन रानाल्दी है, तो उसके लिये इन लक्ष लक्ष हाथों में मैं कुछ को आग आना ही पड़ेगा, कुछ को अपने को रम्पापिन राना ही पड़ेगा, ऐसे ही निखिल ऊर्जा से युक्त उत्साही दुर्विकों की आवश्यकता है जो गुरुदेव नाथपुर दिल्ली आदिगे रहकर गुरु के अनुमान सव-तंत्र-योग विज्ञान के लिये कार्य कर सके, गुरु विश्वानि का सेवा धर्म अपनाने वाने देने शिष्यों की आवश्यकता है पर निष्ठा निष्ठा का पालन भी अनिवार्य है।

१. शिष्या कस से कम हैंगट।

२. रवयं दीक्षा धारण किया हुआ हो और परिवार के प्रदर्शन भी दीक्षित हों।

३. समय का संकल्प लेकर नहीं आए।

४. इस महान कार्य के लिए चौमासे, उमासे, वार्षिक अष्टवा द्विवार्षिक शिष्यों की आवश्यकता नहीं है, इस बहुत तो निष्ठा के बहुत गुरुदेव पर हो जाए।

५. मानु-पितृ वरणकमलभ्यो नमः, अर्थात् जो भी बालक भेदा में रहने को इच्छुक है वह अपने अपने भावना या आज्ञा लेकर अवश्य आये।

६. किसी कामना पूर्ति के लिये सेवा करने से फल की प्राप्ति हो जाए नहीं सकती। जो कर्मण्यवाचिवारस्ते ता फलेषु कवलचन— तो गुरु की आज्ञा के अनुसार ही कर्म करना रहता, फल क्या मिले, कब मिले, इसकी मुड़े परवाह नहीं, यह शाव है वही शिष्य आगे जाये।

७. आपकी प्रतीक्षा है—

## साधना शिविर पुर्व दीक्षा समाप्ती पुक्र बृहिट में:

### 8-9 जनवरी 2000 मुम्बई

गणपति लक्ष्मी तरतुदायिनी साधना शिविर  
स्थल - ग्राहद बारठड, ग्राम हाउस के सामने, अमृत कल्यान  
के पास, एक टीटोड, गोडगांव (वेल्ड), मुम्बई-62  
• श्री सतीश मिश्र, बोरिपली 8060323 • श्री मणेश  
सिंह, दहिसर 8118497 • श्री चार्द टवरमसानी,  
पोरती 4929090 • श्री एम.ए. गांगराम, अमृतनाथ,  
911684702 • श्री हरिशकर पांडे, कांदिवली  
8862409 • श्री कल्येश माई 022-2183671 • श्री  
प्रकाशवीर पांडे, वसई • श्री योगेश विश्व  
912-509212 • श्री कृष्ण गौडा, मलाळ 8412860

### 10 जनवरी 2000 बळगांव (ज़ार)

गणपति तिष्णु लक्ष्मी साधना शिविर  
स्थल - नवजीव, मंगल कार्यालय, नेहू चौक, जव  
किंठानवाडी, बळगांव (भुक्तावल के पास)

• श्री दिलीप मोतीरामार्ही 0257-239034 • श्री  
प्रदीप कोल्हे, जसोदा 575553 • डॉ. प्रदीप प्रभाकर  
गवली, पांचोरा 02596-42265 • श्री राजेन्द्र प्रजापती,  
पांचोरा 41022 • श्री प्रमोद पाटील, बांदवळ  
02885-75306 • श्री नरेन्द्र सुधुर, पांचोरा 41260  
• श्री नितिन तापळे 41122 • श्री बसंत पाटील, पुना  
• श्री रमेश पाटील, नवसारी • श्री सुधीर रालोकर,  
बळपुरी • श्री शशीकात लालडे, 07325-56195

### 11 जनवरी 2000 मुम्बई, वेल्ड (ज़ार)

रूप्य नारायण मध्यलक्ष्मी साधना शिविर  
स्थल - शालकीय बालक उद्यम माध्यमिक तिष्णान्या  
शाला मैदान मुम्बई, वेल्ड

• श्री एन. के श्रीवास्तव, मुलताई 07147-24686 •  
श्री आई.डी. कुमर • श्री विजय सोंते 07147-24366  
• श्री श्री केवांडे • श्री जनकलाल मवासे, वेल्ड  
07141-32634 • श्री कमलाकर घाडसे, आठवारे •  
श्री यू.आर.उडके • श्री विजय साह 07147-86356  
• श्री एस.एल.घुरे • श्री मनोज अग्रवाल 07141-33435

### 22-23 जनवरी 2000 करतालगढ़ (विहार)

निखिलश्वर अष्टलक्ष्मी साधना शिविर  
स्थल - डी.ए.डी. उद्यम तिष्णालय कैम्पस, करतालगढ़ टेलो  
होट, से 1/2 किमी, उत्तर, रानी भाजाट, करतालगढ़, बलखद  
अस्थिति, निखिल ज्योति संसा संगीती, धनबाद करतालगढ़

### 5-6 जनवरी 2000

लगम तंत्र मुनि विजय शिविर  
स्थल - कर्ती सड़क, उत्तरी पथरी, संगम तट, इलाहाबाद  
• श्री एस. के. मिश्र, इलाहाबाद 0532-50155  
डॉ. प्रमोद कुमार यादव, 0532-636029 • श्री वर्ण  
श्रीबास्तव, लखनऊ 0522-397630 • श्री राज  
मदीरिया, रायबरेली • श्री एन.सी.सिंह, आई.टी.आ  
रायबरेली • श्री मवनाथ यादव, गोरखपुर 0551-510  
• श्री सज्जुमार वैश्य, इलाहाबाद 0532-641545  
श्री हेमसिंह, इलाहाबाद, 0532-632160 • श्री कुदन  
सिंह, फतहपुर • श्री ओम प्रकाश श्रीमानी, इलाहाबाद  
• श्री ए.क.शर्मा, इलाहाबाद 0532-440792

### 13 जनवरी 2000 अहमदाबाद

लक्ष्मी वायेश साधना शिविर

• श्री सुन्दरेश औयर 079-6756106 • श्री परेशमाई  
के सुधार 2831053 • श्री संजयमाई शर्मा 2892261  
• श्री दिलीप जे. सुधार 5323069 • श्री अश्वन  
पटेल 2831054 • श्री राजेन्द्र सुधार 6565548 •  
श्री राजेश चौहान • श्री प्रकाश सुधार • श्री कनुमाई  
सोनी, बोरसद 02696-20411

### 20 जनवरी 2000 बंगलौर

निखिलश्वर दीक्षा पर्व साधना समारोह  
स्थल - कल्पित विभिन्न मंडप, परिषद कल्याण मण्डप,  
रामगढ़ श्री क्षमागमा, निकट अम्बेदकर भवन, नं.16/A,  
वसंतवामर, ग्रिलटैंक, बळ्ड टोड, बंगलौर - 560052  
• श्री टी. कृष्ण गौडा, 080-3346141, (0)-98440-96504  
• श्री एम.एल.नायेन्द, 080-3391689 • श्री गुरुदत  
(0)-93440-37687 • शिविर स्थल फोन: 080-2284494

### 26-27 जनवरी 2000 अनंतलाल

दुर्लभ शिवि साधना शिविर

• श्री के.एल. शर्मा 0183-507042 • श्री बाबी श्रीकान्त  
566702, 560957 • श्री रवि शर्मा 228800 • श्री  
विजय शर्मा 274661 • श्री दिनेश ढोगरा 556526

### 3-4 जनवरी 2000 कोइरा (ज़ार)

महाशिवरात्रि साधना शिविर

स्थल - विलाहीती बैंदिया लैटियम, टी.पी.अगर, कोइरा  
• श्री आर.सी.सिंह, 07818-33343 • श्री अंकिल वैस  
07759-21636 • श्री एस.वी.नेवार 24430 • श्री आर.  
के.सोनी • श्री वी.के.गर्ग • श्री ली.आर.मनहर • श्री  
आर.एस.साह • श्री सतोष सोनी • कु. सतोषी शुक्ला  
• वी.वी.सिंह • एकेपांडा • एस.के.सिंह • श्री एन.  
के.वी.य • श्री सुलीदास महत • श्री आरोक बाजपेशी  
• कोर्ति शिंह • श्री सुदामा चरदा • श्री वेद प्रकाश  
प्रेशास • श्री लोकेश राठौर • श्री वी.के.आ



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

